लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

कश्ती नूह

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: कश्ती नूह
Name of book	: Kashti Nooh
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mau'ud Alaihissalam
अनुवादक	: डा अन्सार अहमद पी.एच.डी आनर्स इन अरबिक
Translator	: Dr Ansar Ahmad, Ph.D, Hons in Arabic
टाईप, सैटिंग	: महवश नाज़
Type, Setting	: Mahwash Naaz
संस्करण तथा वर्ष	: द्वितीय संस्करण (हिन्दी) अगस्त 2018 ई०
Edition. Year	: 2nd Edition (Hindi) August 2018
संख्या, Quantity	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए. और मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य ने इसकी प्रूफ़ रीडिंग और रीवियु आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

بسم اللہ الرحمن الرحیم

पुस्तक कश्ती नूह

ईमान को सुदृढ़ करने वाली

प्लेग का टीका

لَنۡ یُّصِیۡبَنَاۤ اِلَّا مَا کَتَبَ اللّٰہُ لَنَا هُوَ مَوۡلٰىنَا وَعَلَى اللّٰهِ فَلۡیَتَوَکَّلِ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ (अत्तौबा-51)

"लंय्युसीबना इल्ला मा कतबल्लाहो लना हुवा मौलाना व अलल्लाहे फल्यतवक्कलिल मौमिनून"

अनुवाद- हमें कोई मुसीबत उस मुसीबत के अतिरिक्त हरगिज़ नहीं पहुँच सकती जो अल्लाह ने हमारे लिए निश्चित कर दी है। वही हमारा स्वामी है और ईमान लाने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए।

यह बात धन्यवाद योग्य है कि अंग्रेज़ी सरकार ने अपनी प्रजा पर दया करके दोबारा प्लेग से बचाने के लिए टीके का प्रस्ताव रखा और ख़ुदा के बन्दों की भलाई के लिए लाखों का बोझ अपने सर ले लिया। वास्तव में यह वह कार्य है जिसका धन्यवाद करते हुए स्वागत करना समझदार प्रजा का कर्तव्य है। वह मनुष्य मूर्ख और स्वयं का शत्रु है जो टीके के सन्दर्भ में अनुचित धारणा रखे, क्योंकि यह बारम्बार अनुभव हो चुका है कि यह सरकार किसी ख़तरनाक इलाज पर अमल कराना नहीं चाहती अपितु अनेकों अनुभवों से गुज़रने के पश्चात् ऐसे मामलों में जो प्रयास वास्तव में लाभकारी सिद्ध होते

हैं उन्हीं को प्रस्तुत करती है। अतः यह बात इन्सानियत से परे है कि सच्ची भलाई हेतु सरकार लाखों रुपया व्यय करती है और कर चुकी है, उसके संबंध में यह कहा जाए कि सरकार के इस कष्ट उठाने और धन व्यय करने के पीछे अपना कोई निजी स्वार्थ है। वह प्रजा दुर्भाग्यशाली है जो कुधारणाओं में इस सीमा तक पहुँच जाए। निस्संदेह इस समय तक जो प्रयास इस सरकार के हाथ लगे उनमें से सर्वोत्तम प्रयास यह है कि टीका लगवाया जाए। इसे किसी भी प्रकार नकारा नहीं जा सकता कि यह प्रयास लाभकारी सिद्ध हुआ है। भौतिक साधनों से लाभान्वित होते हुए समस्त प्रजा का कर्तव्य है कि इस पर अमल करते हुए सरकार के उस दुःख को दूर करे जो उसे उनके प्राणों के लिए है। परन्तु हम बड़े आदर और सम्मान के साथ इस कृपालु सरकार की सेवा में निवेदन करते हैं कि यदि हमारे लिए एक आसमानी रोक न होती तो प्रजा में सर्वप्रथम यह **टीका हम** लगवाते। आसमानी रोक यह है कि ख़ुदा की इच्छा है कि इस युग में मनुष्यों के लिए एक आसमानी **रहमत का निशान** दिखाए। अतः उसने मुझे सम्बोधित करते हुए कहा कि तू और जो मनुष्य तेरे घर की चार दीवारी के अन्दर होगा और वह जो पूरी श्रद्धा, निष्ठा और ख़ुदा पर पूर्ण आस्था रखते हुए तुझ पर विश्वास करेगा, ऐसे सभी लोग **प्लेग से सुरक्षित** रखे जाएँगे। इन अन्तिम दिनों में ख़ुदा का यह चमत्कार होगा ताकि वह क़ौमों में अन्तर करके दिखाए। परन्तु वह जो पूरी श्रद्धा और निष्ठा से आदेश का पालन नहीं करता उसका तुझ से कोई नाता नहीं है। इसलिए खेद मत कर। यह **अल्लाह का आदेश** है जिसके कारण हमें अपने और उन समस्त लोगों के प्राणों के लिए जो हमारे

घर की चार दीवारी में रहते हैं टीके की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि जैसा मैं अभी वर्णन कर चुका हूं कि आज से बहुत पहले उस ख़ुदा ने जो धरती और आकाश का ख़ुदा है, जिसके ज्ञान और अधिकार से कोई वस्तु बाहर नहीं, मुझे वह्यी (ईशवाणी) द्वारा बताया है कि मैं हर ऐसे मनुष्य को प्लेग की मौत से सुरक्षित रखूँगा जो इस घर की चार दीवारी में होगा बशर्ते कि वह अपने समस्त विरोधी इरादों को सर्वथा त्याग कर पूरी श्रद्धा और शालीनता से **बैअत कर ले** और ख़ुदा के आदेश और उसके भेजे हुए के समक्ष किसी भी प्रकार से उद्दण्ड, अभिमानी, अहंकारी और स्वयं को श्रेष्ठ समझने वाला न हो और ख़ुदा की शिक्षानुसार आचरण करता हो। ख़ुदा ने मुझे संबोधित करते हुए यह भी बताया कि आमतौर पर क़ादियान में भयानक प्लेग नहीं आएगी जिससे लोग कुत्तों की भांति मरें और दु:ख व भय के कारण पागल हो जाएँ। सामान्यत: वे समस्त लोग जो इस जमाअत के हों चाहे कितने ही हों विरोधियों की अपेक्षा प्लेग से सुरक्षित रहेंगे, परन्तु उनमें से ऐसे लोग जो अपनी प्रतिज्ञा पर पूरी तरह क़ायम नहीं या उनके विषय में कोई अन्य गुप्त कारण हो जो ख़ुदा के ज्ञान में हो, वे प्लेग का शिकार हो सकते हैं। परन्तु अन्तत: लोग आश्चर्य चकित हो कर कहेंगे कि अपेक्षाकृत ख़ुदा का पक्ष इस क़ौम के साथ है और उसने अपनी विशेष कृपा से उन लोगों को ऐसा सुरक्षित रखा है जिसका उदाहरण नहीं मिलता। इस बात पर कुछ मूर्ख लोग भौंचक्के रह जाएँगे, कुछ हँसेंगे कुछ मुझे दीवाना कहेंगे और कुछ आश्चर्य करेंगे कि क्या ऐसा ख़ुदा विद्यमान है जो किसी भौतिक साधन के बिना अपनी दया की वर्षा कर सकता है। इसका उत्तर यही है कि

हाँ, निस्सन्देह ऐसा सर्वशक्तिमान खुदा विद्यमान है। यदि वह ऐसा न होता तो उससे सम्बन्ध रखने वाले जीवित ही मर जाते। वह अलौकिक शक्तियों से भरपूर है और उसकी पवित्र शक्तियां अद्भुत हैं। एक ओर मूर्ख विरोधियों को अपने भक्तों पर कुत्तों की भांति डाल देता है दूसरी और फरिश्तों को आदेश देता है कि उनकी सहायता करें। ऐसा ही जब संसार पर उसका प्रकोप आता है और अत्याचारियों पर कहर ढाता है तो उसके नेत्र उसके विशेष व्यक्तियों की रक्षा करते हैं। यदि ऐसा न होता तो सत्य के उपासकों के कार्य-कलाप **नष्ट हो जाते**, उनको कोई न पहचान पाता। उसकी शक्तियां असीमित हैं परन्तु विश्वास के अनुसार ही लोगों पर दृष्टिगोचर होती हैं। ख़ुदा जो चाहता है करता है परन्तु अपनी अलौकिक और असाधारण शक्तियों को दिखाने का इरादा उन्हीं के लिए करता है जो उसके लिए अपनी आदतों में असाधारण परिवर्तन कर लेते हैं। इस युग में ऐसे लोग बहुत ही कम हैं जो उसे जानते और उसकी अद्भुत और अलौकिक शक्तियों पर विश्वास करते हैं अपितु ऐसे लोग बहुत हैं जिनको उस सर्वशक्तिमान ख़ुदा पर विश्वास नहीं है, जिसकी आवाज़ को प्रत्येक वस्तु सुनती है, जिसके समक्ष कोई भी बात अनहोनी नहीं। यहां याद रहे कि प्लेग इत्यादि में इलाज कराना कोई पाप नहीं बल्कि एक हदीस में आया है कि ऐसी कोई बीमारी नहीं जिसके लिए ख़ुदा ने दवा पैदा न की हो। परन्तु मैं इस बात को पाप समझता हूं कि ख़ुदा के उस निशान को प्लेग के टीके द्वारा संदिग्ध कर दूँ जिसको वह हमारे लिए धरती पर बड़ी सफ़ाई से प्रकट करना चाहता है। मैं उसके सच्चे निशान और सच्चे वायदे को सम्मान न देकर टीके की ओर झुकना नहीं चाहता। यदि

मैं ऐसा करूं तो मेरा यह पाप दण्डनीय होगा कि मैंने ख़ुदा के उस वायदे पर विश्वास न किया जो मुझे दिया गया। यदि ऐसा हो तो फिर मुझे आभारी उस डाक्टर का होना चाहिए जिसने इस टीके की खोज की, न कि ख़ुदा का जिसने मुझे आश्वस्त किया कि प्रत्येक जो इस चार दीवारी के अन्दर है मैं उसे सुरक्षित रखूँगा।

मैं पूर्ण विवेक से कहता हूं कि उस सर्वशक्ति सम्पन्न ख़ुदा के वायदे सत्य हैं और मैं भावी दिनों को इस प्रकार देखता हूं जैसे वे आ चुके हैं और मैं यह भी जानता हूं कि हमारी सरकार का वास्तविक उद्देश्य यह है कि किसी प्रकार लोग प्लेग से मुक्ति पाएं। यदि सरकार को भविष्य में किसी समय प्लेग से मुक्ति पाने हेतु टीके से उत्तम कोई वस्तु प्राप्त हो जाए तो वह ख़ुशी से उसे ही स्वीकार करेगी। ऐसी स्थिति में सर्वविदित है कि यह मार्ग जिस पर ख़ुदा ने मुझे अग्रसर किया है वह इस सरकार की नीतियों के विरुद्ध नहीं। आज से बीस वर्ष पूर्व इस प्लेग के प्रकोप के सन्दर्भ में मेरी पुस्तक "बराहीन अहमदिया" में बतौर भविष्यवाणी यह खबर मौजूद है और इस सम्प्रदाय के लिए विशेष अनुकम्पा का आश्वासन भी मौजूद है। (देखिए बराहीन अहमदिया पृष्ठ 518, 519) इसके अतिरिक्त ख़ुदा की ओर से पूरी दृढ़ता के साथ यह भविष्यवाणी है कि वह मेरे घर की चार दीवारी के अन्दर शुद्ध आचरण वाले लोगों को जो ख़ुदा और उसके अवतार के समक्ष अभिमान और अंहकार नहीं करते प्लेग के प्रकोप से मुक्ति प्रदान करेगा और अपेक्षाकृत इस सिलसिले पर उसकी विशेष कृपा रहेगी। किसी के ईमान की कमज़ोरी, लापरवाही, मृत्यु की निश्चित घड़ी या किसी अन्य कारण से जिसे ख़ुदा जानता हो कोई

अपवाद इस जमाअत में भी दिखाई दे जाए तो यह नगण्य है। तुलना के समय हमेशा अधिकता देखी जाती है। जैसा कि सरकार ने स्वयं अनुभव करके मालूम कर लिया है कि प्लेग का टीका लगाने वाले दूसरों की अपेक्षा बहुत कम मरते हैं। अतः कुछ एक की मृत्यु टीके के महत्त्व को कम नहीं कर सकती। इसी प्रकार इस निशान में यदि अपेक्षाकृत क़ादियान में बहुत ही निम्नस्तर पर प्लेग का प्रकोप हो या इक्का-दुक्का व्यक्ति इस जमाअत में से इस बीमारी से मर जाए तो इस निशान का महत्त्व कम नहीं होगा। वे शब्द जो ख़ुदा की पवित्र वाणी से प्रकट होते हैं उनकी पाबंदी से यह भविष्यवाणी की गई है। बुद्धिमान का काम नहीं कि पहले से ही दैवी बातों की हंसी उड़ाए। यह ख़ुदा की वाणी है जिसने प्लेग से प्रकोपित किया और जो उसे दूर कर सकता है। निस्सन्देह हमारी सरकार उस समय इस भविष्यवाणी की सराहना करेगी जब देखेगी कि यह कैसा अद्‌भुत कार्य हुआ कि टीका लगाने वालों की अपेक्षा यह लोग **सुरक्षित और स्वस्थ** रहे। मैं सच-सच कहता हूं कि यदि इस भविष्यवाणी के अनुसार जो वास्तव में 20-22 वर्ष से ख्याति पा रही है घटित न हुआ तो मैं ख़ुदा की ओर से नहीं हूं। मेरे **अल्लाह की ओर से** होने का यह **निशान** होगा कि मेरे घर की चार दीवारी के अन्दर रहने वाले निष्कपट लोग इस बीमारी की मौत से सुरक्षित रहेंगे और समस्त जमाअत प्लेग के प्रकोप से अपेक्षाकृत सुरक्षित रहेगी। वह सुरक्षा जो इनमें पाई जाएगी उसका उदाहरण किसी अन्य में नहीं मिलेगा। क़ादियान में प्लेग का भयानक प्रकोप जो सब कुछ नष्ट कर दे नहीं होगा सिवाए कुछेक अपवाद के। काश यह लोग दिलों के सीधे होते और ख़ुदा से डरते तो निश्चय

ही बचाए जाते, क्योंकि धार्मिक विवाद के कारण संसार में दैवी प्रकोप किसी पर नहीं आता, इसकी पकड़ प्रलय के दिनों में होगी। संसार में प्रकोप केवल उद्दण्डता, अंहकार और पापों के बढ़ने के कारण आता है। यह भी स्मरण रहे कि क़ुर्आन शरीफ़ में बल्कि तौरात में कई स्थानों पर यह सन्देश मौजूद है कि मसीह मौऊद के समय प्लेग फैलेगी★ बल्कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने भी इंजील में यह खबर दी है। संभव नहीं कि नबियों की भविष्यवाणियां टल जाएं। यह भी स्मरण रहे कि हमें अल्लाह ने इस वायदे के होते हुए मानव-उपायों की उपेक्षा इसलिए करनी है ताकि कोई विरोधी अल्लाह के निशान को दूसरी ओर फेरने का प्रयास न कर सके। परन्तु यदि इसके साथ ही ईशवाणी द्वारा अल्लाह स्वयं कोई उपाय बता दे या कोई औषधि बता दे तो ऐसा उपाय या औषधि इस निशान में कोई रुकावट नहीं होगी, क्योंकि वह अल्लाह की ओर से है जिसकी ओर से वह निशान है। किसी को यह सन्देह न हो कि यदि हमारी जमाअत में से कोई मनुष्य अपवाद स्वरुप प्लेग से मर जाए तो निशान के महत्त्व में कोई अन्तर आएगा, क्योंकि पहले युगों में **मूसा,** ईसा और अन्त में हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आदेश मिला था कि जिन लोगों ने तलवार उठाई और सैकड़ों लोगों को मौत के घाट उतार दिया उनका मुकाबला तलवार से ही किया जाए। यह नबियों की ओर से एक निशान था तत्पश्चात विजय प्राप्त हुई। हालांकि अपराधियों की

★**हाशिया :-** मसीह मौऊद के समय प्लेग का फैलना 'बाइबल' के निम्नलिखित भागों में मौजूद है:-

(1) ज़करिया-14/12 (2) इन्जील मती-24/8 (3) मुकाशिफात-22/8

तुलना में सत्य के अनुयायी भी उनकी तलवार से मारे जाते थे परन्तु बहुत कम। पर इस सीमा तक क्षति से निशान में कुछ अन्तर नहीं आता था। इसी प्रकार यदि अपवाद स्वरूप हमारी जमाअत में से कुछ को उपर्युक्त कारणों से प्लेग हो जाए तो ऐसी प्लेग से परमेश्वर के निशान में कुछ भी अन्तर नहीं आएगा। क्या यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण निशान नहीं कि मैं बारम्बार कहता हूं कि अल्लाह इस भविष्यवाणी को इस प्रकार पूरा करेगा कि किसी भी सत्य के तलाश करने वाले को सन्देह नहीं रहेगा और वह समझ जाएगा कि अल्लाह ने इस जमाअत के साथ चमत्कार के तौर पर व्यवहार किया है बल्कि अल्लाह के निशान के तौर पर परिणाम यह होगा कि प्लेग द्वारा यह जमाअत बहुत बढ़ेगी और असाधारण उन्नति करेगी और उसकी यह उन्नति आश्चर्य से देखी जाएगी और विरोधी जो प्रत्येक अवसर पर पराजय का मुंह देखते रहे हैं जैसा कि पुस्तक 'नुज़ूलुल मसीह' में मैंने लिखा है। यदि इस भविष्यवाणी के अनुसार अल्लाह ने इस जमाअत और दूसरे लोगों में स्पष्ट अन्तर न दिखाया तो उन्हें अधिकार होगा कि मुझे झूठा कहें। अब तक जो उन्होंने मुझे झुठलाया है उसमें तो ख़ुदा से केवल एक नाराज़गी को ख़रीदा है। उदाहरणतया बार-बार शोर मचाया कि आथम 15 महीने में नहीं मरा। अत: उसने निर्धारित जनसभा में सत्तर सम्मानित लोगों के सम्मुख हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को **दज्जाल** कहने पर पश्चाताप किया और न केवल यह बल्कि उसने पन्द्रह माह तक अपनी खामोशी और दैवी भय से अपना यह पश्चाताप सिद्ध कर दिया और भविष्यवाणी की बुनियाद यह थी कि उसने हज़रत मुहम्मद साहिब को **दज्जाल** और

धोखेबाज़ कहा था। अतः अपने मौन पश्चाताप से उसे मात्र इतना लाभ हुआ कि वह पन्द्रह माह बाद मरा परन्तु मर गया। यह इसलिए हुआ कि भविष्यवाणी में यह विद्यमान था कि हम दोनों में से जो मनुष्य अपनी आस्थानुसार झूठा है वह पहले मरेगा। अतः वह मुझ से पहले मर गया। इसी प्रकार वह परोक्ष (ग़ैब) की बातें जो अल्लाह ने मुझे बताई हैं जो अपने निश्चित समय पर पूरी हुईं वे दस हज़ार से कम नहीं परन्तु पुस्तक 'नुज़ूलुल मसीह' में जो प्रकाशित हो रही हैं नमूने के तौर पर उनमें से केवल डेढ़ सौ भविष्यवाणियां प्रमाण और साक्ष्यों सहित प्रस्तुत की गई हैं। मेरी कोई भविष्यवाणी ऐसी नहीं है जो पूरी नहीं हुई या उसके दो भागों में से एक पूरा नहीं हो चुका। यदि कोई खोजते-खोजते मर भी जाए तो ऐसी कोई भविष्यवाणी जो मेरे मुख से निकली हो उसे नहीं मिलेगी जिसके सन्दर्भ में वह कह सके कि खाली गई। हाँ निर्लज्जता या अज्ञानता से कुछ भी कहे। मैं दावे से कहता हूं कि मेरी हज़ारों खुली और स्पष्ट भविष्यवाणियां हैं जो बड़े प्रत्यक्ष रूप से पूरी हो गईं, लाखों मनुष्य जिनके साक्षी हैं। इसका उदाहरण यदि पहले नबियों में से खोजा जाए तो हज़रत मुहम्मद साहिब के अतिरिक्त किसी और स्थान पर नहीं मिलेगा। यदि मेरे विरोधी इसी प्रकार से फैसला करते तो बहुत पहले उनकी आंखें खुल जातीं। मैं उन्हें एक भारी इनाम देने को तैयार था, यदि वे संसार में कोई उदाहरण उन भविष्यवाणियों का प्रस्तुत कर सकते। केवल उद्दण्डता या अज्ञानता से यह कह देना कि अमुक भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। इस सन्दर्भ में हम इसके अतिरिक्त और क्या कहें कि ऐसी बातों को हठधर्मी और मूर्खता समझें। यदि किसी जन-समूह में इसी

खोज के लिए बात की जाती तो उनको अपनी बातों से लौटना पड़ता या निर्लज्ज कहलाते। हज़ारों भविष्यवाणियों का प्रत्यक्ष रूप से जैसा का तैसा पूर्ण हो जाना और उनके पूरा होने पर हज़ारों जीवित साक्षियों का पाया जाना यह कोई साधारण बात नहीं है, अपितु अल्लाह के दर्शन करा देना है। मुहम्मद रसूलुल्लाह के युग को छोड़ कर किसी युग में कभी किसी ने देखा कि हज़ारों भविष्यवाणियां की गईं और वे सब की सब प्रत्यक्ष रूप से पूरी हो गईं और हज़ारों लोगों ने उनके पूरा होने पर गवाही दी। मैं पूरे विश्वास से जानता हूं कि जिस प्रकार अल्लाह निकट होकर इस युग में प्रकट हो रहा है और सैकड़ों परोक्ष (ग़ैब) के मामले अपने भक्त पर खोल रहा है। इस युग का उदाहरण पहले युगों में बहुत काम ही मिलेगा। लोग शीघ्र ही देख लेंगे कि इस युग में अल्लाह का चेहरा दिखाई देगा। यूं प्रतीत होगा कि वह आकाश से उतरा है। उसने बहुत समय तक स्वयं को छुपाए रखा और नकारा गया और वह चुप रहा परन्तु वह अब नहीं छुपाएगा और दुनिया उसकी शक्ति के वह नमूने देखेगी कि कभी उसके बाप-दादों ने नहीं देखे थे। यह इस लिए होगा कि धरती बिगड़ गई, धरती और आकाश के पैदा करने वाले पर लोगों का विश्वास नहीं रहा। होंठों पर तो उसका नाम है पर हृदय उस से फिरे हुए हैं। इसलिए उसने कहा कि अब मैं नया आकाश और नई धरती बनाऊँगा। इसका अर्थ यही है कि धरती मर गई अर्थात् मनुष्यों के हृदय कठोर हो गए अर्थात् मर गए क्योंकि अल्लाह का चेहरा उनसे छुप गया और भूतकाल के दैवी निशान सर्वथा कहानियां बन गईं। अतः अल्लाह ने इरादा किया कि वह नई धरती और नया आकाश बनाए। नया आकाश क्या है और

क्या है नई धरती? नई धरती वह पवित्र हृदय हैं जिनको अल्लाह स्वयं अपने हाथ से तैयार कर रहा है, **जो परमेश्वर से प्रकट हुए और अल्लाह उनसे प्रकट होगा।** नया आकाश वह निशान हैं जो उसके भक्त के हाथ से उसी अल्लाह की आज्ञा से प्रकट हो रहे हैं। परन्तु खेद है कि दुनिया ने अल्लाह की इस नवीनतम दैवी झलक से शत्रुता की। इनके पास कपोलकल्पित गाथाओं के अतिरिक्त कुछ भी नहीं और उनका ख़ुदा उनकी अपनी ही कल्पनाएँ हैं। हृदय टेढ़े हैं, साहस टूटे हुए हैं, आँखों पर पर्दे हैं। अन्य क़ौमें तो स्वयं वास्तविक ख़ुदा को भुला बैठी हैं। उनका क्या स्मरण किया जाए जिन्होंने मनुष्य के बच्चों को ख़ुदा बना लिया। मुसलमानों की दशा देखो कि वे उससे कितने दूर हो गए हैं। सच्चाई के पक्के शत्रु हैं। सदमार्ग के जानी दुश्मन की भांति विरोधी हैं। उदाहरणार्थ **नदवतुल उलेमा** ने इस्लाम के लिए जो कुछ दावा किया है या **अंजुमन हिमायते इस्लाम लाहौर** जो इस्लाम के नाम पर मुसलमानों का माल लेती है। **क्या ये इस्लाम के शुभ चिन्तक हैं? क्या यह लोग सदमार्ग के पक्षधर हैं?** क्या इनको स्मरण है कि इस्लाम किन मुसीबतों के नीचे कुचला गया और पुनः जीवित करने के लिए अल्लाह का स्वभाव क्या है? मैं सच-सच कहता हूं कि यदि मैं न आया होता तो उनके इस्लामी समर्थन के दावे एक सीमा तक स्वीकार्य हो सकते, परन्तु अब ये लोग **ख़ुदा के आरोप** के नीचे हैं कि शुभचिंतक होने का दावा करके जब आकाश से तारा निकला तो सबसे पहले विरोधी हो गए। अब ये उस ख़ुदा को क्या उत्तर देंगे जिसने उचित समय पर मुझे भेजा है परन्तु उन को कुछ परवाह नहीं। **सूर्य** दोपहर के निकट आ गया पर उनके विचार

में **रात** है, ख़ुदा का **झरना फूट पड़ा** परन्तु अभी भी वह जंगल में विलाप कर रहे हैं, उसके **आकाशीय ज्ञान** का एक सागर ठाठे मार रहा है परन्तु इन लोगों को कोई ख़बर तक नहीं है, उसके निशान प्रकट हो रहे हैं परन्तु ये लोग सर्वथा लापरवाह हैं, न केवल लापरवाह अपितु ख़ुदा की धरा से शत्रुता रखते हैं। अतः यही इस्लाम की हिमायत, इस्लाम का प्रचार और इस्लाम की शिक्षा है जो इनके हाथों हो रही है? पर क्या ये लोग अपनी उपेक्षा से ख़ुदा के सच्चे इरादे को **रोक देंगे,** जिसकी प्रारंभ से सभी नबी साक्ष्य देते आए हैं? नहीं बल्कि ख़ुदा की यह भविष्यवाणी **निकट भविष्य में** ही सत्य सिद्ध होने वाली है कि-

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِی

" कतबल्लाहो लअग़लिबन्ना अना व रुसुली"

(अल मुजादिला-22)

ख़ुदा ने जैसा कि आज से दस वर्ष पूर्व अपने भक्त की सच्चाई सिद्ध करने के लिए आकाश पर रमज़ान में चन्द्र और सूर्य दोनों को ग्रहण लगाकर मेरे लिए साक्षी बनाया। ऐसा ही उसने नबियों की भविष्यवाणी के अनुसार धरती पर भी दो निशान प्रकट किए। एक वह निशान जिसको तुम क़ुर्आन शरीफ़ में पढ़ते हो-

وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ

"व इज़ल-इशारो उत्तिलत"

(अत्तक्वीर-5)

और हदीस में पढ़ते हो-

وَلَيُتْرَكَنَّ الْقِلَاصُ فَلَا يُسْعٰى عَلَيْهَا

"लयुतरकन्नल क़िलासो फ़ला युसआ अलैहा"

जिसकी पुष्टि के लिए हिजाज़ की धरती अर्थात मदीना-मक्का के मार्ग में रेल भी तैयार हो रही है। दूसरा निशान प्लेग का जैसा कि ख़ुदा ने फ़रमाया-

وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا شَدِيْدًا

"व इम्मिन क़रियतिन इल्ला नहनो मुहलिकूहा क़बला यौमिलकियामते औ मुअज़्ज़ेबूहा अज़ाबन शदीदन"

(बनी इस्राईल-59)

अतः ख़ुदा ने देश में रेल भी जारी कर दी और प्लेग भी भेज दी ताकि धरती भी साक्षी हो और आकाश भी। अतः ख़ुदा से **मत लड़ो** कि परमेश्वर से लड़ना मूर्खता है। इस से पूर्व ख़ुदा ने जब आदम अलैहिस्सलाम को ख़लीफ़ा बनाना चाहा तो फरिश्तों ने रोका, पर क्या ख़ुदा उनके कहने से रुक गया। अब ख़ुदा ने **दूसरा आदम** पैदा करने के समय कहा-

اَرَدْتُ اَنْ اَسْتَخْلِفَ فَخَلَقْتُ اٰدَمَ

"अरदतो अनअस्तख़लिफा फ़ख़लक्तो आदम"

अर्थात् मैंने इरादा किया कि ख़लीफ़ा बनाऊं। अतः मैंने इस आदम को पैदा किया। अब बताओ कि क्या तुम ख़ुदा के इरादे में बाधा डाल सकते हो। तुम क्यों काल्पनिक बातों को प्रस्तुत करते हो और विश्वास-मार्ग का अनुसरण नहीं करते। परीक्षा में मत पड़ो। निस्सन्देह स्मरण रहे कि ख़ुदा की इच्छा में कोई बाधा नहीं डाल सकता। इस प्रकार के झगड़े संयम का मार्ग नहीं। हां यदि शंका है

तो उपाय हो सकता है, जैसा कि मैंने ख़ुदा से इल्हाम (ईशवाणी) द्वारा सन्देश पाकर मनुष्यों के एक समुदाय के लिए जो मेरे आदेश का पालन करने वाले हैं प्लेग के प्रकोप से बचने के लिए जो शुभ सन्देश पाया है और उसे प्रकाशित कर दिया है। ऐसा ही यदि आप लोगों के हृदय में अपनी कौम की भलाई है तो आप लोग भी अपने धर्मावलम्बियों के लिए भी अल्लाह से प्लेग से मुक्ति का शुभ-समाचार प्राप्त करें कि वे प्लेग से सुरक्षित रहेंगे, और इस समाचार को मेरी तरह विज्ञापन स्वरूप प्रकाशित कर दें ताकि लोग समझ सकें कि अल्लाह आपके साथ है। बल्कि यह अवसर ईसाइयों के लिए भी अत्यन्त उपयुक्त है। वे हमेशा कहते हैं कि मुक्ति मसीह से है। अतः अब उनका भी कर्तव्य है कि इन **संकट के दिनों में** ईसाइयों को प्लेग से मुक्ति दिलाएं। **इन समस्त सम्प्रदायों** में से जिसकी अधिक सुनी गई वही स्वीकार योग्य है। अब अल्लाह ने प्रत्येक को अवसर प्रदान किया है कि अकारण ही धरती पर विवाद न करें। अपनी स्वीकार्यता बढ़-चढ़ कर दिखाएं ताकि प्लेग से भी बचें और उनकी सच्चाई भी खुल जाए, विशेषकर **पादरी** साहिबान जो **इस लोक** और **परलोक** में **मरयम के बेटे मसीह** को ही मुक्तिदाता मान चुके हैं। वे यदि हृदय से उसे इस लोक और परलोक का स्वामी समझते हैं तो अब ईसाइयों का अधिकार है कि इनके कफ़्फ़ारः से **मुक्ति** का नमूना देख लें। इस प्रकार आदरणीय सरकार को भी बहुत सुविधा हो सकती है कि ब्रिटिश इण्डिया के भिन्न-भिन्न समुदाय जो अपने-अपने धर्म की सत्यता पर भरोसा करते हैं, अपने समुदाय को छुड़ाने और प्लेग से मुक्ति दिलाने के लिए यह प्रबंध करें कि अपने उस ख़ुदा से जिस पर

वे आस्था रखते हैं या अपने किसी अन्य पूज्य से जिसे उन्होंने ख़ुदा का स्थान दे रखा है, इन आपदाग्रस्त लोगों की सिफ़ारिश करें और उससे कोई ठोस वायदा लेकर विज्ञापनों के रूप में प्रकाशित करें जैसा कि हमने यह विज्ञापन प्रकाशित किया है। इसमें सर्वथा प्रजा की भलाई और अपने धर्म की सत्यता का प्रमाण एवं सरकार की सहायता है। सरकार इसके अतिरिक्त कुछ नहीं चाहती कि उसकी प्रजा प्लेग से सुरक्षित हो जाए चाहे किसी भी प्रकार हो। अन्ततः स्मरण रहे कि हम इस विज्ञापन में अपनी जमाअत को जो भारत और पंजाब के विभिन्न भागों में फैली हुई है टीका लगवाने से मना नहीं करते। जिन लोगों के बारे में सरकार का स्पष्ट आदेश हो उनको टीका अवश्य लगवाना चाहिए और सरकारी आदेश का पालन करना चाहिए। जिनको उनकी इच्छा पर छोड़ा गया है यदि वे मेरी शिक्षा जो उनको दी गई पूर्णरूपेण पालन नहीं कर रहे तो उनको भी टीका लगवाना उचित है ताकि वे ठोकर न खाएं और अपनी ख़राब दशा के कारण ख़ुदा के वायदे के सम्बन्ध में लोगों को धोखा न दें। यदि प्रश्न यह हो कि वह शिक्षा क्या है जिसका पूर्ण रूपेण अनुसरण प्लेग के प्रकोप से सुरक्षित रख सकता है, तो मैं संक्षेप में निम्न पंक्तियां लिख देता हूं।

शिक्षा

स्मरण रहे कि केवल मुख से बैअत को स्वीकार करना अर्थहीन है जब हार्दिक तौर पर उसका पूर्ण अनुसरण न करे। अतः जो मनुष्य मेरी शिक्षा का पूरा-पूरा पालन करता है वह मेरे इस घर में प्रवेश कर जाता है जिसके विषय में ख़ुदा की वह्यी में यह वादा है-

اِنِّیۡ اُحَافِظُ کُلَّ مَنۡ فِی الدَّارِ

"इन्नी उहाफ़िज़ो कुल्ला मन फिद्दार"

अर्थात् प्रत्येक जो तेरे घर की चारदीवारी के अन्दर है मैं उसे सुरक्षित रखूँगा। यहां यह नहीं समझना चाहिए कि मेरे घर के अन्दर वही लोग हैं जो मेरे इस ईंट गारे के घर में रहते हैं बल्कि वे भी जो मेरा पूर्ण अनुसरण करते हैं, मेरे आध्यात्मिक घर में दाख़िल हैं। अनुसरण करने हेतु ये बातें हैं कि वह विश्वास करे कि उनका एक सर्वशक्तिमान, जीवन प्रदान करने और समस्त संसार को पैदा करने वाला ख़ुदा है जो अपने गुणों में अनादि और अनन्त है और वह अपरिवर्तनीय है, न वह किसी का बेटा और न कोई उसका बेटा है, वह दुःख उठाने और सलीब पर चढ़ने और मरने से परे है, वह बावजूद दूर होने के निकट है और निकट होने के बावजूद दूर है और बावजूद एक होने के उसके चमत्कारिक स्वरूप अनेक हैं। मनुष्य की ओर से जब कोई नए रंग का परिवर्तन प्रकट होता है तो उसके लिए वह एक नया ख़ुदा बन जाता है। वह उससे एक नए चमत्कारिक स्वरूप के साथ व्यवहार करता है और मनुष्य अपने परिवर्तन के अनुसार ख़ुदा में भी परिवर्तन देखता है। पर ऐसा नहीं है कि ख़ुदा में वास्तव में कोई परिवर्तन आ जाता है अपितु वह अनादि, अनन्त, अपरिवर्तनीय और सर्वगुण सम्पन्न है। परन्तु मानवीय परिवर्तनों के समय जब मनुष्य भलाई की ओर उन्मुख होता है तो ख़ुदा भी एक नए चमत्कारिक रूप में उस पर प्रकट होता है और प्रत्येक उन्नतशील स्थिति के समय जो मनुष्य से प्रकट होती है, ख़ुदा का शक्तिशाली चमत्कारिक स्वरूप उसी उन्नतशील रूप में प्रकट होता है। वह अपनी अलौकिक शक्ति का असाधारण प्रदर्शन उसी स्थान पर करता है जहां

असाधारण परिवर्थान का प्रदर्शन होता है। असाधारण शक्तियों और चमत्कारों की यही जड़ है। यह ख़ुदा है जो हमारे सिलसिले की शर्त है उस पर ईमान लाओ। अपने आराम, अपने प्राण और उसके समस्त सम्बन्धों पर उसको प्राथमिकता दो, अपने व्यवहार से वीरता के साथ उसके मार्ग में सत्य और वफ़ादारी का प्रदर्शन करो। दुनिया अपने भौतिक संसाधनों और निकट संबंधियों पर उसको प्राथमिकता नहीं देती परन्तु तुम उसको प्राथमिकता दो ताकि तुम आकाश पर उसकी जमाअत लिखे जाओ। कृपा और दया के निशान दिखाना सदा से ख़ुदा का स्वभाव है, परन्तु तुम इस स्वभाव के भागीदार तभी बन सकते हो जब तुम में और उसमें कुछ भी दूरी न रहे। तुम्हारी इच्छा उसकी इच्छा, तुम्हारी आकांक्षाएं उसकी आकांक्षाएं हो जाएँ और तुम हर समय, हर स्थिति, सफलता या विफलता में उसकी चौखट पर नतमस्तक रहो ताकि वह जो चाहे करे। यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम में वह ख़ुदा प्रकट होगा, जिसने एक लम्बे समय से अपना चेहरा छुपा लिया है। क्या तुम में कोई है जो इस पर **अमल** करे और उसकी प्रसन्नता की कामना करे और उसकी नियति पर क्षुब्ध न हो। अतः तुम संकट को देखकर क़दम और भी आगे बढ़ाओ कि यह तुम्हारी उन्नति का साधन है। **एकेश्वरवाद** को समस्त संसार में फैलाने के लिए अपनी सम्पूर्ण शक्ति से प्रयासरत रहो और उसकी प्रजा पर दया करो। उन पर अपनी वाणी, अपने हाथ या अन्य किसी प्रकार से अत्याचार न करो, प्रजा की भलाई हेतु प्रयत्नशील रहो, किसी पर अभिमान न करो भले ही वह तुम्हारे अधीन हो, किसी को गाली मत दो भले ही वह गाली देता हो, सदाचारी, दीन और स्वच्छ हृदय वाले

बन जाओ। प्रजा के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करो ताकि स्वीकार किए जाओ। बहुत हैं जो शालीनता प्रकट करते हैं परन्तु अन्दर से भेड़िए हैं, बहुत हैं जो ऊपर से स्वच्छ हैं परन्तु अन्दर से सांप हैं। अतः तुम ख़ुदा के समक्ष स्वीकार्य नहीं हो सकते जब तक अन्दर और बाहर समान न हो। बड़े होकर छोटों पर दया करो न कि उनका अपमान, ज्ञानी होकर अज्ञानियों को भलाई का पाठ पढ़ाओ न कि स्वयं को श्रेष्ठ समझकर उनका अनादर, धनवान होकर निर्धन की सेवा करो न कि स्वयं श्रेष्ठ बनकर उन पर अभिमान। विनाश के मार्गों से भयभीत रहो, ख़ुदा से डरते रहो, शालीनता एवं सदाचार का अनुसरण करो, मानव की उपासना न करो, केवल अपने ख़ुदा के लिए त्याग करो, संसार से हृदय मत लगाओ, ख़ुदा के हो जाओ, उसी के लिए जीवन व्यतीत करो, उसके लिए प्रत्येक अपवित्रता और पाप से घृणा करो क्योंकि वह पवित्र है। हर सुबह तुम्हारे लिए साक्ष्य दे कि तुम ने ख़ुदा में लीन रहते हुए रात्रि व्यतीत की। हर शाम तुम्हारे लिए साक्ष्य दे कि तुम ने डरते-डरते दिन व्यतीत किया। संसार के अभिशापों और फटकारों से मत डरो कि वे धुंए की भांति देखते-देखते लुप्त हो जाती हैं। वे दिन को रात में परिवर्तित नहीं कर सकतीं। तुम ख़ुदा के अभिशाप से डरो जो आकाश से आता है और जिस पर गिरता है उसकी लोक व परलोक दोनों स्थानों पर जड़ काट देता है। तुम आडम्बर से स्वयं को सुरक्षित नहीं रख सकते क्योंकि तुम्हारे ख़ुदा की दृष्टि तुम्हारे पाताल तक है। क्या तुम उसको धोखा दे सकते हो। अतः तुम सीधे और स्वच्छ हो जाओ, पवित्र और निष्कपट हो जाओ। यदि तुम्हारे अन्दर थोड़ा सा भी अन्धकार विद्यमान है तो वह तुम्हारे

सम्पूर्ण प्रकाश को नष्ट कर देगा। यदि तुम्हारे अन्दर किसी भी स्तर पर अभिमान, आडम्बर, आलस्य या स्वयं को ही श्रेष्ठ समझने की भावना व्याप्त है तो तुम ख़ुदा के समक्ष स्वीकार योग्य नहीं। ऐसा न हो कि तुम कुछ बातों को लेकर स्वयं को धोखा देते रहो कि जो कुछ तुमने करना था कर चुके, जबकि ख़ुदा की इच्छा है कि तुम्हारे जीवन का पूर्ण काया-कल्प हो। वह तुमसे एक मौत माँगता है जिसके पश्चात वह तुम्हें जीवन प्रदान करेगा। तुम परस्पर शीघ्र सुलह करो, अपने भाइयों के दोषों को क्षमा करो क्योंकि उद्‌दण्ड है वह मनुष्य जो अपने भाई से समझौता करने के लिए तैयार नहीं। वह काटा जाएगा क्योंकि वह एकता को खंडित करता है। तुम हर पहलू से अहं को त्याग दो, आपसी द्वेष मिटा दो, सच्चे होकर झूठे की भांति दीनता का अनुसरण करो ताकि तुम्हें क्षमा किया जा सके। अंहकार में मत बढ़ो कि जिस द्वार पर तुम्हें बुलाया गया है उसमें एक अहंकारी मनुष्य प्रवेश नहीं कर सकता। दुर्भाग्यशाली है वह मनुष्य जो इन बातों को नहीं समझता जो ख़ुदा के मुख से निकलीं और मैंने उनका वर्णन किया। यदि तुम चाहते हो कि आकाश पर ख़ुदा तुम से प्रसन्न हो तो तुम परस्पर इस प्रकार एक हो जाओ जैसे एक पेट में दो भाई। तुम में श्रेष्ठतम वही है जो अपने भाई के दोषों और भूलों को अधिक से अधिक क्षमा करता है, और दुर्भाग्यशाली है वह जो हठधर्मी से काम लेते हुए उसे क्षमा नहीं करता। ऐसे व्यक्ति का मुझ से कोई नाता नहीं। ख़ुदा की फटकार से डरो कि वह पवित्र और स्वाभिमानी है। कुकर्मी ख़ुदा के निकट नहीं हो सकता, अभिमानी उसके निकट नहीं हो सकता, अत्याचारी उसके निकट नहीं हो सकता, धरोहर को हड़प

जाने वाला उसके निकट नहीं हो सकता और प्रत्येक जो उसके नाम के लिए मर मिटने वाला नहीं उसके निकट नहीं हो सकता, वे जो भौतिक साधनों पर कुत्तों, चीलों और गिद्दों की भांति टूट पड़ते हैं वे सांसारिक भोग-विलास में लीन हैं वे ख़ुदा के निकट नहीं हो सकते। प्रत्येक अपवित्र दृष्टि उस से परे है, प्रत्येक अपवित्र हृदय उस से बे ख़बर है। वह जो उसके लिए अग्नि में है उसे अग्नि से मुक्ति दी जाएगी, वह जो उसके लिए रोता है वह हँसेगा, वह जो उसके लिए संसार से विरक्त होता है वह उसे प्राप्त होगा। तुम सच्चे दिल, पूर्ण सच्चाई और लगन से ख़ुदा के मित्र बन जाओ ताकि वह भी तुम्हारा मित्र बन जाए। तुम अपने अधीन काम करने वालों, अपनी पत्नियों और अपने दीन भ्रातृजनों पर दया करो ताकि आकाश पर तुम पर भी दया हो। तुम वास्तव में उसके हो जाओ ताकि वह भी तुम्हारा हो जाए। संसार सहस्त्रों विपत्तियों का स्थान है जिनमें से एक प्लेग भी है। अतः तुम ख़ुदा से सच्चा सम्बन्ध स्थापित करो ताकि वह यह विपत्तियाँ तुम से दूर रखे। कोई विपत्ति या संकट धरती पर नहीं आता जब तक आकाश से आदेश न हो। कोई संकट दूर नहीं होता जब तक आकाश से कृपा न हो। अतः आपकी बुद्धिमत्ता इसी में है कि तुम जड़ को पकड़ो न कि शाखा को। तुम्हें औषधि और उपाय से रोका नहीं है, हाँ उन पर निर्भर रहने से रोका है। अन्ततः वही होगा जो उसकी इच्छा के अनुकूल होगा। यदि कोई शक्ति रखे तो ख़ुदा पर निर्भर रहने का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। तुम्हारे लिए एक अनिवार्य शिक्षा यह है कि क़ुर्आन शरीफ़ को अलग-थलग न डाल दो कि उसी में तुम्हारा जीवन निहित है। जो लोग क़ुर्आन को सम्मान देंगे वे आकाश

पर सम्मानित किए जाएंगे। जो लोग हर हदीस और हर वाणी पर क़ुर्आन को प्राथमिकता देंगे उनको आकाश पर प्राथमिकता प्रदान की जाएगी। समस्त मानव जाति के लिए सम्पूर्ण धरती पर अब क़ुर्आन के अतिरिक्त कोई पुस्तक नहीं और न ही हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिवा कोई रसूल और सिफ़ारिश करने वाला। अतः तुम प्रयास करो कि सच्चा प्रेम इस प्रभुत्वशाली नबी के साथ हो। उस पर किसी अन्य को किसी भी प्रकार की श्रेष्ठता न दो, ताकि आकाश पर तुम्हारा नाम मुक्ति प्राप्त लोगों में लिखा जाए। स्मरण रहे कि मुक्ति कोई ऐसी वस्तु नहीं जो मरणोपरांत प्रकट होगी अपितु वास्तविक मुक्ति वह है जो इसी संसार में अपना प्रकाश दिखलाती है। मुक्ति प्राप्त मनुष्य कौन है? वह जो विश्वास रखता है कि ख़ुदा एक वास्तविक सत्य है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके और उसकी प्रजा के मध्य सिफ़ारिश करने वाले हैं। आकाश के नीचे उनके समान न कोई अन्य रसूल है और न क़ुर्आन के समान कोई अन्य पुस्तक है। ख़ुदा ने किसी के लिए न चाहा कि वह सदा जीवित रहे परन्तु यह ख़ुदा की ओर से आया हुआ नबी सदा के लिए जीवित है, और ख़ुदा ने उसके सदा जीवित रहने की नींव इस प्रकार रखी है कि उसकी शरीअत और आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्रलय तक जारी रखा और अन्ततः उसकी आध्यात्मिक उपलब्धियों से इस **मसीह मौऊद** को संसार में भेजा, जिसका आना इस्लामी इमारत को **पूर्ण** करने के लिए आवश्यक था। अनिवार्य था कि यह संसार उस समय तक समाप्त न हो जब तक कि मुहम्मदी धारा के लिए एक मसीह **आध्यात्मिक** रूप में न दिया जाता, जैसा

कि मूसा की धारा के लिए दिया गया था। यह आयत इसी ओर संकेत करती है कि-

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

"इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीमा-सिरातल्लज़ीना अनअमता अलैहिम"
(अल फ़ातिहा 6-7)

मूसा ने वह कुछ प्राप्त किया जिसे प्राचीन पीढ़ियाँ खो चुकी थीं, और **हज़रत मुहम्मद** साहिब ने वह सब कुछ पाया जिसको मूसा की क़ौम खो चुकी थी। अब मुहम्मदी धारा मूसवी धारा की उत्तराधिकारी है पर प्रतिष्ठा में हज़ारों गुना बढ़कर। मसीले मूसा, मूसा से बढ़कर और मसीले इब्ने मरयम इब्ने मरयम से बढ़कर और वह मसीह मौऊद न केवल समय की दृष्टि से हज़रत मुहम्मद साहिब के बाद चौदहवीं शताब्दी में आया था★ जैसा कि मसीह इब्ने मरयम मूसा के चौदहवीं शताब्दी में प्रकट हुआ था। बल्कि उसका प्रादुर्भाव ऐसे समय में हुआ जबकि मुसलमानों का वैसा ही हाल था जैसा कि मसीह इब्ने मरयम के प्रादुर्भाव के समय यहूदियों का। अतः वह मैं ही हूं। ख़ुदा जो चाहता है करता है। मूर्ख वह है जो उससे झगड़े और नादान है वह जो उसके समक्ष यह आपत्ति करे कि यों नहीं यों होना चाहिए था। ख़ुदा ने मुझे चमकते हुए निशानों के साथ भेजा है जो दस हज़ार से भी अधिक हैं। इनमें से एक प्लेग भी है। जो मनुष्य सच्चे हृदय से मेरी बैअत करता है और सच्चे हृदय से ही आदेशों का पालन करता

★**हाशिया :-** यहूदी अपने इतिहास के अनुसार निर्विरोध यही मानते हैं कि मूसा के चौदहवीं शताब्दी के आरंभ में ईसा का प्रादुर्भाव हुआ था देखो यहूदियों का इतिहास।

है, मेरे आदेशों का पालन करते हुए अपनी समस्त इच्छाओं को त्याग देता है, वही है जिसके लिए इन विपत्तियों के दिनों में मेरी आत्मा उसकी **सिफ़ारिश करेगी। अतः हे वे समस्त लोगो!** जो स्वयं को मेरी जमाअत में शामिल करते हो आकाश पर तुम उस समय मेरी जमाअत में शुमार किए जाओगे, जब वास्तव में सदाचार के मार्गों पर चलोगे। अतः अपनी पांचों समय की नमाज़ों को ऐसे भय और तल्लीनता से पूरा करो कि जैसे तुम परमेश्वर को देख रहे हो और अपने रोज़ों (उपवासों) को ख़ुदा के लिए पूरी सच्चाई के साथ पूरा करो। प्रत्येक जो ज़कात देने के योग्य है वह ज़कात दे और जिस पर हज का दायित्व आ चुका है और इस्लामी सिद्धान्तों को देखते हुए कोई बाधा या रोक नहीं वह हज करे। भलाई को अच्छे रंग में करो, बुराई की उपेक्षा करते हुए उसे तिलांजलि दो। निस्संदेह स्मरण रखो कि सदाचार रहित कोई भी कर्म ख़ुदा तक नहीं पहुँच सकता। प्रत्येक भलाई की जड़ **सदाचार** है। जिस कर्म में यह जड़ नष्ट नहीं होगी वह कर्म भी व्यर्थ नहीं जाएगा। अनिवार्य है कि शोक और विपत्तियों से तुम्हारी परीक्षा भी हो, जिस प्रकार तुम से पूर्व ख़ुदा पर आस्था रखने वालों की परीक्षा हुई। अतः सावधान रहो। ऐसा न हो कि ठोकर खाओ। धरती तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती यदि तुम्हारा आकाश से **अटूट नाता** है। तुम जब भी अपना नुकसान करोगे तो अपने ही हाथों से करोगे न कि शत्रु के हाथों से। यदि तुम्हारा सांसारिक सम्मान पूर्णतया जाता रहे तो ख़ुदा तुम्हें आकाश पर वह सम्मान प्रदान करेगा जो कभी कम न हो। अतः तुम ख़ुदा को मत छोड़ो आवश्यक है कि तुम्हें दुःख दिया जाए और तुम्हारी

अनेकों आशाओं पर पानी फिर जाए। पर इन समस्त परिस्थितियों में तुम निराश मत हो, क्योंकि तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारी परीक्षा लेता है कि तुम उसके मार्ग में दृढ़ हो या नहीं। यदि तुम चाहते हो कि आकाश पर फ़रिश्ते भी तुम्हारी प्रशंसा करें तुम मार खाओ और प्रसन्न रहो, ग़ालियां सुनो और आभार प्रकट करो, असफलता देखो पर ख़ुदा से नाता मत तोड़ो। तुम ख़ुदा की अन्तिम जमाअत हो। अतः ऐसे सुकर्म करो जो अपने गुणों की दृष्टि से सर्वोत्तम हों। प्रत्येक जो तुम में अलसी हो जायेगा वह एक अपवित्र वस्तु कि भांति जमाअत से बाहर फेंक दिया जायेगा और हसरत से मरेगा पर ख़ुदा का कुछ न बिगाड़ सकेगा। देखो **मैं बड़ी प्रसन्नता से यह सन्देश** देता हूँ कि तुम्हारा ख़ुदा वास्तव में विद्यमान है, यद्यपि कि सबको उसी ने पैदा किया है, पर वह उस मनुष्य को चुन लेता है जो उसको चुनता है। वह उसके निकट आ जाता है, जो उसे सम्मान देता है वह उसको भी सम्मान देता है।

तुम अपने हृदयों को स्वच्छ, मुख, नेत्र और कणों को पवित्र करके ख़ुदा की ओर आ जाओ कि वह तुम्हें स्वीकार करेगा। आस्थानुसार ख़ुदा जो तुमसे चाहता है वह यही है कि वह एक और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके नबी है और वह समस्त नबियों की मुहर और सर्वश्रेष्ठ हैं। अब उसके पश्चात् कोई नबी नहीं परन्तु वही जिस को प्रतिबिम्ब स्वरूप मुहम्मद के रंग की चादर पहनाई गयी, क्योंकि सेवक अपने स्वामी से अलग नहीं और न शाखा अपने तने से अलग है। अतः जो पूर्णरूपेण अपने स्वामी की आज्ञाकारिता में लीन होकर ख़ुदा से **नबी** का नाम पाता है वह

ख़त्मे नुबुव्वत में बाधक नहीं। जिस प्रकार कि तुम जब दर्पण में अपनी शक्ल देखो तो तुम दो नहीं हो सकते बल्कि एक ही रहोगे, यद्यपि कि सामान्यत: दो दिखाई देते हैं। अन्तर केवल मूल और छाया का है। ऐसा ही ख़ुदा ने मसीह मौऊद के सन्दर्भ में चाहा। **यही भेद है** कि **हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम** फ़रमाते हैं कि मसीह मौऊद मेरी क़ब्र में दफ़्न होगा अर्थात् वह मैं ही हूँ। इसमें दो रंगी? नहीं आयी और नि:संदेह तुम समझ लो कि **ईसा इब्ने मरयम** मर चुका है और कश्मीर श्रीनगर मुहल्ला★ ख़ानयार में उसकी क़ब्र है। ख़ुदा तआला ने अपनी पवित्र पुस्तक में उसकी मृत्यु की सूचना दी है और यदि इस आयत का अर्थ कुछ और है तो क़ुर्आन में ईसा इब्ने मरयम की मृत्यु की सूचना कहां है? मरने के विषय में जो आयतें हैं, यदि उनका अर्थ कुछ और है जैसा कि हमारे विरोधी समझते हैं तो फिर क़ुर्आन ने उसके मरने को कहीं उल्लेख नहीं किया कि वह किसी समय मरेगा भी। ख़ुदा ने हमारे नबी के मरने की सूचना दी, परन्तु सम्पूर्ण क़ुर्आन में ईसा के मरने की सूचना नहीं दी। इसमें क्या भेद है? और यदि कहा जाए कि ईसा के मरने की सूचना इस आयत में है-

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ★

"फ़लम्मा तवफ़्फ़यतनी कुन्ता अंतर्रक़ीबा अलैहिम"

(अलमाइदा - 118)

★**हाशिया :-**ईसाई अन्वेषकों ने यही कहा है। देखो किताब "सुपर नेचुरल रिलीजन" पृष्ठ-522 यदि अधिक विवरण चाहते हो तो हमारी पुस्तक "तुहफ़ा गोलड़विया" का पृष्ठ 139 देख लो। इसी से

इस आयत से स्पष्ट है कि वह ईसाइयों के बिगड़ने से पूर्व मर चुके हैं। यदि आयत فَلَمَّا تَوَفَّيۡتَنِیۡ फ़लम्मा तवफ़्फ़यतनी का अर्थ यह हैं कि इस भौतिक शरीर सहित ईसा को आकाश पर उठा लिया तो क्यों ख़ुदा ने सम्पूर्ण क़ुर्आन में ऐसे मनुष्य की मृत्यु पर प्रकाश क्यों नहीं डाला, जिसके जीवित रहने के विचार ने लाखों मनुष्यों का विनाश कर डाला? अतः ख़ुदा ने उसको सदा के लिए इसलिए जीवित रहने दिया ताकि लोग अनेकेश्वरवादी और अधर्मी हो जाएँ अर्थात् इसमें लोगों का दोष नहीं अपितु ख़ुदा ने यह सब कुछ स्वयं किया ताकि लोगों को सदमार्ग से दूर हटा दे। ख़ूब याद रखो कि मसीह की मौत के बिना सलीबी आस्था पर मृत्यु नहीं आ सकती। अतः इससे क्या लाभ कि क़ुर्आन की शिक्षा के विरुद्ध उसको जीवित समझा जाए। उसको मरने दो ताकि यह धर्म जीवित हो। ख़ुदा ने अपनी वह्यी से मसीह की मृत्यु स्पष्ट की तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मैराज की रात में उसको मुर्दों में देख लिया, पर तुम हो कि अब भी नहीं मानते। **यह कैसा ईमान?** क्या लोगों की बातों को ख़ुदा की वाणी पर प्राथमिकता देते हो। यह कैसा धर्म है।★ हमारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने न केवल साक्ष्य दी कि मैंने

★**हाशिया :-** इसी आयत से ज्ञात होता है कि ईसा अलैहिस्सलाम दुनिया में फिर नहीं आएँगे क्योंकि यदि वह दुनिया में आने वाले होते तो ऐसी स्थिति में हज़रत ईसा का यह उत्तर झूठा सिद्ध होता है कि मुझे ईसाइयों के बिगड़ने का कोई ज्ञान नहीं। जो मनुष्य दोबारा दुनिया में आया और चालीस वर्ष रहा और करोड़ों ईसाइयों को देखा जो उन्हें ख़ुदा समझते थे और सलीब तोड़ी और समस्त ईसाइयों को मुस्लिम बनाया तो ऐसा मनुष्य प्रलय के दिन ख़ुदा के समक्ष यह क्योंकर प्रस्तुत कर सकता है कि मुझे ईसाइयों के बिगड़ने का कुछ ज्ञान नहीं। इसी से

मुर्दा आत्माओं में ईसा को देखा बल्कि स्वयं मर कर भी सिद्ध कर दिया कि इस से पूर्व कोई जीवित नहीं रहा। हमारे विरोधी जिस प्रकार क़ुर्आन का परित्याग करते हैं, उसी प्रकार सुन्नत का भी, क्योंकि मरना हमारे नबी की सुन्नत है। यदि ईसा जीवित था तो मरने में हमारे रसूल का अपमान था। अतः तुम न अहले सुन्नत हो न अहले क़ुर्आन, जब तक कि ईसा की मौत को स्वीकार न करो। मैं हज़रत ईसा की शान का इन्कार नहीं करता, यद्यपि कि ख़ुदा ने मुझे सूचना दी है कि मसीहे मुहम्मदी मसीहे मूसवी से श्रेष्ठ है, पर मैं फिर भी मसीह इब्ने मरयम का बहुत सम्मान करता हूं क्योंकि मैं आध्यात्मिक रंग से इस्लाम में **ख़ातमुलख़ुलफ़ा** हूं, जैसा कि मरयम का बेटा मसीह इस्राईली धारा के लिए ख़ातमुलख़ुलफ़ा था। मूसा की धारा में मसीह

★**हाशिया :-** क़ुर्आन शरीफ़ में एक आयत में स्पष्ट रूप से कश्मीर की ओर संकेत किया है कि मसीह और उसकी मां सलीब की घटना के पश्चात कश्मीर की ओर चले गए जैसा कि वह फ़रमाता है-

وَآوَيْنٰهُمَآ إِلَىٰ رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ

"व आवयनाहुमा इला रबवतिन ज़ाते क़रारिन व मईन"

(अल मौमिनून-51)

अर्थात् हमने ईसा और उसकी मां को एक ऐसे टीले पर स्थान दिया जो आराम का स्थान था और वहाँ झरनों का स्वच्छ पानी था। अतः ख़ुदा ने इसमें कश्मीर का नक़्शा खींच दिया है और **आवा** का शब्द अरबी शब्दकोश में किसी मुसीबत या कष्ट से शरण देने के लिए प्रयोग होता है। पर सलीब पर चढ़ने से पूर्व ईसा और उनकी मां पर मुसीबत का कोई समय नहीं आया जिससे शरण दी जाती। अतः सिद्ध हुआ कि ख़ुदा ने ईसा और उनकी मां को सलीब की घटना के पश्चात् उस टीले पर पहुँचाया था।

इब्ने मरयम मसीह मौऊद था और मुहम्मदी धारा में मैं मसीह मौऊद हूं। अत: मैं उसका सम्मान करता हूं जिसका मैं समनाम हूं। वह मनुष्य उपद्रवी और झूठा है जो मुझे कहता है कि मैं मसीह इब्ने मरयम का सम्मान नहीं करता। मसीह तो मसीह, मैं तो उसके चारों भाइयों का भी सम्मान करता हूं।★ क्योंकि पांचों एक ही माँ के पुत्र हैं। यही नहीं बल्कि मैं तो हज़रत मसीह की दोनों सगी बहनों को भी पवित्र समझता हूं। क्योंकि ये सब पवित्र मरयम के पेट से पैदा हुए हैं और मरयम की वह छवि है जिसने एक अरसे तक स्वयं को निकाह से रोका। फिर क़ौम के प्रतिष्ठित और सम्मानित लोगों के बहुत बल देने पर गर्भवती होने के कारण निकाह कर लिया; यद्यपि कि लोग आपत्ति करते हैं कि तौरात की शिक्षा के विरुद्ध गर्भ की अवस्था में निकाह क्योंकर किया गया। पवित्र होने की प्रतिज्ञा को अकारण भंग किया गया और अनेक विवाह करने की बुनियाद क्यों डाली गई, अर्थात् यूसुफ़ नज्जार की पहली पत्नी होने के बावजूद मरयम उससे निकाह करने हेतु क्यों तैयार हुई। परन्तु मेरे नज़दीक यह सब विवशताएँ थीं जो उनके समक्ष आ गईं। इस परिस्थिति में वे लोग दया के पात्र थे न कि आपत्ति के।

इन सब बातों के पश्चात मैं फिर कहता हूं कि यह मत सोचो

★**हाशिया :-** ईसा मसीह के चार भाई और दो बहनें थीं और ये सब सगे भाई बहन थे अर्थात् सब यूसुफ़ और मरयम की सन्तान थे। चार भाइयों के नाम यह हैं- यहूदा, याकूब, शमऊन, यूज़िस और दो बहनों के नाम यह थे- आसिया, लेडिया। देखो किताब एपास्टोलिक रिकार्डस लेखक पादरी जान ऐलन गायल्ज़ प्रकाशित लन्दन 1886 ई. पृष्ठ 159,166

कि हमने प्रत्यक्ष रूप से बैअत कर ली है। प्रत्यक्ष कुछ नहीं ख़ुदा की दृष्टि तुम्हारे दिलों पर है और उसी के अनुसार तुमसे व्यवहार करेगा। देखो, मैं यह कहकर प्रचार के कर्तव्य से निश्चिन्त होता हूं कि पाप एक विष है इसको मत खाओ। ख़ुदा की आज्ञा का पालन न करना एक घृणित मृत्यु है, उससे बचो। प्रार्थना करो ताकि तुम्हें शक्ति प्राप्त हो। जो मनुष्य प्रार्थना के समय ख़ुदा को हर एक बात पर सर्व शक्तिमान नहीं समझता सिवाए उसके वायदों के अपवाद के, वह मेरी जमाअत में से नहीं। जो व्यक्ति झूठ और धोखाधड़ी को नहीं छोड़ता वह मेरी जमाअत में से नहीं। जो मनुष्य संसार के मोह में फंसा हुआ है, और आख़िरत की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य वास्तव में दीन (धर्म) को दुनिया पर प्राथमिकता नहीं देता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य पूर्ण रूपेण प्रत्येक बुराई और प्रत्येक दुष्कर्म अर्थात् मदिरा, जुआ, बुरी दृष्टि, ख़यानत, रिश्वत और प्रत्येक अनुचित व्यवहार से तौबा नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य प्रतिदिन पांचों समय की नमाज़ को अपने जीवन की दिनचर्या नहीं बनाता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य दुआ (प्रार्थना) में निरंतर लगा नहीं रहता और शालीनता से ख़ुदा का स्मरण नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य दुष्ट साथी को नहीं छोड़ता जो उस पर दुष्प्रभाव डालता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य अपने माता-पिता का आदर सम्मान नहीं करता और पुण्यादेशों में जो क़ुर्आनी शिक्षा के विरोधी नहीं, उन की आज्ञा का पालन नहीं करता और उनकी सेवा के कर्तव्य से लापरवाह है

वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य अपनी पत्नी और उसके संबंधियों से उदारता और शालीनता का व्यवहार नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य अपने पड़ोसी को तुच्छ से तुच्छ भलाई से भी वंचित करता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य नहीं चाहता कि अपने दोषी का दोष क्षमा करे और द्वेष भाव रखता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है।

प्रत्येक मनुष्य जो अपनी पत्नी से और पत्नी अपने पति से ख़यानत का व्यवहार करती है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य उस प्रतिज्ञा को जो उसने बैअत करते समय की थी किसी प्रकार भी तोड़ता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो वास्तव में मुझे मसीह मौऊद और महदी नहीं समझता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य पुण्यादेशों में मेरी आज्ञा पालन करने के लिए तैयार नहीं वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य विरोधियों के साथ बैठकर उनका समर्थन करता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। प्रत्येक बलात्कारी, दुराचारी, शराबी, खूनी, जुआरी, धरोहर को हड़पने वाला, घूस लेने वाला, दूसरों का अधिकार हनन करने वला, अत्याचारी, झूठा, पाखण्डी और उसका साथी, अपने भाई बहनों पर अनुचित आरोप लगाने वाला, जो अपने दुष्कर्मों को त्याग कर क्षमा याचना नहीं करता और बुरी संगत का परित्याग नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। यह सब विष हैं तुम इनका विषपान करके किसी भी प्रकार बच नहीं सकते। अन्धकार व प्रकाश एक स्थान पर एकत्र नहीं हो सकते। प्रत्येक मनुष्य जो पेचीदा स्वभाव रखता है और ख़ुदा के साथ स्वच्छ और पवित्र संबंध नहीं रखता वह उस

अनुकम्पा को कदापि प्राप्त नहीं कर सकता जो स्वच्छ और पवित्र हृदय वालों को प्राप्त होती है। क्या ही सौभाग्यशाली हैं वे लोग जो अपने हृदयों को हर दोष से पवित्र कर लेते हैं और अपने ख़ुदा से वफ़ादारी का दृढ़ सकंल्प करते हैं, क्योंकि वे कदापि व्यर्थ नहीं किए जाएँगे। संभव नहीं कि परमेश्वर उनको अपमानित होने दे क्योंकि वे ख़ुदा के हैं और ख़ुदा उनका, वे प्रत्येक आपदा और विपदा के समय सुरक्षित रखे जाएँगे। मूर्ख है वह शत्रु जो उनको अपनी शत्रुता का लक्ष्य बनाए, क्योंकि वे ख़ुदा की गोद में हैं और ख़ुदा उनका सहायक है। **ख़ुदा पर किसकी आस्था है?** केवल उन्हीं की जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है। इसी प्रकार वह मनुष्य भी मूर्ख है जो एक मुँहफट पापी, दुष्ट, दुराचारी के अधीन है क्योंकि उसका स्वयं विनाश होगा। ख़ुदा ने जब से धरती और आकाश की रचना की कभी ऐसा अवसर नहीं आया कि उसने सज्जन पुरुषों को नष्ट कर दिया हो, अपितु वह उनके लिए बड़े-बड़े कार्यों का प्रदर्शन करता रहा है और अब भी करेगा। वह ख़ुदा असीम वफ़ादार है, और वफ़ादारों के लिए उसके अदभुत कार्य प्रदर्शित होते हैं। दुनिया चाहती है कि उनको मिटा दे और प्रत्येक शत्रु उन पर दांत पीसता है परन्तु ख़ुदा जो उनका मित्र है, प्रत्येक विनाश से उनकी रक्षा करता हैं, प्रत्येक मैदान में उनको विजय प्रदान करता है। वह मनुष्य बड़ा सौभाग्यशाली है जो उस ख़ुदा का **दामन न छोड़े।** हमने उसे स्वीकार किया और पहचाना। समस्त संसार का **वही ख़ुदा है** जिसने मुझे अपनी वाणी से गौरवान्वित किया, मेरे लिए **अलौकिक निशान** प्रकट किए, जिसने मुझे इस युग के लिए **मसीह मौऊद** बनाकर भेजा। धरती और आकाश में उसके अतिरिक्त

कोई ख़ुदा नहीं। जो मनुष्य उसे स्वीकार नहीं करता और उस पर आस्था नहीं रखता वह सौभाग्य से वंचित और अपमान से ग्रसित है। हमने ख़ुदा की वाणी को सूर्य की भांति प्रकाशमान पाया। हमने उसे देखा कि संसार का वही ख़ुदा है उसके अतिरिक्त कोई नहीं। जिसे हमने पाया वह समस्त शक्तियों से परिपूर्ण, जीवित रहने वाला और जीवनदाता है। जिसे हमने देखा वह असीम और अनन्त शक्तियों वाला है। सत्य तो यह है कि उसके समक्ष कोई बात भी अनहोनी नहीं सिवाए इसके कि जो उसकी पुस्तक और उसके वायदे के विरुद्ध हो। अतः जब तुम ख़ुदा से प्रार्थना करो तो उन मूर्ख भौतिकवादियों की भांति न करो जो अपने ही विचार से प्रकृति का एक विधान बना बैठे हैं, जिस की ख़ुदा की पुस्तक द्वारा कोई पुष्टि नहीं क्योंकि वे ख़ुदा से बहुत दूर हैं, उनकी प्रार्थनाएं कदापि स्वीकार न होंगी। वे अंधे हैं न कि सुझाखे, वे मुर्दे हैं न कि जीवित।

ख़ुदा के समक्ष अपना बनाया हुआ विधान प्रस्तुत करते हैं। और उसकी असीम और अनन्त शक्तियों को सीमित करते हैं, उसे निर्बल समझते हैं। अतः उनसे उनकी विचारधारा के अनुसार ही व्यवहार किया जाएगा। परन्तु हे मनुष्य जब तू प्रार्थना हेतु खड़ा हो तो तुझ पर अनिवार्य है कि तू यह विश्वास रखे कि तेरा ख़ुदा प्रत्येक वस्तु पर पूर्ण अधिकार और शक्ति रखता है तब तेरी प्रार्थना स्वीकार होगी और तू ख़ुदा की अलौकिक शक्तियों के चमत्कार को देखेगा, जो हमने देखे हैं। इस सन्दर्भ में हमारी साक्ष्य ख़ुदा के चमत्कार देखने करने पर आधारित है न कि कपोल कल्पित गाथाओं पर। उस मनुष्य की प्रार्थना कैसे स्वीकार हो सकती है जो बड़ी-बड़ी विपत्तियों को प्रकृति के नियम के विरुद्ध समझता है। ऐसा मनुष्य ख़ुदा के समक्ष प्रार्थना हेतु खड़े होने का

साहस कैसे कर सकता है जो ख़ुदा को प्रत्येक वस्तु पर पूर्ण अधिकार रखने वाला एवं सर्वशक्ति सम्पन्न नहीं समझता। पर हे सौभाग्यशाली मनुष्य! तू ऐसा मत कर, तेरा ख़ुदा तो वह है जिसने अगणित नक्षत्रों को आकाश में बिना किसी स्तम्भ के लटका दिया, जिसने धरती और आकाश को कुछ न होते हुए उत्पन्न किया। क्या तू ऐसा विचार रखता है कि वह तेरे कार्य करने में असमर्थ रहेगा★ तेरी ही कुधारणाएं तुझे वंचित कर सकती हैं। हमारा ख़ुदा तो अगण्य चमत्कारों वाला है, पर वे ही देख पाते हैं जो पूर्ण सच्चाई और आस्था से उसी के हो गए हैं। वह ऐसे मनुष्यों पर अपने अलौकिक चमत्कार प्रदर्शित नहीं करता जो उसकी शक्तियों पर विश्वास नहीं करते और उसके सच्चे परम भक्त नहीं है। कितना दुर्भाग्यशाली है वह मनुष्य जिसे अब तक यह ज्ञात नहीं कि उसका ख़ुदा है जो समस्त शक्तियों से परिपूर्ण है। हमारा स्वर्ग हमारा एक ख़ुदा है। हमारा परमानन्द हमारा ख़ुदा है

★हाशिया :- ख़ुदा कोई भी कार्य करने में असमर्थ नहीं और ख़ुदा की पुस्तक ने दुआ (प्रार्थना) के लिए यह नियम प्रस्तुत किया है कि वह सज्जन पुरुष के साथ अपनी असीम कृपा से मित्रों की भांति व्यवहार करता है, अर्थात् कभी तो अपनी इच्छा को छोड़कर उसकी प्रार्थना सुनता है जैसा कि वह स्वयं फ़रमाता है- (उदऊनी अस्तजिब लकुम) (अलमोमिन-41) और कभी-कभी अपनी इच्छा पूर्ण कराना चाहता है जैसा कि फ़रमाया- وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ व 'लनब्लोवन्नकुम बिशैइन मिनल खौफ़े वल्जूए' ऐसा इसलिए करता है कि कभी मनुष्य से उसकी प्रार्थना अनुसार व्यवहार करके विश्वास और ख़ुदा प्राप्ति के ज्ञान में उसको उन्नत करे और कभी अपनी इच्छानुसार व्यवहार करके अपनी प्रसन्नता का पुरस्कार प्रदान करे, उसकी प्रतिष्ठा बढ़ाए और उससे प्यार करते हुए सदमार्ग पर अग्रसर करे। इसी से

क्योंकि हमने उसका अनुभव किया है। हर प्रकार का सौन्दर्य उसमें विद्यमान है। यह दौलत लेने योग्य है यद्यपि कि जीवन देकर प्राप्त हो, यह रत्न ख़रीदने योग्य है यद्यपि समस्त अस्तित्व खोकर प्राप्त हो। **हे वंचित रहने वालो! इस झरने की ओर** दौड़ो कि यह तुम्हें **सींचेगा।** यह जीवनदायी झरना है जो तुम्हें सुरक्षित रखेगा। मैं क्या करूँ और किस प्रकार इस शुभ सन्देश को हृदयों तक पहुँचाऊँ, किस **ढपली** से मैं बाज़ारों में **मुनादी** करूँ कि तुम्हारा ख़ुदा यह है ताकि लोग सुन लें, किस औषधि से मैं उपचार करूँ ताकि सुनने के लिए लोगों के कान खुलें।

यदि तुम ख़ुदा के हो जाओ तो निस्सन्देह ख़ुदा तुम्हारा ही है। तुम सोए हुए होगे, और ख़ुदा तुम्हारे लिए जागेगा। तुम शत्रु से बेख़बर होगे पर ख़ुदा उसे देखेगा और उसके प्रयत्नों को विफल करेगा। तुम्हें अभी तक ज्ञात नहीं कि तुम्हारे ख़ुदा में कौन-कौन सी शक्तियां विद्यमान हैं। यदि तुम्हें ज्ञात होता तो तुम पर कोई दिन ऐसा न आता कि तुम संसार के लिए सख्त दुखी होते। एक मनुष्य जो अपने पास एक खज़ाना रखता है क्या वह एक पैसे के व्यर्थ हो जाने से विलाप करता है, चीखें मारता है और मरने लगता है। यदि तुम को उस खज़ाने की सूचना होती कि तुम्हारा ख़ुदा प्रत्येक आवश्यकता के अवसर पर काम आने वाला है, तो तुम सांसारिक वस्तुओं के लिए इतने आपे से बाहर न होते। ख़ुदा एक **प्यारा खज़ाना** है उसकी क़द्र करो कि वह तुम्हारे प्रत्येक पग पर तुम्हारी सहायता करता है, उसके बिना तुम्हारा कोई अस्तित्व नहीं, तुम्हारे साधन, प्रयास और प्रयत्न महत्त्वहीन हैं। अन्य कौमों का अनुकरण मत करो जो पूर्णरूपेण सांसारिक साधनों

पर निर्भर हैं। जैसे सांप मिट्टी खाता है इसी प्रकार वे संसार के क्षुद्र साधनों पर आश्रित हो गए, जैसे गिद्द और कुत्ते मरे हुए जानवर को खाते हैं। इन्होने भी मुर्दा जानवरों पर दांत मारे। वे ख़ुदा से बहुत दूर हो गए, उन्होंने मनुष्यों की उपासना की, सुअर खाया और मदिरा का पानी की भांति सेवन किया, भौतिक साधनों पर गिरे और ख़ुदा से शक्ति न मांगने के कारण वे मर गए। उनमें से आध्यात्मिकता इस प्रकार निकल गई जिस प्रकार घोंसले से पक्षी उड़ जाता है। उनके अन्दर सांसारिक साधनों की उपासना का एक कोढ़ है जिसने उनके सभी आन्तरिक अवयवों को काट दिया है। अतः तुम उस कोढ़ से डरो। मैं तुम्हें सांसारिक साधनों से एक सीमा में रहते हुए लाभ उठाने से नहीं रोकता अपितु तुम्हें इस बात से रोकता हूं कि तुम अन्य कौमों की भांति इन भौतिक साधनों के दास बन जाओ और उस ख़ुदा को भुला दो जो उन साधनों को पैदा करता है। अगर तुम्हारे नेत्र हैं तो तुम्हें दिखाई दे जाए कि ख़ुदा के अतिरिक्त सब कुछ तुच्छ है। तुम उसकी आज्ञा के बिना अपने हाथों को न तो फैला सकते हो न समेट सकते हो। एक आध्यात्मिक मुर्दा इस बात की हंसी उड़ाएगा, यदि वह वास्तव में मर गया होता तो उसके लिए अति उत्तम था। सावधान! तुम अन्य कौमों को देखकर उनका अनुकरण मत करो कि उन्होंने भौतिक लक्ष्यों की प्राप्ति में बहुत उन्नति कर ली है, इसलिए हम भी उन्हीं के पद चिन्हों पर चलें। सुनो और समझो कि वे उस ख़ुदा से लापरवाह और अपरिचित हैं, जो तुम्हें अपनी ओर बुलाता है। उनका ख़ुदा क्या है? मात्र एक विवश इन्सान। इसलिए वे लापरवाही में पड़े हैं। मैं तुम्हें दुनिया कमाने और व्यापार आदि करने से नहीं रोकता, पर

तुम उन लोगों के अधीन मत हो जिन्होंने संसार को ही सब कुछ समझ लिया है। तुम्हारे प्रत्येक कार्य में चाहे वे दुनिया का हो या दीन (धर्म) का उसको करने में ख़ुदा से हर समय सामर्थ्य मांगते रहो लेकिन न केवल शुष्क होंठों से बल्कि तुम्हारी सचमुच यह आस्था हो कि प्रत्येक भलाई आकाश से ही उतरती है। तुम सच्चे उसी समय बनोगे जब तुम प्रत्येक संकट के समय किसी भी प्रयास से पूर्व सबसे विरक्त होकर ख़ुदा की चौखट पर गिरो कि हे ख़ुदा! मेरे समक्ष यह समस्या है, अपनी विशेष अनुकम्पा से इस समस्या का समाधान कर। तब ख़ुदा के फ़रिश्ते तुम्हारी सहायता करेंगे और अदृश्य शक्ति की ओर से कोई मार्ग तुम्हारे लिए प्रशस्त किया जाएगा। अपने प्राणों पर दया करो। जो लोग ख़ुदा से अपने समस्त संबंध समाप्त कर चुके हैं और तन-मन से पूर्णरूपेण संसार पर निर्भर हैं, यहां तक कि शक्ति और सामर्थ्य मांगने के लिए अपने मुख से इन्शाअल्लाह भी नहीं कहते, उनका अनुसरण मत करो। ख़ुदा तुम्हारे नेत्र खोले ताकि तुम्हें ज्ञात हो कि तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारे समस्त प्रयासों का आधारभूत स्तम्भ है। यदि स्तम्भ गिर जाए तो क्या कड़ियाँ अपनी छत पर टिकी रह सकती हैं? कदापि नहीं, बल्कि एक बार में ही गिर पड़ेंगी और संभव है कि उनसे कई मौतें भी हो जाएँ। इसी प्रकार तुम्हारे प्रयास भी ख़ुदा की सहायता के बिना सफल नहीं हो सकते। यदि तुम उससे सहायता नहीं मांगोगे, उससे शक्ति माँगना अपनी दिनचर्या नहीं बनाओगे तो तुम्हें कोई सफलता प्राप्त नहीं होगी। अन्ततः बड़ी हसरत के साथ मरोगे। यह मत सोचो कि फिर अन्य कौमें क्योंकर सफलता प्राप्त कर रही हैं, जबकि वह उस ख़ुदा को जानती भी नहीं जो सर्वशक्ति सम्पन्न

है। इसका उत्तर यही है कि वे ख़ुदा को छोड़ने के कारण संसार की परीक्षा में डाली गई हैं। ख़ुदा की ओर से परीक्षा के प्रारूप अनेक हैं। कभी परीक्षा का प्रारूप यह होता है कि जो मनुष्य ख़ुदा को छोड़कर संसार की मौज-मस्तियों से दिल लगाता है, संसार के धन-दौलत की आकांक्षा करता है, प्राय: ऐसे मनुष्य के लिए संसार के द्वार खोल दिए जाते हैं, पर धर्म की दृष्टि से वह बड़ा दरिद्र और हीन होता है। संसार की प्राप्ति हेतु विचार मग्न रहकर ही मरता और नर्क में चला जाता है। कभी परीक्षा का प्रारूप ऐसा होता है कि संसार में भी असफल रहता है। पर यह परीक्षा इतनी भयानक नहीं जितनी प्रथम, जिसका वर्णन किया जा चुका है। क्योंकि प्रथम परीक्षा वाला अधिक अभिमानी होता है। अत: यह दोनों समूह ही वे हैं जिन पर ख़ुदा का प्रकोप रहता है। सच्ची ख़ुशहाली का स्रोत ख़ुदा है। जब ये लोग उस शाश्वत, और जीवन प्रदान करने वाले ख़ुदा से अज्ञान हैं बल्कि लापरवाह हैं, उस से विमुख हो रहे हैं, तो सच्ची ख़ुशहाली उन्हें किस प्रकार प्राप्त हो सकती है। बधाई हो उस मनुष्य को जो इस रहस्य को पा ले। विनाश हो गया उस मनुष्य का जो इस रहस्य को न पा सका। इसी प्रकार तुम्हें चाहिए कि संसार के दार्शनिकों का अनुसरण न करो, उन्हें सम्मान की दृष्टि से मत देखो क्योंकि यह सब मूर्खताएं हैं। सच्चा दर्शन वही है जिसकी शिक्षा ख़ुदा ने अपनी वाणी में दी है। विनाश हो गया उन लोगों का जो इस संसार के दर्शन पर मोहित हैं। सफल हैं वे लोग जिन्होंने सत्य ज्ञान और दर्शन को ख़ुदा की पुस्तक में खोजा। मूर्खता के मार्ग क्यों चुनते हो। क्या तुम ख़ुदा को उन बातों की शिक्षा दोगे जिन्हें वह नहीं जानता। क्या तुम अंधों के पीछे दौड़ते

हो कि वे तुम्हारा पथ-प्रदर्शन करें। **हे मूर्खो!** जो स्वयं अंधा है वह तुम्हारा पथ प्रदर्शन क्या करेगा। सच्चा दर्शन ख़ुदा द्वारा प्राप्त होता है, जिसका तुम से वायदा किया गया है। तुम ख़ुदा की सहायता से उस पवित्र ज्ञान तक पहुँच सकोगे, जिस तक अन्य लोग नहीं पहुँच सकते। यदि पूर्ण श्रद्धा से याचना करोगे तो तुम्हें वह प्राप्त होंगे, तब तुम्हें ज्ञात होगा कि यथार्थ ज्ञान यही है जो हृदय को ताज़गी और जीवन प्रदान करता है और विश्वास के मीनार तक पहुँचा देता है। वह जो स्वयं मुर्दे खाता है वह तुम्हारे लिए पवित्र भोजन कहां से उपलब्ध कराएगा, जो स्वयं अंधा है वह तुम्हें कैसे मार्ग दिखाएगा। प्रत्येक पवित्र दर्शन आकाश से आता है। अतः तुम धरती के लोगों से क्या आशा रखते हो। जिनकी रूहें आकाश की ओर प्रस्थान करती है वे ही सत्य दर्शन के पात्र और अधिकारी हैं। जो स्वयं संतुष्ट नहीं, वे तुम्हें क्यों कर सांत्वना दे सकते हैं। पर सर्वप्रथम हृदय की पवित्रता अनिवार्य है, सत्य और स्वच्छता आवश्यक है। तत्पश्चात तुम्हें ये सब कुछ प्राप्त होगा। यह विचार मत करो कि ख़ुदा की वह्यी पीछे रह गई है★और उसे लाने वाला फ़रिश्ता अब नहीं आ सकता, बल्कि पहले युगों में वह आता था। मैं तुम्हें सच-सच कहता हूं कि प्रत्येक द्वार बंद हो सकता है परन्तु रूहुलक़ुदुस के उतरने का द्वार कभी बंद नहीं होता। तुम अपने हृदय के द्वार खोल दो ताकि वह उसमें प्रवेश कर सके। तुम स्वयं अपने आपको उस सूर्य से दूर रखते हो जब उसकी किरणों को अन्दर प्रवेश

★**हाशिया:-** क़ुर्आन शरीफ़ पर शरीअत पूर्ण हो गई क्योंकि वह सच्चे धर्म की रूह है। जिस धर्म में ईशवाणी का सिलसिला जारी नहीं वह धर्म मुर्दा है, ख़ुदा उसके साथ नहीं।

करने का मार्ग नहीं देते।

हे मूर्ख! उठ और उस बंद खिड़की को खोल दे, तब सूर्य का प्रकाश स्वयं तेरे अन्दर प्रवेश कर जाएगा। जब इस युग में ख़ुदा ने सांसारिक उपलब्धियों के द्वार तुम्हारे लिए बंद नहीं किए बल्कि अधिक किए हैं, तो क्या तुम्हारा विचार यह है कि आकाशीय उपलब्धियों के मार्ग जिनकी तुम्हें इस युग में नितान्त आवश्यकता थी बंद कर दिए हैं? कदापि नहीं, अपितु बड़ी सफ़ाई से वह मार्ग प्रशस्त किया गया है। अब जब कि ख़ुदा ने अपनी शिक्षानुसार जो उसने सूरह फ़ातिह: में दी है, अतीत की समस्त अनुकम्पाओं के द्वार तुम पर खोल दिए हैं तो तुम उन्हें ग्रहण करने से क्यों इन्कार करते हो। उस स्रोत से पानी पीने के लिए प्यासे बनो कि पानी स्वयं आ जाएगा। उस दूध के लिए तुम मासूम बच्चे की भांति रोना शुरू करो कि स्तन से दूध स्वयं उतर आएगा। दया के पात्र बनो ताकि तुम पर दया की जाए, विहब्ल हो जाओ ताकि तुम्हें सांत्वना मिले, बारम्बार चिल्लाओ ताकि एक हाथ तुम्हें थाम ले। क्या ही कठिन मार्ग वह है जो ख़ुदा का मार्ग है, पर यह उनके लिए सुगम बना दिया जाता है, जो मरने की नीयत से उस अथाह गहराई में गिरते हैं, वे अपने हृदय में निर्णय कर लेते हैं कि हमें अग्नि स्वीकार है। हम अपने प्रियतम के प्रेम के लिए उसमें जलेंगे। अत: वे अपने आपको उस अग्नि में झोंक देते हैं, पर अचानक वे देखते हैं कि वह अग्नि नहीं स्वर्ग है। यही है जो ख़ुदा ने फ़रमाया-

وَإِنْ مِّنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا

"व इम्मिनकुम इल्ला वारिदुहा काना अला रब्बेका हत्मम्मक़ज़िय्या (मरयम-72)

अर्थात् बुरे भले समस्त लोग तुम में से प्रत्येक को नर्काग्नि पर से गुज़रना होगा, पर जो अपने ख़ुदा के लिए अग्नि से गुज़रते हैं उन्हें मुक्ति प्रदान की जाएगी, लेकिन वह मनुष्य जो तामसिक वृत्तियों का अनुसरण करते हुए अग्नि पर से गुज़रता है वह अग्नि उसे भस्म कर देगी। अतः बधाई के पात्र हैं वे जो ख़ुदा के लिए अपनी तामसिक वृत्तियों से जूझ रहे हैं और उन वृत्तियों का अनुसरण नहीं करते। जो मनुष्य अपने स्वार्थ हेतु परमेश्वर के आदेशों का उल्लंघन करता है वह आकाश में कदापि प्रवेश नहीं कर सकेगा। अतः तुम प्रयास करो कि क़ुर्आन शरीफ़ का एक छोटा सा हिस्सा भी तुम्हारे विरुद्ध साक्ष्य प्रस्तुत न करे कि तुम उसी पर पकड़े जाओ, क्योंकि थोड़ी सी बुराई भी दंडनीय है। समय कम है और आयु सीमित। शीघ्र पग उठाओ कि संध्या निकट है। जो कुछ प्रस्तुत करना है उसका भली भांति निरीक्षण कर लो ऐसा न हो कि कुछ रह जाए और व्यर्थ चला जाए या सब अपवित्र और खोटा सामान हो जो ख़ुदा के दरबार में प्रस्तुत करने योग्य न हो।

मैंने सुना है कि तुम में से कुछ हदीस को बिल्कुल नहीं मानते। यदि वे ऐसा करते हैं तो यह उनकी बहुत भूल है। मैंने यह शिक्षा नहीं दी कि ऐसा करो, अपितु मेरा दृष्टिकोण यह है कि तीन चीज़ें हैं जिन्हें ख़ुदा ने तुम्हारे पथ-प्रदर्शन हेतु दिया है। सर्व प्रथम★ क़ुर्आन है जिसमें

★**हाशिया :-** पथ प्रदर्शन का दूसरा स्रोत सुन्नत है, अर्थात् वे पवित्र आदेश जो हज़रत मुहम्मद साहिब ने अपने कार्यों से क्रियात्मक रूप में प्रस्तुत किये। उदाहरणार्थ नमाज़ पढ़कर दिखलाई कि नमाज़ यों पढ़नी चाहिए। रोज़ा (उपवास) रखकर दिखाया कि इस प्रकार रखा जाए। इसका नाम सुन्नत है, अर्थात् पैग़म्बर मुहम्मद साहिब के वे कृत्य जो ख़ुदा के आदेशानुसार उन्होंने करके दिखाए। सुन्नत इसी

ख़ुदा का एकेश्वरवाद का सिद्धांत, प्रतिष्ठा और गरिमा का वर्णन है। जिसमें उन विवादों के सन्दर्भ में न्याय किया गया है जो यहूदी और ईसाइयों में थे। जैसा कि यह विवाद और दोष कि ईसा इब्ने मरयम के सलीब के द्वारा मारा गया और वह लानती हुआ और अन्य नबियों की भांति उसे मुक्ति नहीं मिली उसे आध्यात्मिक श्रेष्ठता प्राप्त नहीं हुई। इसी प्रकार क़ुर्आन आज्ञा नहीं देता कि ख़ुदा के अतिरिक्त अन्य किसी की उपासना की जाए, न मनुष्य की, न जानवर की, न सूर्य की न चन्द्रमा की न किसी नक्षत्र की न भौतिक साधनों की और न स्वयं की। अतः तुम सावधान रहो। ख़ुदा की शिक्षा और क़ुर्आन के पथ-प्रदर्शन के विपरीत एक पग भी न उठाओ। मैं तुम्हें सच-सच कहता हूं कि जो मनुष्य क़ुर्आन के सात सौ आदेशों में से एक छोटे से आदेश को भी टालता है वह मुक्ति द्वार को स्वयं अपने लिए बंद करता है। वास्तविक और पूर्ण मुक्ति के मार्ग क़ुर्आन ने प्रदर्शित किए, शेष सभी उसकी तुलना में छाया मात्र थे। अतः तुम क़ुर्आन का पूरी सतर्कता से अध्ययन करो और उससे अत्यधिक प्रेम करो, ऐसा प्रेम जो तुम ने किसी से न किया हो। क्योंकि जैसा ख़ुदा ने मुझे संबोधित करते हुए फ़रमाया-

اَلْخَيْرُ كُلُّهٗ فِى الْقُرْاٰنِ

"अलख़ैरो कुल्लुहू फ़िलक़ुर्आन"

कि समस्त प्रकार की भलाइयां क़ुर्आन में हैं। यही बात सत्य है।

का नाम है। पथ प्रदर्शन का तीसरा स्रोत हदीस है। आपके पश्चात आपकी वाणी और कथनों को एकत्र किया गया। हदीस का दर्जा क़ुर्आन और सुन्नत से कम है क्योंकि बहुत सारी हदीसें काल्पनिक हैं, पर यदि उनका प्रमाण सुन्नत से मिले तो वह विश्वसनीय हो जाएंगी।

खेद है उन लोगों पर जो किसी अन्य वस्तु को उस पर प्राथमिकता देते हैं। तुम्हारी सम्पूर्ण सफलता और मुक्ति का स्रोत क़ुर्आन में निहित है। तुम्हारी कोई भी धार्मिक आवश्यकता ऐसी नहीं जिसका समाधान क़ुर्आन में न हो। प्रलय के दिन तुम्हारे ईमान के सच्चे या झूठे होने की कसौटी क़ुर्आन है। आकाश के नीचे क़ुर्आन के अतिरिक्त और कोई पुस्तक नहीं जो किसी अन्य पर निर्भर हुए बिना तुम्हारा पथ-प्रदर्शन कर सके। ख़ुदा ने तुम पर आपार कृपा की है जो क़ुर्आन जैसी पुस्तक तुम्हें प्रदान की। मैं तुम्हें सच-सच कहता हूं कि वह पुस्तक जो तुम्हारे सम्मुख पढ़ी गई यदि ईसाइयों के सम्मुख पढ़ी जाती तो वे तबाह न होते। यह उपकार और पथ-प्रदर्शन जो तुम्हें उपलब्ध किया गया यदि (तौरात) को छोड़ कर यहूदियों को उपलब्ध कराया जाता तो उनके कुछ समूह प्रलय का इन्कार न करते। अतः इस उपकार के महत्त्व को समझो जो तुम्हारे साथ किया गया। यह अति उत्तम उपकार है यह अपार संपत्ति है। यदि क़ुर्आन न आता तो समस्त संसार एक अपवित्र और तुच्छ लोथड़े की भांति था। **क़ुर्आन** वह पुस्तक है जिसके समक्ष सभी पथ-प्रदर्शन तुच्छ हैं। इंजील को लाने वाला **रूहुलक़ुदुस** (फरिश्ता) कबूतर के रूप में प्रकट हुआ था जो एक निर्बल और कमज़ोर पक्षी है जिसे बिल्ली भी दबोच सकती है। इसलिए दिन प्रतिदिन कमज़ोरी के गढ़े में गिरते गए और उनमें आध्यात्मिकता शेष न रही क्योंकि उनके ईमान का समस्त आधार कबूतर पर था। परन्तु क़ुर्आन का रूहुलक़ुदुस उस श्रेष्ठतम रूप में प्रकट हुआ था जिसने धरती से लेकर आकाश तक को अपने अस्तित्व से भर दिया था। कहां वह निर्बल कबूतर और कहां यह अद्‌भुत और अलौकिक प्रकाश जिस

का विवरण क़ुर्आन में भी है। क़ुर्आन एक सप्ताह में मनुष्य को पवित्र कर सकता है अगर बाह्य अथवा आन्तरिक इच्छाएं नहीं, क़ुर्आन तुम को नाबियों के समान कर सकता है यदि तुम स्वयं उससे दूर न भागो। क़ुर्आन के अतिरिक्त किसी अन्य पुस्तक ने प्रारम्भ में ही अपने अध्ययन कर्ताओं को यह प्रार्थना नहीं सिखाई और न ही यह आशा दिलाई कि-

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ـ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

"इहदि नस्सिरातल मुस्तक़ीमा सिरातल्लज़ीना अनअमता अलैहिम" (सूरह फ़ातिहा 6-7)

अर्थात् हमें अपनी उन नेमतों का मार्ग दिखा जो हमसे पूर्व लोगों को दिखाया गया, जो नबी, सिद्दीक़, शहीद और सालिह थे। अतः अपने साहस को दृढ़ करो और क़ुर्आन के निमन्त्रण की अवहेलना मत करो कि वह तुम्हें वे पुरस्कार देना चाहता है जो तुम से पूर्व लोगों को दिए थे। क्या उसने तुम्हें बनी इस्राईल का देश और बनी इस्राईल का बैतुल मकदस प्रदान नहीं किया जो आज तक तुम्हारे अधिकार में है। अतः हे निर्बल आस्था और निर्बल साहस रखने वालो! क्या तुम्हारा यह विचार है कि तुम्हारे ख़ुदा ने भौतिक रूप में तो बनी इस्राईल की समस्त संपत्तियों का उत्तराधिकारी बना दिया परन्तु आध्यात्मिक रूप में तुम्हें उत्तराधिकारी न बना सका, जब कि ख़ुदा की इच्छा है कि उनकी अपेक्षा तुम्हें अधिक लाभ पहुंचाए। ख़ुदा ने तुम्हें उनके भौतिक और आध्यात्मिक साधनों और धन संपत्ति का उत्तराधिकारी बनाया, पर तुम्हारा उत्तराधिकारी कोई अन्य न होगा यहां तक कि प्रलय आ जाए। ख़ुदा तुम्हें अपनी वाणी और वार्तालाप से कभी वंचित नहीं रखेगा। वह तुम्हें वे समस्त नेमतें प्रदान करेगा जो

अतीत में तुम्हारे पूर्वजों को प्रदान की गईं। परन्तु जो मनुष्य उद्दण्डता का मार्ग अपनाते हुए ख़ुदा पर झूठ बांधेगा और कहेगा कि ख़ुदा की वाणी मुझ पर आई है हालांकि नहीं आई, या यह कहेगा कि मुझे उसने अपनी वाणी से गौरवान्वित किया है जबकि नहीं किया, तो मैं ख़ुदा और उसके फरिश्तों को साक्षी रखकर कहता हूं कि उसका विनाश किया जाएगा क्योंकि उसने अपने जन्मदाता पर झूठ बाँधा और मक्कारी और अंहकार प्रकट किया। अतः तुम इस स्थिति से डरो। लानत है उन लोगों पर जो झूठे स्वप्न बनाते हैं और झूठे इल्हाम और कलाम का दावा करते हैं-कि ख़ुदा ने हमें अपनी वाणी और आदेशों से गौरवान्वित किया है। दूसरे शब्दों में उनका विचार है कि ख़ुदा का अस्तित्व नहीं, पर ख़ुदा का प्रकोप उन पर आएगा। उनका बुरा दिन उनसे टल नहीं सकता। अतः तुम सत्य, शालीनता और संयम से क्षमायाचना करो, ख़ुदा के प्रेम में उन्नति करो और जीवन पर्यन्त अपना कर्तव्य यही समझो, फिर ख़ुदा तुम में से जिसको चाहेगा अपनी वाणी और वार्तालाप से गौरवान्वित करेगा। तुम्हारी ऐसी आकांक्षा भी नहीं होनी चाहिए कि परिणाम स्वरूप तामसिक आवेग जन्म लेने लगें जिससे अनेकों लोग नष्ट हो जाते हैं। अतः तुम सेवा और उपासना में लगे रहो। तुम्हारे समस्त प्रयास ख़ुदा के आदेशों का पालन करने में व्यस्त रहें। मुक्ति की प्राप्ति हेतु विश्वास और श्रद्धा में उन्नति करो न कि ख़ुदा की वाणी के प्रदर्शन हेतु। क़ुर्आन शरीफ़ में तुम्हारे लिए अति पवित्र उपदेशों का उल्लेख है जिनमें से एक यह है कि तुम अनेकेश्वरवाद की पूर्णतया अवहेलना करो कि अनेकेश्वरवादी मनुष्य मुक्ति के स्त्रोत से बहुत दूर है। तुम झूठ मत बोलो कि झूठ

भी अनेकेश्वरवाद का ही एक भाग है। क़ुर्आन तुम्हें इंजील की भांति यह नहीं कहता कि केवल बुरी दृष्टि और कामवासना के विचार से स्त्रियों की ओर देखना अवैध है, इसके अतिरिक्त शेष सब वैध है बल्कि वह कहता है कि कदापि न देखो न बुरी दृष्टि से न अच्छी दृष्टि से, कि इन सबसे तुम ठोकर खाओगे। तुझे चाहिए कि पराई स्त्री के सम्मुख आ जाने पर तेरी दृष्टि नीचे रहे, तुझे उसकी सूरत का कुछ ज्ञान न हो परन्तु उतना ही जैसे एक धुंधली दृष्टि से वर्षा शुरू होते समय कोई किसी को देख पाए। क़ुर्आन तुम्हें इंजील की भांति यह नहीं कहता कि इतनी शराब मत पियो कि मस्त हो जाओ बल्कि वह कहता है कि कदापि न पी अन्यथा तुझे ख़ुदा का मार्ग प्राप्त न होगा, ख़ुदा तुझ से वार्तालाप नहीं करेगा और न गंदगियों से पवित्र करेगा और वह कहता है कि यह शैतान का आविष्कार है **तुम इससे बचो।** क़ुर्आन तुम्हें इंजील की भांति मात्र यह नहीं कहता कि अपने भाई पर **अकारण क्रोधित मत हो** बल्कि वह कहता है कि न केवल अपने क्रोध को वश में रख बल्कि-

تَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ

"तवासव बिल मरहम"

(अलबलद-18)

पर अमल भी करो और दूसरों को भी कह कि ऐसा करें। न केवल स्वयं दया कर बल्कि दया करने हेतु अपने समस्त भाइयों को वसीयत भी कर और **क़ुर्आन** तुम्हें इंजील की भांति यह नहीं कहता कि अपनी स्त्री के बलात्कार करने के अतिरिक्त प्रत्येक अपवित्रता पर सब्र करो और तलाक़ मत दो बल्कि कहता है-

الطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ

"अत्तय्यिबातो लित्तय्यिबीन"

(अन्नूर - 27)

क़ुर्आन का सिद्धांत यह है कि **अपवित्र** पवित्र का साथी नहीं रह सकता। अतः यदि तेरी स्त्री **बलात्कार** तो नहीं करती परन्तु अन्य लोगों को कामुक दृष्टि से देखती है और उनसे मेल-जोल रखती है और **बलात्कार** की प्रेरणा देती है यद्यपि कि अभी अन्तिम सीमा तक नहीं पहुँची, अन्य लोगों को अपना नंगापन दिखाती है और अनेकेश्वरवादी है और तू जिस पवित्र ख़ुदा पर ईमान रखता है उस से वह विमुख है और यदि वह इन कृत्यों से न रुके तो तू उसे तलाक़ दे सकता है क्योंकि वह अपने कर्मों में तुझ से अलग हो गई, अब तेरे शरीर का अंग नहीं रही। अतः तेरे लिए वैध नहीं है कि तू बेहयाई से उसके साथ रहे क्योंकि अब वह तेरे शरीर का अंग नहीं एक अपवित्र और बदबूदार अंग है जो काटने योग्य है। ऐसा न हो कि वह शेष अंगों को भी अपवित्र और गन्दा कर दे और तू मर जाए और **क़ुर्आन** तुम्हें इंजील की भांति यह नहीं कहता कि सौगन्ध कदापि न खा बल्कि व्यर्थ सौगन्ध खाने से रोकता है क्योंकि कुछ परिस्थितियों में निर्णय हेतु सौगन्ध एक माध्यम है और ख़ुदा किसी प्रमाण के माध्यम को नष्ट करना नहीं चाहता क्योंकि इससे उसका दर्शन व्यर्थ होता है। यह स्वाभाविक बात है कि जब कोई मनुष्य एक परस्पर झगड़े वाले मामले में साक्ष्य न दे तब निर्णय हेतु ख़ुदा की साक्ष्य की आवश्यकता है और सौगन्ध ख़ुदा को साक्षी बनाने का नाम है। **क़ुर्आन** तुम्हें इंजील की भांति यह नहीं कहता कि प्रत्येक

स्थान पर **अत्याचारी का मुकाबला न करना** बल्कि वह कहता है-

وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ

"जज़ाओ सय्यिअतिन सय्यिअतुन मिस्लुहा फ़मन अफ़ा व असलहा फ़अजरूहू अलल्लाह" (अश्शूरा-41)

अर्थात् बुराई का बदला उतनी ही बुराई है जो की गई, जो मनुष्य क्षमा कर दे और गुनाह को माफ़ कर दे और इस माफ़ी और क्षमा से कोई सुधार होता हो न कोई ख़राबी, तो ख़ुदा उससे प्रसन्न है और उसे वह उसका प्रतिफल प्रदान करेगा। अतः क़ुर्आन के अनुसार न प्रत्येक स्थान पर प्रतिशोध अच्छा है और न प्रत्येक स्थान पर क्षमा ही सराहनीय है, अपितु स्थान व अवसर के अनुकूल व्यवहार करना चाहिए और चाहिए कि प्रतिशोध और क्षमा का आचरण सदा स्थान व अवसर के अनुकूल हो न कि प्रतिकूल, क़ुर्आन का यही उद्देश्य है और **क़ुर्आन** इंजील की भांति यह नहीं कहता कि अपने **शत्रुओं** से प्रेम करो बल्कि वह कहता है कि चाहिए कि इन्सान होने के नाते तेरा कोई भी शत्रु न हो। तेरी सहानुभूति सामान्य रूप से सबके लिए हो, **पर** जो तेरे ख़ुदा का शत्रु, तेरे रसूल का शत्रु, ख़ुदा की किताब का शत्रु है वही तेरा शत्रु होगा। अतः तू ऐसे लोगों को भी ख़ुदा की ओर बुलाने से और अपनी प्रार्थना से वंचित न रख। अनिवार्य है कि तू उनके कर्मों से शत्रुता रखे न कि उनके अस्तित्व से। तू कोशिश करे कि वे सुधर जाएं। इस सन्दर्भ में क़ुर्आन कहता है-

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی

"इन्नल्लाहा यामुरो बिल अदले वल इह्साने व ईताएज़िल कुरबा" (अन्नहल-91)

अर्थात् ख़ुदा तुम से चाहता है कि समस्त मानव समाज से न्याय का व्यवहार करो, फिर इससे बढ़कर यह है कि उनसे भी भलाई करो जिन्होंने तुम्हारे साथ कोई भी भलाई नहीं की, फिर इससे भी बढ़कर यह कि तुम प्रजा से इस प्रकार सहानुभूति और उदारतापूर्ण व्यवहार करो जैसे तुम उनके वास्तविक संबंधी हो जिस प्रकार माताएं अपने शिशुओं से सहानुभूति और उदारतापूर्ण व्यवहार करती हैं; क्योंकि उपकार में अपने आपको प्रदर्शित करने का तत्व भी निहित होता है और उपकार करने वाला कभी अपने उपकार को जता भी देता है परन्तु वह जो मां की भांति अपने स्वाभाविक आवेग से भलाई करता है वह कभी अपने आपको प्रदर्शित नहीं कर सकता। अतः भलाई करने का अन्तिम दर्जा स्वाभाविक आवेग है जो मां की भांति हो और यह आयत न केवल प्रजा से संबंधित है बल्कि ख़ुदा के संबंध में भी है। ख़ुदा से न्याय का अभिप्राय यह है कि उसके उपकारों को स्मरण करके उसकी आज्ञा का पालन करना और ख़ुदा से अहसान यह है कि उसके अस्तित्व पर ऐसा विश्वास करना जैसे वह ख़ुदा को देख रहा है और ख़ुदा से ईताएज़िल कुरबा यह है कि उसकी उपासना न तो स्वर्ग की लालसा से हो न ही नर्क के भय से बल्कि यदि कल्पना की जाए कि न तो स्वर्ग है न ही नर्क, तब भी प्रेमावेग और आज्ञापालन में कोई अन्तर न आए। इंजील में लिखा गया है कि जो लोग तुम्हें अभिशाप दें उनके लिए वरदान चाहो। परन्तु क़ुर्आन कहता है कि तुम स्वयं से कुछ भी न करो। तुम अपने हृदय, जो ख़ुदा के अलौकिक प्रकाशों का घर है से परामर्श लो कि ऐसे मनुष्य के साथ कैसा व्यवहार किया जाए। यदि ख़ुदा तुम्हारे हृदय में डाले कि

यह अभिशाप देने वाला दया योग्य है और आकाश में वह अभिशाप योग्य नहीं, तो तुम भी अभिशाप न दो ताकि ख़ुदा के विरोधी न ठहराए जाओ। परन्तु यदि तुम्हारा कान्शंस (अन्तर्आत्मा) उसको असमर्थ नहीं ठहराता और तुम्हारे हृदय में डाला गया कि आकाश पर यह अभिशापी है तो तुम उसके लिए वरदान न चाहो जैसा कि शैतान के लिए किसी नबी ने वरदान नहीं चाहा। किसी भी नबी ने उसे अभिशाप से स्वतंत्र नहीं किया। पर किसी के लिए भी अभिशाप में जल्दी न करो क्योंकि बुरे विचार मिथ्या हैं और बहुत से अभिशाप अपने ही ऊपर पड़ जाते हैं। संभलकर पग उठाओ, प्रत्येक कार्य पूर्ण सतर्कता से करो और ख़ुदा से ही सहायता मांगो क्योंकि तुम अंधे हो। ऐसा न हो कि तुम न्यायप्रिय को अत्याचारी ठहराओ और सत्यवादी को झूठा। इस प्रकार तुम अपने ख़ुदा को रुष्ट कर दो और तुम्हारे सब पुण्य कर्म व्यर्थ हो जाएँ।

ऐसा ही इंजील में कहा गया है कि तुम अपने शुभ कर्मों को लोगों के समक्ष दिखलाने के लिए न करो। परन्तु क़ुर्आन कहता है कि तुम ऐसा मत करो कि अपने सारे कार्य लोगों से छुपाओ बल्कि तुम अवसर के अनुकूल अपने कुछ शुभ कार्य गुप्त रूप से करो, जब तुम देखो कि गुप्त रूप से कार्य करना तुम्हारे हित में है और कुछ कार्य दूसरों के समक्ष प्रदर्शन करते हुए भी करो, जब तुम देखो कि प्रदर्शन में लोगों की भलाई है ताकि तुम्हें ख़ुदा की ओर से दोगुना बदला प्राप्त हो और ताकि निर्बल लोग जो एक शुभ कार्य का साहस नहीं रखते वे भी तुम्हारा अनुसरण करते हुए वह शुभ कार्य कर लें। अत: ख़ुदा ने अपनी वाणी में जो कहा- سِرًّا وَّعَلَانِيَةً (सिर्रन व अलानियतन)

अर्थात् गुप्त रूप से भी दान दो और प्रत्यक्ष रूप से भी। इन आदेशों की फ़िलास्फ़ी का उसने स्वयं वर्णन कर दिया है। जिसका अर्थ यह है कि न केवल अपने कथन से लोगों को समझाओ बल्कि कर्म से भी प्रेरणा दो क्योंकि प्रत्येक स्थान पर कथन प्रभावशाली नहीं होता बल्कि अधिकांशतः आदर्श का बहुत प्रभाव पड़ता है।

इसी प्रकार इंजील में है कि जब तू प्रार्थना करे तो अपनी कोठरी में जा। परन्तु क़ुर्आन शिक्षा देता है कि अपनी प्रार्थना को हर अवसर पर गुप्त मत रखो बल्कि तुम लोगों के सम्मुख और अपने भाइयों के समूह में प्रत्यक्ष रूप में भी प्रार्थना किया करो ताकि यदि कोई प्रार्थना स्वीकार हो तो उस समूह के लिए ईमान की उन्नति का कारण हो और अन्य लोगों को भी प्रेरणा मिले। इसी प्रकार इंजील में है कि तुम इस प्रकार प्रार्थना करो कि हे हमारे बाप जो कि आकाश पर है तेरे नाम की पवित्रता स्थापित हो, तेरा राज्य आए, तेरी मर्ज़ी जैसे आकाश पर है धरती पर आए। हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे। जिस प्रकार हम अपने कर्ज़दारों को बख्शते हैं तू अपने ऋण को हमें बख्श दे और हमें परीक्षा में न डाल, बल्कि बुराई से बचा क्योंकि राज्य, अधिकार शक्ति और शौर्य सदा तेरे ही हैं। परन्तु क़ुर्आन कहता है कि यह नहीं कि धरती उसकी पवित्रता से खाली है बल्कि धरती पर भी ख़ुदा की पवित्रता का गुणगान हो रहा है, न केवल आकाश पर जैसा कि ख़ुदा का कथन है-

وَإِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ

"वइम्मिन शैइन इल्ला युसब्बिहो बिहम्दिही"

(बनी इस्राईल-45)

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ

"युसब्बिहो लिल्लाहे मा फ़िस्समावाते वमा फ़िलअर्ज़"

(अलजुम्आ-2)

अर्थात् धरती, आकाश और जो कुछ उनमें है का कण-कण ख़ुदा की पवित्रता का गुणगान करने में व्यस्त है, पर्वत उसकी स्तुति में व्यस्त हैं, समुद्र उसके स्मरण में लीन पड़े हैं, पेड़-पौधे उसकी स्तुति में व्यस्त हैं, बहुत से सत्यवादी उसकी स्तुति में व्यस्त हैं और जो मनुष्य हृदय और मुख से उसकी स्तुति में व्यस्त नहीं और ख़ुदा के समक्ष नहीं झुकता उसे ख़ुदा की नियति विभिन्न प्रकोपों और आपदाओं से नतमस्तक करा रही है और जो कुछ फरिश्तों के विषय में परमेश्वर की पुस्तक में लिखा है कि वे नितांत आज्ञापालक है। यही प्रशंसा धरती के चप्पे-चप्पे और कण-कण के संदर्भ में क़ुर्आन शरीफ़ में विद्यमान है कि प्रत्येक वस्तु उसकी आज्ञा का पालन कर रही है। उसकी आज्ञा के बिना न कोई पत्ता गिर सकता है, न कोई औषधि स्वस्थ कर सकती है, न कोई भोजन स्वास्थ्यप्रद हो सकता है। प्रत्येक वस्तु असीम शालीनता और असीम सेवाभाव से ख़ुदा की चौखट पर नतमस्तक है, उसकी आज्ञा का पालन करने में लीन है। धरती और आकाश पर्वतों का कण-कण समुद्रों और सागरों की एक-एक बूंद, पेड़-पौधों का एक-एक पत्ता, उसका एक-एक भाग, मनुष्य और जानवरों के समस्त कण ख़ुदा को पहचानते, उसकी आज्ञा का पालन करते और उसकी पवित्रता और श्रेष्ठता का गुणगान करते हैं। इसलिए ख़ुदा ने फ़रमाया-

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ

"युसब्बिहो लिल्लाहे मा फ़िस्समावाते वमा फ़िलअर्ज़"

(अलजुमआ-2)

अर्थात् जैसे आकाश पर हर एक वस्तु उसकी पवित्रता और श्रेष्ठता का गुणगान करती है इसी प्रकार धरती पर भी प्रत्येक वस्तु उसकी पवित्रता और श्रेष्ठता का गुणगान करती है। अतः क्या धरती पर ख़ुदा की पवित्रता और श्रेष्ठता का गुणगान नहीं होता। ऐसे अपशब्द एक सच्चे परमभक्त के मुख से नहीं निकल सकते, बल्कि धरती की वस्तुओं में से कोई वस्तु तो धर्मादेशों का पालन कर रही है तो कोई ख़ुदा की नियति के आदेशों के अधीन है, कोई दोनों के आज्ञापालन में जुटी हुई है।

क्या बादल क्या वायु क्या अग्नि क्या धरती सब के सब ख़ुदा के आज्ञापालन और उसकी पवित्रता के बखान में व्यस्त हैं। यदि कोई मनुष्य ख़ुदा के धर्मादेशों का अवज्ञाकारी है तो वह उसकी नियति से संबंधित आदेशों के अधीन है। इन दोनों प्रकार के शासनों से बाहर कोई नहीं। किसी न किसी आकाशीय शासन का जुआ प्रत्येक की गर्दन पर है। हां मनुष्य के हृदयों के सुधार और बिगाड़ के अन्तर्गत लापरवाही और ख़ुदा का स्मरण बारी-बारी धरती पर विजय की ओर अग्रसर होते हैं परन्तु ख़ुदा की इच्छा और नीति के बिना यह उतार-चढ़ाव स्वयं नहीं होते। ख़ुदा ने चाहा कि धरती पर ऐसा हो अतः हो गया। सदमार्ग पर चलने और सदमार्ग से भटकने की प्रक्रिया भी रात-दिन की प्रक्रिया की भांति ख़ुदा के विधान और आज्ञानुकूल चल रही है न कि स्वयं ही। बावजूद इस के कि प्रत्येक वस्तु उसकी आवाज़ सुनती है और उसकी पवित्रता का स्मरण करती है, परन्तु

इंजील कहती है कि धरती ख़ुदा की पवित्रता और श्रेष्ठता से खाली है? इसका कारण इस इन्जीली दुआ के अगले वाक्य में बतौर संकेत दिया गया है वह यह कि अभी उस में ख़ुदा का राज्य नहीं आया। इसलिए राज्य न होने के कारण, न कि किसी अन्य कारण से ख़ुदा की इच्छा धरती पर इस प्रकार कार्यान्वित नहीं हो सकी जैसे कि आकाश पर है। परन्तु क़ुर्आन की शिक्षा इसके बिल्कुल विपरीत है। वह स्पष्ट शब्दों में कहता है कि कोई चोर, ख़ूनी, बलात्कारी, नास्तिक, व्यभिचारी, उद्दण्ड और अपराधी धरती पर किसी भी प्रकार की बुराई नहीं कर सकता जब तक कि आकाश से उसको अधिकार न दिया जाए। अतः क्योंकर कहा जाए कि आकाशीय राज्य धरती पर नहीं। क्या कोई विरोधी धरती के आधिपत्य पर परमेश्वर के आदेशों के जारी होने में रुकावट डाल सकता है। **पवित्र है ख़ुदा,** ऐसा कदापि संभव नहीं बल्कि ख़ुदा ने स्वयं आकाश पर फरिश्तों के लिए पृथक नियम बनाया और धरती पर मनुष्यों के लिए **पृथक**। ख़ुदा ने अपने आकाशीय राज्य में फरिश्तों को कोई अधिकार नहीं दिया बल्कि उनके स्वभाव में ही आज्ञापालन का तत्व रख दिया कि वे विरोध कर ही नहीं सकते और भूल-चूक उनसे हो नहीं सकती, पर मानवीय स्वभाव को स्वीकार और अस्वीकार करने का अधिकार दिया गया है। चूंकि यह अधिकार ऊपर से प्रदान किया गया है इसलिए यह नहीं कह सकते कि व्यभिचारी मनुष्य के अस्तित्व से ख़ुदा का राज्य धरती से जाता रहा, अपितु प्रत्येक रंग में ख़ुदा का ही राज्य है। हां केवल विधान दो हैं। एक आकाशीय फरिश्तों के लिए नियति का विधान है कि बुराई कर ही नहीं सकते और एक धरती पर मनुष्यों के लिए नियति से संबंधित

है। वह यह कि आकाश से उनको बुराई करने का अधिकार दिया है परन्तु जब ख़ुदा से शक्ति की याचना करें अर्थात् अपने अपराधों और पापों पर क्षमायाचक हों तो रूहुलक़ुदुस की सहायता से उनकी कमज़ोरी दूर हो सकती है और वे पाप करने से बच सकते हैं जिस प्रकार ख़ुदा के नबी और रसूल बचते हैं। यदि ऐसे लोग हैं जो पाप कर चुके हैं तो पापों पर क्षमायाचना उनको यह लाभ पहुंचाती है कि पापों के परिणामों से अर्थात् ख़ुदा के प्रकोप से सुरक्षित रखे जाते हैं क्योंकि प्रकाश के आने से अंधकार बाक़ी नहीं रह सकता और अपराधी लोग जो क्षमा याचना नहीं करते अर्थात् ख़ुदा से शक्ति नहीं मांगते वे अपने अपराधों का दण्ड पाते रहते हैं। देखो आजकल प्लेग का प्रकोप भी धरती पर दण्ड स्वरूप आया है। ख़ुदा के समक्ष उद्दण्ड लोगों का उससे विनाश होता जाता है। फिर क्योंकर कहा जाए कि ख़ुदा का राज्य धरती पर नहीं। यह मत सोचो कि यदि धरती पर ख़ुदा का राज्य है तो लोग अपराध क्यों करते हैं? क्योंकि अपराधी भी ख़ुदा की नियति के अधीन है। यद्यपि वे लोग शरीअत के विधान से बाहर हो जाते हैं पर नियति के विधान से बाहर नहीं हो सकते। अतः यह कैसे कहा जा सकता है कि अपराधी लोग ख़ुदा के राज्य का जुआ अपनी गर्दन पर नहीं रखते। देखो इस देश ब्रिटिश इण्डिया में चोरियां भी होती हैं, खून भी होते हैं, बलात्कारी, धरोहर हड़पने वाले और रिश्वत लेने वाले इत्यादि हर प्रकार के अपराधी पाए जाते हैं, पर यह नहीं कहा जा सकता कि इस देश में अंग्रेज़ी सरकार का राज्य नहीं। राज्य तो है पर सरकार ने जान-बूझकर ऐसे कठोर कानून को उचित नहीं समझा जिसके भय से

लोगों का जीवन कठिन हो जाए अन्यथा यदि सरकार समस्त अपराधियों को एक कष्टदायक जेल में रखकर उनको अपराधों से रोकना चाहे तो बहुत सुगमता से वे रुक सकते हैं या यदि कानून में कठोर दण्डों का प्रावधान हो तो इन अपराधों की रोकथाम हो सकती है। अतः तुम समझ सकते हो कि जितना मदिरापान इस देश में होता है, वैश्याओं की संख्या बढ़ती जाती है, चोरी डकैती और खून की घटनाएँ होती हैं। यह इसलिए नहीं कि यहां अंग्रेज़ी सरकार का राज्य नहीं बल्कि सरकार के कानून की उदारता ने अपराधों को बढ़ावा दिया है न कि अंग्रेज़ी सरकार यहां से उठ गई है। बल्कि सरकार को अधिकार है कि कानून में कठोरता लाकर कठोर दंड निश्चित करके अपराधों से रोक दे। जब इन्सानी सरकार का यह हाल है जो ख़ुदाई सरकार की तुलना में कुछ भी नहीं तो खुदाई सरकार कितनी शक्तिशाली और अधिकारपूर्ण है। यदि ख़ुदा का कानून अभी कठोर हो जाए, और प्रत्येक व्यभिचार करने वाले पर बिजली पड़े और प्रत्येक चोर को यह बीमारी पैदा हो कि हाथ गल सड़ कर गिर जाएं हर उद्दण्ड, नास्तिक, अधर्मी प्लेग से मरे तो एक सप्ताह व्यतीत होने से पूर्व ही सम्पूर्ण संसार सदमार्ग और सौभाग्य की चादर पहन सकता है। अतः ख़ुदा का धरती पर राज्य तो है, लेकिन आकाशीय कानून की उदारता ने स्वतंत्रता दे रखी है कि अपराधी शीघ्र नहीं पकड़े जाते,हां दण्ड भी मिलते रहते हैं, भूकंप आते हैं, बिजलियाँ पड़ती हैं, आतिश फिशां भड़क कर हज़ारों जानों का नुक्सान करते जाते हैं, जहाज़ डूब जाते हैं, रेल गाड़ियों द्वारा सैकड़ों जानें जाती हैं, तूफ़ान आते हैं, मकान गिरते हैं, सांप काटते

हैं, दरिन्दे चीर-फाड़ डालते हैं, आपदाएं आती हैं और विनाश करने का न केवल एक बल्कि अनेक द्वार खुले हैं जो अपराधियों को दंड देने के लिए ख़ुदा के प्राकृतिक विधान ने निश्चित कर रखे हैं। फिर क्योंकर कहा जा सकता है कि धरती पर ख़ुदा का **राज्य नहीं।** सत्य यही है कि राज्य तो है। प्रत्येक अपराधी के हाथ में हथकड़ियाँ और पावों में बेड़ियाँ पड़ी हैं पर ख़ुदा की नीति ने अपने कानून को इतना उदार बना दिया है कि वह हथकड़ियां और बेड़ियाँ तुरन्त अपना प्रभाव नहीं दिखाती हैं। पर यदि मनुष्य फिर भी न बचे तो नर्क तक पहुंचाती हैं और ऐसे प्रकोप में डालती हैं जिससे एक अपराधी न जीवित रहे न मरे। अतः **कानून दो** हैं। **एक** वह कानून जो फरिश्तों के संबंध में है अर्थात् यह कि वे केवल आज्ञापालन के लिए पैदा किए गए हैं। उनका आज्ञापालन करना मात्र प्रकाशमय स्वभाव की एक विशेषता है। वे पाप नहीं कर सकते परन्तु शुभ कर्मों में उन्नति भी नहीं कर सकते। **(2) दूसरा** कानून वह है जो मनुष्यों से संबंधित है अर्थात यह कि मनुष्यों के स्वभाव में रखा गया है कि वे पाप कर सकते हैं पर शुभ कर्मों में उन्नति भी कर सकते हैं। ये दोनों स्वाभाविक कानून अपरिवर्तनीय हैं। जैसे कि एक फ़रिश्ता इन्सान नहीं बन सकता है ऐसा ही इन्सान भी फरिश्ता नहीं हो सकता है। ये दोनों कानून परिवर्तित नहीं हो सकते, अनादि और अटल हैं। इसलिए आकाश का कानून धरती पर नहीं आ सकता और न धरती का कानून फरिश्तों पर लागू हो सकता है। इन्सानी भूलें यदि **तौबा** के साथ समाप्त हों तो वह मनुष्य को फरिश्तों से भी श्रेष्ठ बना सकती हैं क्योंकि फरिश्तों में उन्नति का तत्व नहीं।

मनुष्य के पाप तौबा से क्षमा कर दिए जाते हैं। ख़ुदा की नीति ने कुछ लोगों में ग़लतियां करने का सिलसिला शेष रखा है ताकि वे पाप करके अपनी कमज़ोरी से अवगत हों और फिर अपने पापों का परित्याग करके क्षमा प्राप्ति करें। यही कानून है जो मनुष्य के लिए निश्चित किया गया है और मानवीय स्वभाव इसी को चाहता है। ग़लती करना और भूलना मनुष्य के स्वभाव की विशेषता है फ़रिश्ते की नहीं। फिर वह कानून जो फरिश्तों से संबंधित है मनुष्य पर किस प्रकार लागू हो सकता है। यह बात अनुचित है कि किसी कमज़ोरी को ख़ुदा से संबंधित किया जाए। केवल कानून के परिणाम हैं जो धरती पर जारी हो रहे हैं। प्रत्येक अनुचित बात के कहने से ख़ुदा की शरण में आता हूं, क्या ख़ुदा इतना निर्बल है जिसका राज्य और शक्ति और गरिमा केवल आकाश तक ही सीमित है या धरती का कोई और ख़ुदा है, जो धरती पर विरोधी अधिकार रखता है। ईसाइयों का इस बात पर बल देना अच्छा नहीं कि **केवल आकाश** में ही ख़ुदा का राज्य है जो अभी धरती पर नहीं आया। क्योंकि वे इस बात के समर्थक हैं कि आकाश कुछ भी नहीं। अब स्पष्ट है कि जब आकाश कुछ चीज़ नहीं जिस पर ख़ुदा का राज्य हो और धरती पर भी उसका राज्य आया नहीं तो परिणामतः ख़ुदा का राज्य किसी स्थान पर भी नहीं जबकि इसके बावजूद हम उसका धरती का राज्य स्वयं अपने नेत्रों से देख रहे हैं। उसके कानून के अनुसार हमारी आयु समाप्त हो जाती है और हमारी हालतें परिवर्तित होती रहती हैं, हम सैकड़ों प्रकार के आराम और कष्ट देखते हैं, सहस्त्रों लोग ख़ुदा की आज्ञा से प्राण त्यागते हैं, धरती ख़ुदा की आज्ञा से सहस्त्रों प्रकार

के फल-फूल उत्पन्न करती है, तो क्या यह सब कुछ ख़ुदा के राज्य के बिना हो रहा है। आकाशीय पिण्ड तो एक ही गति पर चले जाते हैं उनमें तबदीली और परिवर्तन, जिससे एक तबदील करने वाले और परिवर्तनकर्ता का ज्ञान होता हो कुछ आभास नहीं होता, परन्तु धरती सहस्त्रों परिवर्तनों और उतार-चढ़ाव का निशाना हो रही है, प्रतिदिन करोड़ों मनुष्य संसार से चल बसते हैं और करोड़ों पैदा होते हैं। हर पहलू और हर प्रकार से एक सर्वशक्तिसम्पन्न स्त्रष्टा के आधिपत्य का बोध हो रहा है, तो क्या अब तक धरती पर ख़ुदा का राज्य नहीं। इंजील ने इस संदर्भ में कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया कि धरती पर क्यों अब तक ख़ुदा का राज्य नहीं आया। हां मसीह का बाग़ में अपने सुरक्षित रहने हेतु सारी रात प्रार्थना करना और उसका स्वीकार भी हो जाना जैसा कि इबरानियान 5 आयत 7 में लिखा है। परन्तु फिर भी ख़ुदा का उसे छुड़ाने पर शक्ति न रखना ईसाइयों के विचार में एक प्रमाण हो सकता है कि उस युग में ख़ुदा का राज्य धरती पर नहीं था, परन्तु हमने इस से कहीं बड़ी परीक्षाएं देखी हैं और उनसे मुक्ति पाई है। हम ख़ुदा के राज्य को क्योंकर नकार सकते हैं। क्या वह खून का मुकद्दमा जो मेरे कत्ल करने हेतु मार्टिन क्लार्क की ओर से कप्तान डगलस की अदालत में प्रस्तुत किया गया था उस मुकद्दमे से कुछ हल्का था जो मात्र धार्मिक विवाद के कारण, न कि किसी खून के आरोप में यहूदियों की ओर से पैलातूस की अदालत में प्रस्तुत किया गया था। पर चूंकि ख़ुदा धरती पर भी अपना राज्य रखता है जैसा कि आकाश पर। इसलिए उसने इस मुकद्दमे की मुझे पूर्व सूचना दे दी कि यह परीक्षा की

घड़ी आने वाली है, और फिर सूचना दी कि मैं तुम को बरी करूंगा। यह सूचना सैकड़ों मनुष्यों को समय से पूर्व सुनाई गई और अंततः मुझे बरी किया गया। यह ख़ुदा का राज्य था जिसने इस मुकद्दमे से मुझे सुरक्षित रखा, जो मुसलमानों, हिन्दुओं और ईसाइयों के एकमत से मेरे विरुद्ध खड़ा किया गया था। न केवल एक बार बल्कि अनेकों बार मैंने ख़ुदा के राज्य को धरती पर देखा और मुझे ख़ुदा की इस आयत पर ईमान लाना पड़ा कि-

لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

"लहुमुल्कुस्मावाते वल अर्ज़"

(अलहदीद-6)

अर्थात् धरती पर भी उसका राज्य है और आकाश पर भी और फिर इस आयत पर भी ईमान लाना पड़ा-

اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَيْـــًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ

"इन्नमा अमरूहू इज़ा अरादा शैअन अन्य्यक़ूला लहू कुन फ़यकून" (यासीन-83)

अर्थात् सम्पूर्ण धरती और आकाश उसके आज्ञाकारी हैं। जब वह कोई कार्य करने की इच्छा करता है तो कहता है कि हो जा तो वह कार्य तुरन्त ही हो जाता है। फिर फ़रमाया-

وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰٓى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ

(वल्लाहो ग़ालिबुन अला अमरिही वलाकिन्ना अकसरुन्नासे ला यालमून" (यूसुफ़-22)

अर्थात् अपनी इच्छा पर पूर्ण अधिकार रखता है परन्तु अधिकाँश लोग ख़ुदा के प्रकोप से अनभिज्ञ हैं। इंजील की प्रार्थना वह है जो

मनुष्यों को ख़ुदा की अनुकम्पा से निराश करती है। उसके सम्पूर्ण जगत का पोषण करने, लाभ पहुंचाने और शुभ कर्मों का प्रतिफल और बुरे कर्मों पर दण्ड के नियम से ईसाइयों को स्वतंत्र करती है और उसको धरती पर सहायता देने योग्य नहीं समझती, जब तक उसका राज्य धरती पर न आए। इसकी तुलना में जो प्रार्थना ख़ुदा ने मुसलमानों को क़ुर्आन में सिखाई है वह इस तथ्य को प्रस्तुत करती है कि धरती पर ख़ुदा बेताजो तख़्त लोगों की भांति बेकार नहीं है बल्कि उसका सम्पूर्ण जगत को पोषण करने, मेहनत का फल देने, बिना मांगे देने और सम्पूर्ण अधिकार का सिलसिला धरती पर लागू है। वह अपने सच्चे उपासकों को सहायता देने की शक्ति रखता है और अपराधियों का अपने प्रकोप से विनाश कर सकता है। वह प्रार्थना यह है-

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِھۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۙ۬ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

(अलफातिहा-2 से 7)

"अल्हम्दु लिल्लाहे रब्बिल आलमीन अर्रहमानिर्राहीम मालिके यौमिद्दीन इय्याका नअबुदो व इय्याका नस्तईन इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीमा सिरातल्लाज़ीना अनअमता अलैहिम ग़ैरिल मग़ज़ूबे अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन"

अनुवाद-: "वह ख़ुदा ही है जो समस्त प्रशंसाओं के योग्य है अर्थात् उसके राज्य में कोई दोष नहीं और उसकी विशेषताओं के लिए ऐसी कोई प्रतीक्षाजनक स्थिति नहीं जो शेष हो जो आज नहीं बल्कि कल प्राप्त होगी। उसके राज्य की आवश्यक वस्तुओं

में से कोई वस्तु भी व्यर्थ नहीं। सम्पूर्ण जगत का पोषण कर रहा है। वह बिना कर्मों के कृपा करता और कर्मों के प्रतिफल स्वरूप भी कृपा करता है। प्रतिफल और दण्ड उचित समय पर देता है। हम उसी की उपासना करते हैं और उसी से हम सहायता चाहते हैं और प्रार्थना करते हैं कि हमें समस्त पुरस्कारों के मार्ग दिखा और प्रकोप और पथभ्रष्टता के मार्गों से दूर रख।"

यह प्रार्थना जो **सूरह फ़ातिहः** में है इंजील की दुआ के बिल्कुल विपरीत है, क्योंकि इंजील में धरती पर ख़ुदा के वर्तमान राज्य का इन्कार किया गया है। अतः इंजील के अनुसार न धरती पर ख़ुदा का सम्पूर्ण जगत को पोषण करने का नियम कुछ कार्य कर रहा है न कर्मों के प्रतिफल और न बिना कर्मों के कृपा, न प्रतिफल और दण्ड पर पूर्ण अधिकार का नियम ही कुछ कार्य कर रहे हैं, क्योंकि अभी धरती पर ख़ुदा का राज्य नहीं आया परन्तु सूरह फ़ातिहः से ज्ञात होता है कि धरती पर ख़ुदा का राज्य विद्यमान है। इसलिए सूरह फ़ातिहः में राज्य की समस्त अनिवार्य वस्तुओं का उल्लेख किया गया है। स्पष्ट है कि राजा में यह विशेषताएं अनिवार्य हैं कि वह लोगों के पोषण की शक्ति रखता है। अतः सूरह फ़ातिहः में रब्बिल आलमीन के शब्द से इस विशेषता को सिद्ध किया गया है। फिर राजा में दूसरी विशेषता यह होनी चाहिए कि उसकी प्रजा को जिन वस्तुओं की आवश्यकता है वह उनकी सेवा के प्रतिफल स्वरूप नहीं अपितु स्वयं कृपा-दृष्टि से प्रदान करे। अर्रहमान के शब्द से इसी विशेषता को प्रमाणित किया गया है। तीसरी विशेषता राजा में यह होनी चाहिए कि जिन कार्यों को प्रजा अपने प्रयासों से

पूर्ण करने की सामर्थ्य न रखे उनको पूर्ण करने हेतु उचित सहायता प्रदान करे। अर्रहीम के शब्द से इसी विशेषता को सिद्ध किया गया है। चौथी विशेषता राजा में यह होनी चाहिए कि प्रतिफल और दण्ड विधान पर पूर्ण शक्ति और अधिकार रखता हो ताकि सामाजिक नीतियों और उनसे संबंधित कार्यों में विघ्न न पड़े। मालिकेयौमिद्दीन के शब्द से इसी विशेषता को प्रदर्शित किया गया है। निष्कर्ष यह कि उल्लिखित सूरह फ़ातिहः ने समस्त आवश्यक बातें जिनका किसी भी राजा में होना अनिवार्य है प्रस्तुत की हैं, जिससे सिद्ध होता है कि धरती पर ख़ुदा का राज्य और उसके कार्य-कलाप विद्यमान हैं। उसका पोषण करने का नियम भी विद्यमान, बिना मांगे कृपा दृष्टि से प्रदान करने का नियम भी विद्यमान, कर्मों का प्रतिफल देने का नियम भी विद्यमान, सहायता करने का नियम भी जारी और दण्ड विधान भी विद्यमान। अतः जो कुछ किसी राज्य के लिए आवश्यक होता है धरती पर सब कुछ ख़ुदा का विद्यमान है और एक कण भी उसके अधिकार से बाहर नहीं। प्रत्येक फल और दण्ड का अधिकार उसके हाथ में है, प्रत्येक दया उसके हाथ में है। परन्तु इंजील यह प्रार्थना सिखलाती है कि अभी ख़ुदा का राज्य तुम में नहीं आया। उसके आने के लिए ख़ुदा से प्रार्थना किया करो ताकि वह आ जाए अर्थात् अभी तक उनका ख़ुदा धरती कर राजा और मालिक नहीं। इसलिए ऐसे ख़ुदा से क्या आशा रखी जा सकती है। सुनो और समझो कि परम ज्ञान यही है कि धरती का कण-कण भी ऐसा ही ख़ुदा के आधिपत्य में है जैसा कि आकाश के कण-कण पर उसका राज्य है, और जिस प्रकार आकाश पर उसकी गौरवशाली आभा है धरती पर भी एक गौरवशाली आभा है, बल्कि

आकाशीय आभा तो एक आस्था संबंधी मामला है। सामान्य लोग न तो आकाश पर गए न उसको देखा परन्तु ख़ुदा के राज्य की जो अद्भुत प्रकाशमय झलक धरती पर है वह तो स्पष्टतः हर मनुष्य को आँखों से दिखाई दे रही है।★ प्रत्येक मनुष्य कितना ही धनवान हो अपनी इच्छा के विरुद्ध मौत का प्याला पीता है। अतः इस सच्चे बादशाह के आदेश की धरती पर कैसी अद्भुत झलक है कि जब आदेश आ जाता है तो कोई अपनी मृत्यु एक सेकेण्ड भी नहीं रोक सकता। प्रत्येक भयानक और असाध्य बीमारी जब किसी को लग जाती है तो कोई हकीम या डाक्टर उसको दूर नहीं कर सकता। अतः ख़ूब सोचो कि ख़ुदा के राज्य की धरती पर यह कैसी अद्भुत झलक है कि उसके आदेश निरस्त नहीं हो सकते। फिर क्योंकर कहा जाए की धरती पर ख़ुदा का राज्य नहीं, बल्कि भविष्य के किसी युग में आएगा। देखो इसी युग में ख़ुदा के आकाशीय आदेश ने प्लेग के साथ धरती को हिलाकर रख दिया ताकि उसके मसीह मौऊद के लिए एक निशान हो। अतः कौन है जो उसकी इच्छा के बिना उसका निवारण कर सके। फिर क्योंकर कह सकते हैं कि अभी धरती पर उसकी राज्य नहीं। हाँ एक व्यभिचारी उसकी धरती पर कैदियों की भांति जीवन व्यतीत करता है और वह चाहता है कि वह कभी न मरे, परन्तु ख़ुदा का सच्चा राज्य उसका विनाश कर देता है और अन्ततः वह मौत के जाल में फंस जाता है फिर क्योंकर कह

★हाशिया :- فَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ फ़हमलहल इन्सान" (अहज़ाब-73) भी सिद्ध कर रही है कि ख़ुदा का वास्तविक आज्ञाकारी मनुष्य ही है जो अपनी शक्ति को प्रेम और इश्क तक पहुंचाता है और ख़ुदा की हुकूमत को सहस्त्रों आपत्तियों को सर लेते हुए धरती पर सिद्ध करता है। अतः यह आज्ञाकारिता जो दुखों से प्राप्त हुई है फ़रिश्ते उसको नहीं कर सकते।

सकते हैं कि अभी तक धरती पर ख़ुदा का राज्य नहीं। देखो धरती पर प्रतिदिन ख़ुदा की आज्ञा से एक पल में करोड़ों लोग मर जाते हैं और उसकी इच्छा से करोड़ों ही पैदा हो जाते हैं, करोड़ों उसकी इच्छा से निर्धन से धनवान और धनवान से निर्धन हो जाते हैं। फिर क्योंकर कह सकते हैं कि अभी तक धरती पर परमेश्वर का राज्य नहीं। आकाश पर तो केवल फ़रिश्ते रहते हैं परन्तु धरती पर मनुष्य भी हैं और फ़रिश्ते भी, जो ख़ुदा के कार्यकर्ता और उसके राज्य के सेवक हैं जो मनुष्यों के विभिन्न कार्यों के संरक्षक बनाए गए हैं। वे हर समय परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं और अपनी रिपोर्ट भेजते रहते हैं। अतः क्योंकर कह सकते हैं कि धरती पर उसका राज्य नहीं, बल्कि ख़ुदा तो अपने धरती के राज्य से ही सर्वाधिक पहचाना गया है क्योंकि प्रत्येक मनुष्य विचार करता है कि आकाश का रहस्य अभी अगोचर और अदृष्य है बल्कि वर्तमान युग में लगभग समस्त ईसाई और उनके दार्शनिक आकाश के अस्तित्व को ही स्वीकार नहीं करते, इंजील के अनुसार जिस पर ख़ुदा के राज्य का सारा दारोमदार रखा गया है। धरती तो वास्तव में हमारे पैरों तले एक पिण्ड है। नियति के सहस्त्रों मामले उस पर ऐसे प्रकट हो रहे हैं कि स्वयं समझ में आ जाता है कि यह समस्त परिवर्तन, उत्पन्न होना और मिटना किसी मालिक विशेष के आदेश से हो रहा है। फिर क्योंकर कहा जाए कि धरती पर अभी ख़ुदा का राज्य नहीं। बल्कि ऐसी शिक्षा ऐसे युग में जबकि ईसाइयों ने आकाशों के अस्तित्व का बड़े ज़ोर से इन्कार किया है नितान्त अनुचित है, क्योंकि इंजील की इस प्रार्थना में तो स्वीकार कर लिया गया है कि अभी धरती पर ख़ुदा का राज्य नहीं। दूसरी ओर समस्त ईसाई स्कालर्स ने सच्चे हृदय से यह स्वीकार कर

लिया है अर्थात् अपनी नवीनतम खोजों से यह निष्कर्ष निकाला है कि आकाश कोई वस्तु ही नहीं, अस्तित्वहीन है, कुछ भी नहीं। परिणामतः ख़ुदा का राज्य न धरती पर है न आकाश पर। आकाशों का तो ईसाइयों ने इन्कार कर दिया, धरती के राज्य से उनकी इंजील ने ख़ुदा को उत्तर दे दिया। अतः अब ईसाइयों के कथनानुसार ख़ुदा के पास न तो धरती का राज्य रहा और न आकाश का। पर हमारे सर्वशक्ति सम्पन्न ख़ुदा ने सूरह फ़ातिहः में न आकाश का नाम लिया न धरती का। हमें यह कहकर वास्तविकता से अवगत कराया कि वह रब्बुल आलमीन★है अर्थात् जहां तक आबादियाँ हैं और जहां तक किसी भी प्रकार की ख़ुदा की पैदा की हुई वस्तुओं का अस्तित्व है चाहे वे भौतिक रूप में हों या आध्यात्मिक, उन सबका उत्पन्न करने और पालन-पोषण करने वाला ख़ुदा है, जो हर समय उनका पालन-पोषण करता है, उनके यथायोग्य उनका प्रबंध कर रहा है। समस्त जगत पर वह हर समय हर पल उसके पालन-पोषण करने, और कर्मों के प्रतिफल की, बिन मांगे देने और प्रतिफल और दण्ड की प्रक्रिया जारी है। स्मरण रहे कि सूरह फ़ातिहः में मालिके यौमिद्दीन के वाक्य से केवल यह तात्पर्य नहीं है कि प्रलय के दिन प्रतिफल और दण्ड दिए जाएंगे, बल्कि क़ुर्आन शरीफ़ में बारम्बार और स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि क़यामत तो सम्पूर्ण अधिकारों पर आधिपत्य का समय है, पर एक प्रकार का आधिपत्य इसी संसार में जारी है जिसकी ओर आयत-

---

★**हाशिया :-** देखो यह शब्द रब्बुल आलमीन कैसा पूर्ण शब्द है। यदि सिद्ध हो जाए कि आकाशीय पिण्डों में जन जीवन है, तब भी वह जन जीवन इसी शब्द के अधीन आएंगे।

يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا

"यजअल्लकुम फ़ुरक़ानन" (अनफ़ाल-30)

संकेत करती है। अब यह बात भी सुनो कि इंजील की प्रार्थना में तो प्रतिदिन की रोटी मांगी गयी है जैसा कि कहा गया है हमारी "प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे।" परन्तु आश्चर्य है कि जिस का राज्य अभी तक धरती पर नहीं आया वह रोटी क्योंकर दे सकता है। अभी तक तो समस्त खेत और समस्त फल उसकी आज्ञा से नहीं बल्कि स्वयं पकते हैं, वर्षा स्वयं होती है, अतः उसको क्या अधिकार है कि किसी को रोटी दे। जब धरती पर राज्य आ जाएगा तब उससे रोटी मांगनी चाहिए। अभी तक तो वह धरती की किसी वस्तु पर भी अधिकार नहीं रखता। जब इस संपत्ति पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लेगा तब किसी को रोटी दे सकता है। इस समय उस से माँगना भी अनुचित है। तत्पश्चात यह कथन कि जिस प्रकार हम अपने ऋण लेने वालों का ऋण माफ़ कर देते हैं **तू अपना ऋण** हमें माफ़ कर। इस परिस्थिति में यह भी उचित नहीं है क्योंकि धरती का राज्य अभी उसको प्राप्त नहीं और अभी ईसाइयों ने उनके हाथ से लेकर कुछ खाया नहीं, तो फिर ऋण कौन सा हुआ। अतः ऐसे कंगाल ख़ुदा से माफ़ कराने की कुछ आवश्यकता नहीं और न उससे कुछ भय है, क्योंकि धरती पर अभी उसका राज्य नहीं और न उसके राज्य का दण्ड कोई रोब और दबदबा स्थापित कर सकता है। क्या मजाल कि वह किसी अपराधी को दण्ड दे सके, या मूसा के युग की अवज्ञाकारी कौम की भांति प्लेग से विनाश कर सके, या लूत की कौम की भांति उन पर पत्थरों की वर्षा कर सके, या भूकम्प, बिजली या किसी और प्रकोप

से अवज्ञाकारियों का सर्वनाश कर सके, क्योंकि अभी **ख़ुदा का राज्य धरती पर नहीं।** चूंकि ईसाइयों का ख़ुदा ऐसा ही निर्बल है जैसा कि उसका बेटा निर्बल था और ऐसा ही अधिकारहीन है जैसा उसका बेटा अधिकारहीन था तो फिर उस से ऐसी प्रार्थनाएं करना व्यर्थ है कि हमें **ऋण माफ़ कर।** उसने कब ऋण दिया था जो माफ़ करे क्योंकि अभी तक तो उसका धरती पर राज्य ही नहीं। जब उसका धरती पर राज्य ही नहीं तो धरती पर हरियाली का होना, पेड़-पौधों का उगना उसकी आज्ञा से नहीं, और जब धरती पर वह शासन करने वाला राजा नहीं और धरती का कोई भी आराम व सजावट उसकी राजाज्ञा से नहीं तो उसको दण्ड देने का कोई अधिकार नहीं। अतः इतना दयनीय ख़ुदा बनाना और धरती पर रहकर उससे किसी कार्यवाही की आशा रखना **मूर्खता है।** क्योंकि अभी धरती पर उसका राज्य नहीं। परन्तु सूरह फ़ातिहः की प्रार्थना हमें सिखाती है कि ख़ुदा को धरती पर हर समय वही **अधिकार** प्राप्त है जैसा कि जगत के अन्य भागों पर। और सूरह फ़ातिहः के प्रारम्भ में ख़ुदा की उन अधिकारों से परिपूर्ण विशेषताओं का उल्लेख है। ऐसा उल्लेख संसार में किसी अन्य पुस्तक ने इतने स्पष्ट रूप से नहीं किया। जैसा कि ख़ुदा का कथन है कि वह रहमान (कर्मों का प्रतिफल प्रदान करने वाला) रहीम (बिन मांगे देने वाला) मालिके यौमिद्दीन (प्रतिफल के दिन का स्वामी है) फिर उससे प्रार्थना करने की शिक्षा दी और जो प्रार्थना की गई है वह मसीह की दी हुई शिक्षा की भांति मात्र प्रतिदिन की रोटी का निवेदन नहीं, अपितु मानवीय स्वभाव को प्रारम्भ से जो शक्तियां प्रदान की गईं और उसको प्यास लगा दी गई है उस प्रार्थना की शिक्षा

दी गई है और वह यह है-

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

"इहदिनास्सिरातलमुस्तक़ीम सिरातल्लज़ीना अनअमता अलैहिम"

(अलफ़ातिह:-6,7)

अर्थात हे उन सम्पूर्ण विशेषताओं के स्वामी और दानी कि कण-कण तुझ से पोषण पाता है, तेरी रहमानियत और रहीमियत की विशेषता और कर्मों के प्रतिफल और अशुभ कर्मों पर दण्ड देने की शक्ति से लाभ उठाता है। तू हमें सदमार्गी पूर्वजों का उत्तराधिकारी बना और हर एक पुरस्कार जो उनको प्रदान किया हमें भी प्रदान कर, हमें सुरक्षित रख कि हम अवज्ञाकारी होकर प्रकोप के पात्र न बन जाएं, हमें सुरक्षित रख कि हम तेरी सहायता से वंचित रहकर पथ भ्रष्ट न हो जाएँ। आमीन

अब इस समस्त छान-बीन से इंजील की प्रार्थना और क़ुर्आन की प्रार्थना में अन्तर स्पष्ट हो गया कि इंजील तो ख़ुदा के राज्य आने का एक वायदा करती है परन्तु क़ुर्आन बताता है कि ख़ुदा का राज्य तुम्हारे अन्दर विद्यमान है, न केवल विद्यमान बल्कि क्रियात्मक रूप में तुम्हें वह लाभ भी पहुँचा रहा है। अत: इंजील में तो मात्र एक वायदा ही है परन्तु क़ुर्आन न मात्र वायदा करता है बल्कि उसके स्थायी राज्य और उसके उपकारों को दृष्टिगोचर कर रहा है। अब क़ुर्आन की श्रेष्ठता इस से स्पष्ट है कि वह उस ख़ुदा को प्रस्तुत करता है जो इसी सांसारिक जीवन में सत्य मार्ग पर चलने वालों का **मुक्तिदाता** और (सत्य मार्ग पर पर्दापण करने वालों का) विश्रामदाता है और कोई भी प्राणी उसके लाभ से वंचित नहीं बल्कि

प्रत्येक पर उसके पोषण करने, कर्मों का प्रतिफल देने और कर्मों के बिना प्रदान करने का विधान जारी है। परन्तु इंजील उस ख़ुदा को प्रस्तुत करती है जिसका राज्य अभी संसार में नहीं आया, मात्र आश्वासन है। अब विचार करो कि बुद्धि किस को अनुसरण योग्य समझती है। हाफ़िज़ शीराज़ी ने सत्य कहा है-

مرید پیر مغانم زمن مرنج اے شیخ
چرا کہ وعدہ تو کردی و اُو بجا آورد

"मुरीद पीर मग़ानम ज़मन मरन्जए शैख़
चिर कि वादा तू करदी व ऊबजा आवुर्द"

और इंजीलों में शालीन व्यक्तियों, ग़रीबों, दीनों की सराहना की गई है और उनकी सराहना जो सताए जाते हैं और मुकाबला नहीं करते परन्तु क़ुर्आन केवल यही नहीं कहता कि तुम हर समय दीन-हीन बने रहो और बुराई का मुकाबला न करो। बल्कि कहता है कि शालीनता, दीनता, निर्धनता और मुकाबले से स्वयं को अलग रखना अच्छा है परन्तु इनका इस्तेमाल यदि अनुपयुक्त अवसर पर किया जाए तो बुरा है। अतः तुम प्रत्येक पुण्य को अवसर और समयानुसार करो क्योंकि वह पुण्य पाप है, जो अवसर और समय के प्रतिकूल है। जैसा कि तुम देखते हो कि वर्षा कितनी अच्छी और आवश्यक वस्तु है, परन्तु यदि वह समय के अनुरूप न हो तो वही बर्बादी का कारण बन जाती है या तुम देखते हो कि एक ही प्रकार के ठंडे या गर्म भोजन के निरन्तर सेवन से तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं रह सकता, स्वास्थ्य तभी ठीक रहेगा जब कि तुम्हारे भोजन में अवसर और समय के अनुरूप परिवर्तन होता रहे। अतः कठोरता और विनम्रता, क्षमा करना और बदला लेना,

दुआ और श्राप तथा अन्य सदाचारों में जो तुम्हारे लिए समय की पुकार है, वे भी इसी परिवर्तन को चाहते हैं। श्रेष्ठतम, शालीन और विनम्र बनो परन्तु अनुपयुक्त स्थान और अनुपयुक्त अवसर पर नहीं। इसके साथ यह भी स्मरण रखो कि सच्ची और उच्चकोटि की नैतिकता जिसके साथ स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों की कोई विषाक्त मिलावट नहीं वह ऊपर से रूहुलक़ुदुस द्वारा आती है। अतः तुम इन श्रेष्ठतम सदाचारों को मात्र अपने प्रयासों से प्राप्त नहीं कर सकते जब तक तुमको ऊपर से वह सदाचार प्रदान न किए जाएँ। प्रत्येक जो आकाशीय प्रकाश से रूहुलक़ुदुस द्वारा सदाचार से हिस्सा नहीं पाता वह सदाचार के दावे में झूठा है और उसके पानी के नीचे बहुत सारा कीचड़ और गोबर है, जो तामसिक आवेगों के समय प्रकट होता है। अतः तुम ख़ुदा से हर समय शक्ति मांगो ताकि उस कीचड़ और गोबर से मुक्ति पाओ और रूहुलक़ुदुस तुम में वास्तविक पवित्रता और उदारता पैदा करे। स्मरण रखो कि सच्चा और पवित्र आचरण सत्यवादियों का चमत्कार है जिनमें कोई अन्य भागीदार नहीं। क्योंकि वे जो ख़ुदा में लीन नहीं होते वह ऊपर से शक्ति नहीं पाते। इसलिए उनके लिए संभव नहीं कि वे पवित्र आचरण प्राप्त कर सकें। अतः तुम अपने ख़ुदा से पवित्र संबंध स्थापित करो। हंसी-ठट्ठा, गाली-गलोज, मोह, झूठ, कुकर्म, बुरी दृष्टि, बुरे विचार, दुनिया की उपासना, अभिमान, अंहकार, स्वयं को श्रेष्ठ समझना, उद्दण्डता, निरुद्देश्य विवाद सब त्याग दो, फिर यह सब कुछ तुम्हें आकाश से प्राप्त होगा। जब वह उच्च और श्रेष्ठ शक्ति जो तुम्हें ऊपर की ओर खींच कर ले जाए तुम्हारे साथ न हो और रूहुलक़ुदुस जो जीवन प्रदान करता है तुम में प्रवेश न करे तब

तक तुम बहुत ही निर्बल और अन्धकार में पड़े हुए हो, बल्कि एक मुर्दा हो जिसमें जान नहीं। इस दशा में न तो तुम किसी मुसीबत का सामना कर सकते हो और न ही उन्नति और न ही धनधान्य से परिपूर्ण होने की दशा में अंहकार और अभिमान से सुरक्षित रह सकते हो। हर एक पहलू से तुम शैतान और स्वयं के दास हो। अतः तुम्हारी चिकित्सा तो वास्तव में एक ही है कि रूहुलक़ुदुस जो अल्लाह की विशेष मेहरबानी से उतरता है तुम्हारा मुख सच्चाई और पुण्यों की ओर फेर दे। तुम आकाशीय बेटे बनो न कि धरती के बेटे, प्रकाश के उत्तराधिकारी बनो न कि अन्धकार के प्रेमी ताकि तुम शैतान के मार्गों से अमन में आ जाओ क्योंकि शैतान का लक्ष्य हमेशा रात है दिन उसका लक्ष्य नहीं। वह पुराना चोर है जो हमेशा अन्धकार में क़दम रखता है। सूरह फ़ातिहः मात्र शिक्षा ही नहीं अपितु उसमें एक बड़ी भविष्यवाणी भी निहित है और वह यह है कि ख़ुदा ने अपनी चारों विशेषताओं पालन-पोषण करने, कर्मो के प्रतिफल देने, कर्मों के बिना देने, प्रतिफल और दण्ड विधान का उल्लेख करके अपनी सामान्य शक्ति को प्रकट करके उसके बाद वाली आयतों में यह दुआ सिखाई है कि हे ख़ुदा तू ऐसा कर कि हम अपने पूर्व सच्चे नबियों, पैग़म्बरों के उत्तराधिकारी ठहराए जाएँ, उनका मार्ग हम पर खोला जाए, उन पर होने वाली अनुकम्पाएं हमें प्रदान की जाएँ। हे ख़ुदा हमें उन लोगों में सम्मिलित होने से बचा जिन पर इसी संसार में तेरा प्रकोप आया अर्थात यहूदी जाति जो हज़रत ईसा के काल में थी जिसका विनाश प्लेग द्वारा हुआ, और हमें इससे सुरक्षित रख कि हम उस कौम में से हो जाएँ जिनके साथ तेरा पथ-प्रदर्शन नहीं हुआ और वह पथभ्रष्ट

हो गई अर्थात् ईसाई। इस प्रार्थना में यह भविष्यवाणी निहित है कि मुसलमानों में से कुछ ऐसे होंगे जो अपनी सच्चाई और पवित्रता के उपलक्ष्य पहले नबियों के उत्तराधिकारी हो जाएँगे और नुबुव्वत और पैग़म्बरियत की अनुकम्पाएं प्राप्त करेंगे और उनमें से कुछ ऐसे होंगे कि वे विशेषताओं में यहूदियों के समान हो जाएँगे जिन पर इस संसार में ही प्रकोप आएगा, और कुछ ऐसे होंगे कि वह ईसाइयत के रंग में रंगीन हो जाएँगे। क्योंकि ख़ुदा कि वाणी में निरन्तर चलने वाला यह नियम है, जब एक क़ौम को किसी एक कार्य से रोका जाता है तो नि:संदेह उन में से कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अन्तर्यामी ख़ुदा के ज्ञान में उस कार्य को करने वाले होते हैं और कुछ ऐसे होते हैं जो पुण्य और सौभाग्य से हिस्सा लेते हैं। संसार के प्रारम्भ से अन्त तक ख़ुदा ने जितनी भी पुस्तकें भेजीं उन समस्त पुस्तकों में परमेश्वर का यह पुराना नियम है कि जब वह एक प्रजाति के लिए किसी कार्य को निषेध कर देता है या एक कार्य की प्रेरणा देता है तो उसके ज्ञान में ये निहित होता है कि कुछ उस कार्य को करेंगे और कुछ नहीं करेंगे। अत: यह सूरह भविष्यवाणी कर रही है कि कोई व्यक्ति इस उम्मत में से पूर्ण रूप से नबियों के प्रारूप में प्रकट होगा ताकि वह भविष्यवाणी जो आयत-

صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

"सिरातल्लज़ीना अनअमता अलैहिम"

(अलफ़ातिह:-7)

से उदधृत होती है पूर्ण रूप से पूरी हो जाए और उनमें से कोई समूह यहूदियों के रंग में प्रकट होगा जिन को हज़रत ईसा ने

अभिशप्त किया था तथा वह ख़ुदा के प्रकोप में ग्रसित थे, ताकि वह भविष्यवाणी, जिसकी आयत "ग़ैरिलमग़ज़ूबे अलैहिम" से पुष्टि होती है प्रकट हो, और कोई समूह उन में से ईसाइयों के रंग में रंगीन होकर ईसाई बन जाएगा, जो अपने मदिरापान, अवैध को वैध करने और दुष्कर्मों के उपलक्ष्य ख़ुदा के पथ-प्रदर्शन से वंचित हो गए, ताकि वह भविष्यवाणी जो आयत "वलज़्ज़ालीन" से प्रकट हो रही है प्रकाश में आ जाए और चूंकि इस बात पर मुसलमानों की आस्था है कि अन्तिम युग में सहस्त्रों मुसलमान कहलाने वाले यहूदियों की भांति हो जाएँगे। क़ुर्आन में अनेकों स्थान पर यह भविष्यवाणी विद्यमान है और सैकड़ों मुसलमानों का ईसाई हो जाना या ईसाइयों की भांति बे लगाम और वे रोक -टोक जीवन व्यतीत करना स्वयं दृष्टिगोचर हो रहा है। बल्कि बहुत से मुसलमान कहलाने वाले लोग ऐसे हैं कि वे ईसाइयों के रहन-सहन के तरीक़े पसन्द करते हैं और मुसलमान कहलाकर नमाज़-रोज़ा और वैध और अवैध के आदेशों को अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देखते हैं। ये यहूदी और ईसाई विशेषताओं वाले दोनों समूह इस देश में फैले हुए दिखाई देते हैं। सूरह फ़ातिहः की ये भविष्यवाणियां तो तुम पूर्ण होती देख चुके हो और स्वयं अपनी आँखों से देख चुके हो कि कितने मुसलमान, विशेषताओं में यहूदियों के समान और कितने ईसाइयों के लिबास में हैं। अब तीसरी भविष्यवाणी स्वयं ही स्वीकार योग्य है जैसा कि मुसलमानों ने यहूदी ईसाई बनने से यहूदियों और ईसाइयों की बुराइयों से हिस्सा लिया। ऐसा ही उनका अधिकार था कि उनके कुछ लोग पवित्र लोगों की श्रेष्ठता और स्थान से भी हिस्सा लें जो बनी इस्राईल में गुज़रे हैं। ख़ुदा के सन्दर्भ

में यह बुरी धारणा है कि उसने मुसलमानों को यहूदी और ईसाइयों की बुराइयों का तो भागीदार ठहरा दिया है यहां तक कि उनका नाम यहूदी भी रख दिया परन्तु उनके नबियों और रसूलों के स्थान में से इस उम्मत को कोई हिस्सा न दिया। फिर यह उम्मत सर्वोत्तम कैसे हुई बल्कि सब से अधिक दुष्ट हुई कि उनको प्रत्येक आदर्श बुराई का मिला, पुण्य का नहीं। क्या यह आवश्यक नहीं कि इस उम्मत में भी कोई नबियों और रसूलों के रंग में दिखाई दे जो बनी इस्राईल के समस्त नबियों का उत्तराधिकारी और उनका क़ायम-मुक़ाम हो, क्योंकि ख़ुदा की अनुकम्पा से दूर है कि वह इस उम्मत में इस युग में सहस्त्रों यहूदियों की विशेषता वाले लोग तो पैदा करे और सहस्त्रों लोग ईसाई धर्म में दाख़िल करे परन्तु एक व्यक्ति भी ऐसा प्रकट न करे जो पूर्वकालिक नबियों का उत्तराधिकारी और उनके पुरस्कार पाने वाला हो, ताकि वह भविष्यवाणी जिसकी पुष्टि आयत-

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

"इहदिनस्सिरातलमुस्तक़ीम सिरातल्लज़ीना अनअमता अलैहिम"

(अलफ़ातिह:-6,7)

से होती है, वह भी इसी प्रकार पूरी हो जाए जिस प्रकार यहूदी और ईसाई होने की भविष्यवाणी पूरी हो गई और जिस परिस्थिति में इस उम्मत को सहस्त्रों बुरे नाम दिए गए हैं और क़ुर्आन शरीफ़ और अहादीस शरीफ़ (हदीसों) से सिद्ध होता है कि यहूदी हो जाना भी उनके भाग्य में है तो इस स्थिति में ख़ुदा की कृपा-दृष्टि को स्वयं चाहिए था कि जैसे पहले ईसाइयों से इन्होने बुरी चीज़ें लीं, उसी प्रकार वह अच्छी के भी उत्तराधिकारी बनें इसलिए ख़ुदा ने सूरह

फ़ातिह: में आयत-

"इहदिनस्सिरातलमुस्तक़ीम" में शुभ सन्देश दिया कि इस उम्मत के कुछ लोग पहले नबियों का पुरस्कार भी प्राप्त करेंगे, न यह कि मात्र यहूदी बनें या ईसाई बनें और इन क़ौमों की बुराई तो ग्रहण कर लें परन्तु अच्छी बातें ग्रहण न कर सकें। इसी की ओर सूरह मरयम में भी संकेत किया गया है। उम्मत के कुछ सदस्यों के विषय में उल्लेख है कि वे पवित्र मरयम से समानता रखेंगे जिसने स्वयं को पवित्र रखा, तब उसके पेट में ईसा की रूह फूँकी गई और उससे ईसा उत्पन्न हुआ। इस आयत में इस बात की ओर संकेत था कि इस उम्मत में एक मनुष्य ऐसा होगा कि प्रथम उसे मरयम का दर्जा प्राप्त होगा फिर उसमें ईसा की रूह फूँकी जाएगी तब मरयम से ईसा निकल आएगा। अर्थात् वह मर्यमी विशेषताओं से ईसवी विशेषताओं की ओर परिवर्तित हो जाएगा तथापि मरयम होने की विशेषता ने ईसा होने का बच्चा दिया और इस प्रकार वह मरयम का बेटा कहलाएगा। जैसा कि बराहीन अहमदिया में प्रथम मेरा नाम मरयम रखा गया और इसी ओर संकेत है पृष्ठ 241 की ईश्वाणी में। वह यह है कि اَنّٰی لَکِ هٰذَا अन्ना लके हाज़ा अर्थात् हे मरयम तूने यह नेमत कहां से प्राप्त की। इसी की ओर संकेत है पृष्ठ 226 में अर्थात् इस ईशवाणी में "हुज़्ज़ी इलैक बिजिज़इन्नख्लह" अर्थात् हे मरयम खजूर के तने को हिला और तत्पश्चात पृष्ठ 496 बराहीन अहमदिया में यह ईशवाणी-

يَامَرْيَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ۔ نَفَخْتُ فِيْكَ مِنْ لَّدُنِّيْ رُوْحَ الصِّدْقِ۔

"या मरयम उस्कुन अंता व ज़ोजुकल जन्नता नफ़ख़्तो फ़ीका

मिन्लदुन्नी रूहस्सिद्क़े”

अर्थात् हे मरयम तू अपने मित्रजनों सहित स्वर्ग में प्रवेश कर। मैंने तुझ में अपने पास से सत्य की रूह फूँक दी। ख़ुदा ने इसमें मेरा नाम सत्य की रूह रखा। यह इस आयत के समक्ष है कि-

فَنَفَخۡنَا فِيۡهِ مِنۡ رُّوۡحِنَا

“नफ़ख़ना फ़ीहे मिन रूहिना”

(अत्तहरीम-13)

अतः इस स्थान पर उपमा के तौर पर मरयम के पेट में ईसा की रूह जा पड़ी जिसका नाम सत्य की रूह है। फिर सब के अन्त में बराहीन अहमदिया पृष्ठ 556 में वह ईसा जो मरयम के पेट में था उसके उत्पन्न होने के सन्दर्भ में यह ईशवाणी हुई:-

يا عيسٰى انى متوفّيك ورافعك الىّ وجاعل الذين اتبعوك فوق الذين كفروا الٰى يوم القيامة

“या ईसा इन्नी मुतवफ़्फ़ीका व राफ़िओका इलय्या व जाइलुल्लज़ीनत्तबऊका फ़ौक़ल्लज़ीना कफ़रू इला यौमिल क़ियामह”

यहां मेरा नाम ईसा रखा गया है और इस ईशवाणी ने स्पष्ट कर दिया कि वह ईसा उत्पन्न हो गया जिसकी रूह का फूंकना पृष्ठ 496 में ज़ाहिर किया गया था। अतः इस आधार पर मैं ईसा इब्ने मरयम कहलाया। क्योंकि मेरी ईसवी हैसियत मर्यमी हैसियत से ख़ुदा की फूँक से उत्पन्न हुई। देखिए बराहीन अहमदिया पृष्ठ 496,556। इसी घटना का वर्णन सूरह मरयम में भविष्यवाणी के रूप में पूर्ण विवरण के साथ किया गया है, कि ईसा इब्ने मरयम इस उम्मत में इस प्रकार उत्पन्न होगा कि प्रथम इस उम्मत

का कोई व्यक्ति मरयम बनाया जाएगा।★ अतः वह मरयम रूपी पेट में एक समय तक पोषण पाकर ईसा की आध्यात्मिकता में जन्म लेगा और इस प्रकार वह ईसा इब्ने मरयम कहलाएगा। यह मुहम्मदी इब्ने मरयम के विषय में वह सूचना है कि जिसका वर्णन क़ुर्आन शरीफ़ की सूरह तहरीम में आज से तेरह सौ वर्ष पूर्व हुआ था, फिर बराहीन अहमदिया में सूरह तहरीम की इन आयतों की विस्तारपूर्वक व्याख्या स्वयं ख़ुदा ने कर दी है। क़ुर्आन शरीफ़ मौजूद है। एक ओर क़ुर्आन शरीफ़ को रखो और एक ओर बराहीन अहमदिया को। फिर न्याय, बुद्धि और संयम से विचार करो कि यह भविष्यवाणी जो सूरह तहरीम में थी कि इस उम्मत में भी कोई व्यक्ति मरयम कहलाएगा और फिर मरयम से ईसा बनाया जाएगा, तथापि उसमें से पैदा होगा, वह बराहीन अहमदिया की ईशवाणियों से किस रूप में पूर्ण हुई। क्या यह मनुष्य की शक्ति है, क्या यह मेरे अधिकार में था, क्या मैं उस समय उपस्थित था जब क़ुर्आन शरीफ़ उतर रहा था ताकि मैं निवेदन करता कि मुझे इब्ने मरयम बनाने के लिए कोई आयत उतारी जाए और इस आरोप से सुरक्षित किया जाए कि तुम्हें क्यों इब्ने मरयम कहा जाए। क्या आज से बीस-बाईस वर्ष पूर्व बल्कि इससे भी अधिक मेरी ओर से यह योजना हो सकती थी कि मैं अपनी ओर से ईशवाणी छोड़कर प्रथम अपना नाम मरयम रखता और फिर आगे चलकर यह झूठा इल्हाम बनाता कि पूर्व युग की मरयम की भांति मुझ में भी ईसा

★**हाशिया :-** तत्पश्चात उस मरयम में ईसा की रूह फूँक दी जाएगी।

की रूह फूँकी गई, फिर अन्ततः बराहीन अहमदिया पृष्ठ 556 में यह लिख देता कि अब मैं मरयम में से ईसा बन गया। हे प्रियजनो! विचार करो और ख़ुदा से डरो। यह मनुष्य का काम कदापि नहीं। यह सूक्ष्म और गहरा दर्शन मनुष्य की समझ और कल्पना से श्रेष्ठतर है। यदि बराहीन अहमदिया लिखने के समय जिस पर एक लम्बा समय गुज़र गया, मुझे इस योजना का विचार होता तो मैं उसी बराहीन अहमदिया में यह क्यों लिखता कि ईसा मसीह इब्ने मरयम आकाश से दोबारा आएगा। चूंकि ख़ुदा को ज्ञान था कि इस रहस्य का ज्ञान होने से प्रमाण कमज़ोर हो जाएगा। इसलिए यद्यपि कि उसने बराहीन अहमदिया के तृतीय भाग में मेरा नाम मरयम रखा फिर जैसा कि बराहीन अहमदिया से स्पष्ट है कि दो वर्ष तक मर्यमी विशेषता में पालन-पोषण हुआ और पर्दे में बढ़ता रहा। फिर जब उस पर दो वर्ष व्यतीत हो गए तो जैसा कि बराहीन अहमदिया के चौथे भाग के पृष्ठ 496 में लिखा है कि मरयम की भांति ईसा की रूह मुझ में फूँकी गई और उपमा स्वरूप मुझे गर्भवती ठहराया गया और आख़िर कई माह पश्चात जो दस माह से अधिक नहीं इस ख़ुदाई कलाम द्वारा जिसका उल्लेख सब के अन्त में बराहीन अहमदिया के चौथे भाग में पृष्ठ 556 पर है मुझे मरयम से ईसा बनाया गया। अतः इस प्रकार से मै इब्ने मरयम ठहरा और ख़ुदा ने बराहीन अहमदिया के समय में इस गुप्त रहस्य से मुझे अवगत नहीं कराया। हालाँकि ख़ुदा की सम्पूर्ण वह्यी (ईशवाणी) जो इस रहस्य को समेटे हुए थी मुझ पर उतरी और **बराहीन** अहमदिया में लिखी गयी, परन्तु मुझे उसके अर्थ और उसके क्रम

के बारे में अवगत नहीं कराया गया। इसीलिये मैंने मुसलमानों की परम्परागत आस्था का उल्लेख बराहीन अहमदिया में कर दिया ताकि वह मेरी सरलता और आडम्बरहीनता पर साक्षी हो। वह लिखना जो ईशवाणी पर आधारित न था मात्र रस्मी था विरोधियों के लिए प्रमाण योग्य नहीं था, क्योंकि मुझे स्वयं अन्तर्यामी होने का दावा नहीं, जब तक कि ख़ुदा मुझे स्वयं न समझा दे। अत: उस समय तक ख़ुदा की इच्छा यही थी कि बराहीन अहमदिया के कुछ इल्हामी रहस्य मेरी समझ में न आते, परन्तु जब समय आ गया तो वे रहस्य मुझे समझाए गए। तब मैंने देखा कि मेरे इस मसीह मौऊद होने के दावे में कोई नई बात नहीं। यह वही दावा है जिसका बराहीन अहमदिया में बारम्बार स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है। इस स्थान पर एक अन्य ईशवाणी पर भी प्रकाश डालता हूँ। मुझे स्मरण नहीं कि मैंने वह ईशवाणी अपनी किसी पत्रिका या विज्ञापन में प्रकाशित की है या नहीं। परन्तु यह स्मरण है कि मैंने सैकड़ों लोगों को सुनाया था और मेरी याददाश्त की ईशवाणियों में विद्यमान है और वह उस समय की है जबकि ख़ुदा ने प्रथम मुझे मरयम की उपाधि दी फिर रूह फूंकने की ईशवाणी की, तत्पश्चात यह ईशवाणी हुई थी-

فاجاء ها المخاض الی جذع النخلة قالت یالیتنی مت قبل هذا
و کنت نسیا منسیا

"फ़जाअहल मख़ाज़ो इला जिज़इन्नख़्लते क़ालत यालैतनी मित्तो क़ब्ला हाज़ा व कुन्तो नस्यम्मन्सिय्या"

अर्थात् फिर मरयम को, जिससे अभिप्राय मैं हूं प्रसव की पीड़ा

खजूर की ओर ले आई अर्थात् सामान्य प्रजाजन, मूर्ख और बुद्धिहीन ज्ञानियों से सामना हुआ, जिनके पास ईमान का फल न था, जिन्होंने काफ़िर कहकर अपमान किया, ग़ालियां दीं और एक तूफ़ान मचा दिया। तब मरयम ने कहा कि काश मैं इस से पूर्व मर जाती और मेरा नाम और पहचान भी शेष न रहती। यह उस शोर की ओर संकेत है जो प्रारम्भ में मौलवियों की ओर से सामूहिक तौर पर किया गया और वे इस दावे को सहन न कर सके। उन्होंने मुझे हर प्रयत्न और हर प्रयास से मिटाना चाहा। तब उस समय मूर्खों का शोर-शराबा देखकर जो बेचैनी और व्याकुलता मेरे हृदय को हुई, इस स्थान पर ख़ुदा ने उसी का नक्शा खींचा है। उससे संबंधित और भी ईशवाणियाँ थीं जैसा-

لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا ۔ مَا كَانَ أَبُوْكِ امْرَأَ سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ أُمُّكِ بَغِيًّا

"लकद जे'तो शयैन फ़रिय्या माकाना अबूकिमरअ सौइन वमा कानत उम्मुके बग़िय्या"

और फिर इसके साथ ही ईशवाणी बराहीन अहमदिया के पृष्ठ-521 में मौजूद है और वह यह है-

اليس الله بكاف عبده۔ ولنجعله اية للناس ورحمة منا وكان امرا مقضيا۔ قول الحق الذى فيه تمترون

"अलैसल्लाहु बिकाफ़िन अब्दुहु वलेनजअल्हो आयतन लिन्नासे व रहमतम्मिन्ना व काना अमरम्मक़ज़िय्या क़ौलल हक़्क़िलज़ी फ़ीहे तमतरून"

(देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 516 लाइन 12 व 13)

अनुवाद:- और लोगों ने कहा कि हे मरयम तूने यह कैसा

घृणित और अप्रशंसनीय कार्य किया जो सदमार्ग से परे है। तेरे★ मां-बाप तो ऐसे न थे। परन्तु ख़ुदा अपने भक्त को इन आरोपों से बरी करेगा और हम उसे लोगों के लिए एक निशान बना देंगे। यह बात प्रारम्भ से सुनिश्चित थी और ऐसा ही होना था। यह ईसा इब्ने मरयम हैं जिसमें लोग सन्देह कर रहे हैं। यही सत्य बात है। यह सब बराहीन अहमदिया की इबारत है और यह ईशवाणी वास्तव में क़ुर्आन की आयतें हैं, जो हज़रत ईसा और उसकी माता से संबंधित हैं। इन आयतों में जिस ईसा की पैदायश को लोगों ने अवैध ठहराया उसी के सन्दर्भ में ख़ुदा का कथन है कि हम उसे अपना निशान बनाएँगे और यही है ईसा जिसकी प्रतीक्षा की जा रही थी। इल्हामी इबारतों में मरयम और ईसा से अभिप्राय मैं ही हूं, मेरे ही विषय में कहा गया कि हम उसे निशान बना देंगे और यह भी कहा गया कि यह वही ईसा इब्ने मरयम है जो आने वाला था, जिसके विषय में लोग सन्देह करते हैं। पर सत्य यही है और आने वाला यही है और सन्देह, मात्र मूर्खता के कारण है जो ख़ुदा के रहस्यों को नहीं समझते। ये शक्लों के पुजारी हैं वास्तविकता पर उनकी दृष्टि नहीं।

यह भी स्मरण रहे कि सूरह फ़ातिह: के श्रेष्ठतम उद्देश्यों में से प्रार्थना है कि-

---

★**हाशिया :-** इस ईशवाणी पर मुझे याद आया कि बटाला में फज़लशाह नाम के एक सय्यद थे जो मेरे पिता जी से बहुत प्रेम करते थे और बहुत संबंध था। जब मेरे मसीह मौऊद के दावे की किसी ने उन्हें सूचना दी तो वह बहुत रोए और कहा कि इनके पिता श्री बहुत सज्जन, नेक, झूठे कर्मों से दूर, सीधे और स्वच्छ हृदय मुसलमान थे। ऐसा ही बहुत सारे लोगों ने कहा कि तुमने ऐसा दावा करके अपने कुटुम्ब को बट्टा लगा दिया।

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

"इहदिनस्सिरातलमुस्तक़ीम सिरातल्लज़ीना अनअमता अलैहिम"

(अलफ़ातिह:-6,7)

और जिस प्रकार इंजील की प्रार्थना में रोटी मांगी गई है। इस प्रार्थना में ख़ुदा से वे समस्त अनुकम्पाएं मांगी गई हैं जो पहले रसूलों और नबियों को प्रदान की गई थीं। यह मुकाबला भी देखने योग्य है और जिस प्रकार हज़रत मसीह की प्रार्थना स्वीकार होकर **ईसाइयों को रोटी का बहुत कुछ सामान** प्राप्त हो गया था इसी प्रकार यह क़ुर्आनी प्रार्थना **हज़रत मुहम्मद साहिब** के द्वारा स्वीकार होकर सज्जन और संयमी मुसलमान, विशेषकर उनके **पूर्ण आध्यात्मिक व्यक्ति बनी** इस्राईल के नबियों के **उत्तराधिकारी** ठहराए गए और मसीह मौऊद का इस उम्मत में पैदा होना भी इसी प्रार्थना की स्वीकारिता का **परिणाम** है। क्योंकि गुप्त तौर पर बहुत से सज्जन और संयमी मनुष्यों ने ठीक बनी इस्राईल के नबियों के समान हिस्सा लिया है। परन्तु इस उम्मत का मसीह मौऊद स्पष्टत: **ख़ुदा** की आज्ञा और आदेश से इस्राईली मसीह के मुकाबले पर खड़ा किया है, ताकि **मूसवी और मुहम्मदी धारा** की समानता समझ आ जाए। इसी उद्देश्य से **इस मसीह** की इब्ने मरयम से प्रत्येक पहलू से उपमा दी गई है। यहां तक कि इस इब्ने मरयम पर परीक्षाएं भी इस्राईली इब्ने मरयम की भांति आईं।

प्रथम जैसा कि ईसा इब्ने मरयम मात्र ख़ुदा की फूँक से पैदा किया गया इसी प्रकार यह मसीह भी सूरह तहरीम के वायदे से अनुकूल मात्र ख़ुदा की फूँक से मरयम के अन्दर से पैदा किया गया। और जैसा कि ईसा इब्ने मरयम की पैदायश पर बहुत शोर उठा और अंधे विरोधियों ने मरयम को कहा-

لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا

"लकद जे'त्ते शैयन फ़रिय्या"

इसी प्रकार यहां भी यही कहा गया और प्रलय जैसा शोर मचाया गया और जैसा कि ख़ुदा ने इस्राईली मरयम के प्रसव के समय विरोधियों को ईसा के सन्दर्भ में यह उत्तर दिया-

وَلِنَجْعَلَهُ آيَةً لِلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِنَّا وَكَانَ أَمْرًا مَقْضِيًّا

"वलेनजअलहू आयतन लिन्नासे व रहमतम्मिन्ना व काना अमरम्मक़्ज़िय्या" (मरयम-22)

यही उत्तर ख़ुदा ने मेरे सन्दर्भ में बराहीन अहमदिया में आध्यात्मिक प्रसव के समय जो उपमा स्वरूप था विरोधियों को दिया और कहा कि तुम अपने छल-कपट से उसे मिटा नहीं सकते मैं उसको लोगों के लिए रहमत का **निशान बनाऊंगा** और ऐसा होना प्रारम्भ से ही ख़ुदा की एक सुनिश्चित नियति थी। फिर जिस प्रकार यहूदियों के विद्वानों ने हज़रत ईसा पर काफ़िर होने का फ़तवा लगाया। एक उद्दण्ड यहूदी विद्वान ने उस फ़तवे की लिपि तैयार की और दूसरे विद्वानों ने फ़तवा दे दिया। यहां तक कि बैतुलमुक़द्दस के सैकड़ों विद्वान और ज्ञानी जो प्राय: अहलेहदीस थे, उन्होंने हज़रत ईसा पर कुफ्र की मुहरें लगा दीं।★ यही मेरे साथ किया गया और फिर जैसा कि उस कुफ्र के पश्चात

★**हाशिया :-** हज़रत ईसा के समय यद्यपि कि यहूदी कई समूह में थे परन्तु जो सत्य पर समझे जाते थे वे दो समूह हो गए थे। (1) एक वह जो तौरात के पाबंद थे, उसी से अपनी समस्याओं का समाधान खोजते थे। (2) दूसरा समूह अहलेहदीस था जो तौरात पर हदीसों को निर्णायक समझता था। ये अहले हदीस इस्राइली देश में पर्याप्त संख्या में फैल गए थे और ऐसी-ऐसी हदीसों का अनुसरण करते थे जो प्राय: तौरात की विरोधी होती थी। उनका तर्क यह था कि

जो हज़रत ईसा के संबंध में किया गया था, उनको बहुत सताया गया, बुरी से बुरी ग़ालियां दी गई थीं, बुराइयों और ग़ालियों पर आधारित पुस्तकें लिखी गयी थीं। यही सब कुछ यहां हुआ, तथापि अठारह सौ वर्षों के पश्चात वही ईसा फिर उत्पन्न हो गया और वही यहूदी फिर उत्पन्न हो गए। अफ़सोस, यही अर्थ तो इस भविष्यवाणी का था कि "ग़ैरिल मग़ज़ूबे अलैहिम" जो ख़ुदा ने पहले ही समझा दिया था परन्तु उन लोगों ने धैर्य से काम न लिया जब तक कि यहूदियों

शेष हाशिया - शरीअत (धर्म विधान) के मामले जैसे उपासना और उससे संबंधित कार्य कलाप एवं अधिकारों इत्यादि के नियम तौरात से नहीं मिलते, उन के लिए हदीसों पर आश्रित होना पड़ता है और हदीस की पुस्तक का नाम तालमूद था और उसमें प्रत्येक नबी के समय की हदीसें थीं। यह हदीसें एक दीर्घ अंतराल तक मौखिक रूप में रहीं। तत्पश्चात उन्हें लिखित रूप प्रदान किया गया इसलिए उनमें कुछ बनावटी हदीसें भी सम्मिलित हो गई थीं। इसका कारण यह था कि तत्कालीन यहूदी तेहत्तर समूहों में विभाजित हो गए थे। प्रत्येक समूह अपनी-अपनी हदीसें पृथक-पृथक रखता था। हदीसों के ज्ञानियों ने तौरात की ओर ध्यान देना छोड़ दिया था। प्राय: हदीसों पर अमल किया जाता था, तौरात को छोड़ दिया गया था। यदि तौरात का कोई आदेश हदीस के अनुकूल हुआ तो उसे स्वीकार कर लिया अन्यथा उसे रद्द कर दिया। अत: उस युग में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए तथा उनके संबोधित विशेष रूप में अहले हीस ही थे जो तौरात से अधिक हदीसों का सम्मान करते थे। और नबियों की पुस्तकों में पहले से यह सूचना दी गई थी कि जब महदी कई सम्प्रदायों में विभाजित जो जाएंगे तथा ख़ुदा की पुस्तक को छोड़ कर उसके विरुद्ध हदीसों का पालन करेंगे तब उनको एक हकम (आदेश देने वाले) तथा अदल (न्याय करने वाला) दिया जाएगा जो मसीह कहलाएगा और वह उसे स्वीकार करेंगे। अन्तत: भयानक दण्ड उनको मिलेगा और वह प्लेग की बीमारी थी। नऊज़ुबिल्लह!

की भांति मग़ज़ूबे अलैहिम न बन गए। इस समानता की एक **ईंट** तो ख़ुदा ने अपने हाथ से लगा दी कि मुझे ठीक चौदहवीं शताब्दी के प्रारंभ में **इस्लाम का मसीह** बनाकर भेजा जैसा कि मसीह इब्ने मरयम चौदहवीं शताब्दी के प्रारंभ में आया था और ख़ुदा मेरी सच्चाई के प्रमाण स्वरुप अपने बड़े शक्तिशाली निशान दिखा रहा है। आकाश के नीचे किसी विरोधी मुसलमान, यहूदी या ईसाई इत्यादि की सामर्थ्य नहीं कि उनका मुकाबला करे और ख़ुदा का मुकाबला एक असमर्थ और तुच्छ मनुष्य कर भी कैसे सकता है। यह तो बुनियादी ईंट है जो ख़ुदा की ओर से है।

प्रत्येक जो इस ईंट को तोड़ना चाहेगा वह तोड़ नहीं सकेगा लेकिन यह ईंट जब उस पर पड़ेगी तो उसके टुकड़े-टुकड़े कर देगी, क्योंकि ईंट भी ख़ुदा की और हाथ भी ख़ुदा का है। दूसरी ईंट मेरे विरोधियों ने तैयार करके मेरे मुक़ाबले पर रख दी। मेरे मुक़ाबले पर वह कार्य किए जो उस समय के यहूदियों ने किए थे। यहां तक कि मिटाने के लिए मेरे विरुद्ध क़त्ल का मुकद्दमा भी बनाया गया जिसके विषय में मेरे ख़ुदा ने मुझे पहले ही सूचित कर दिया था। वह मुकद्दमा जो मुझ पर बनाया गया वह हज़रत ईसा इब्ने मरयम के मुकद्दमों से अधिक संगीन था क्योंकि हज़रत ईसा पर जो मुकद्दमा किया गया उसकी बुनियाद मात्र एक धार्मिक विवाद था जो जज के निकट एक साधारण बात थी बल्कि न होने के बराबर थी। परन्तु मुझ पर जो मुकद्दमा बनाया गया वह क़त्ल का प्रयास करने का दावा था, और जैसा कि मसीह के मुक़द्दमों में यहूदी मौलवियों ने जाकर साक्ष्य दी थी। आवश्यक था कि इस मुक़द्दमें में भी कोई मौलवियों में से साक्ष्य देता। अत: इस कार्य

के लिए ख़ुदा ने मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी को चुना, वह एक बड़ा जुब्बा पहन कर साक्ष्य के लिए आया। जैसा कि सरदार काहिन मसीह को सलीब दिलाने के लिए न्यायालय में साक्ष्य देने हेतु आया था, यह भी उपस्थित हुए। अन्तर मात्र इतना था कि सरदार काहिन को पैलातूस की अदालत में कुर्सी मिली थी क्योंकि यहूदियों के सम्मानीय व्यक्तियों को रोम की सरकार में कुर्सी दी जाती थी और कुछ उनमें से आदरणीय न्यायधीश भी थे। इसलिए इस सरदार काहिन ने अदालत के नियमों के अनुसार कुर्सी प्राप्त की और मसीह इब्ने मरयम एक अपराधी की भांति अदालत के समक्ष खड़ा था। परन्तु मेरे मुक़द्दमों में इसके विपरीत हुआ। अर्थात् यह कि शत्रुओं की कामनाओं के विपरीत कैप्टन डगलस ने जो पैलातूस के स्थान पर अदालत की कुर्सी पर विराजमान था मुझे कुर्सी प्रस्तुत की। यह पैलातूस मसीह इब्ने मरयम के पैलातूस की अपेक्षा अधिक नैतिक सिद्ध हुआ क्योंकि अदालत के आदेश में वह साहस और हिम्मत से अदालत का पाबंद रहा और उच्चस्तरीय सिफ़ारिशों की उसने कुछ भी परवाह न की और जातिगत और धार्मिक विचार ने भी उसमें कुछ परिवर्तन पैदा न किया। उसने अदालत की गरिमा का पूर्ण ध्यान रखते हुए ऐसा उत्तम आदर्श प्रस्तुत किया कि यदि उसके अस्तित्व को कौम का गौरव और शासकों के लिए आदर्श समझा जाए तो अनुपयुक्त न होगा। अदालत एक कठिन मामला है। मनुष्य जब तक समस्त सम्बन्धों से पृथक होकर अदालत की कुर्सी पर न बैठे तब तक उस कर्तव्य का अच्छे रंग में निर्वाह नहीं कर सकता। परन्तु हम इस सच्ची साक्ष्य को प्रस्तुत करते हैं कि इस पैलातूस ने इस कर्तव्य को पूर्णरूपेण पूरा किया, यद्यपि कि पहला

पैलातूस जो रोम का था, इस कर्तव्य को भली भांति पूर्ण न कर सका और उसकी बुज़दिली ने मसीह को बड़ी-बड़ी मुसीबतों का लक्ष्य बनाया। यह अन्तर हमारी जमाअत में हमेशा स्मरण योग्य रहेगा जब तक कि संसार क़ायम है और ज्यों-ज्यों यह जमाअत लाखों, करोड़ों की संख्या तक पहुंचेगी, वैसे-वैसे ही इस स्वच्छ हृदय शासक को प्रशंसा के साथ याद किया जाएगा। यह उसका सौभाग्य है कि ख़ुदा ने इस कार्य हेतु उसी को चुना। एक शासक के लिए यह अत्यधिक परीक्षा का अवसर है कि उसके समक्ष दो पार्टियां आएं कि एक उनमें से उसी के धर्म का प्रचारक है और दूसरा पक्ष वह है जो उसके धर्म का कट्टर विरोधी है। परन्तु इस बहादुर पैलातूस ने इस परीक्षा को बड़े साहस से सहन किया। उसको उन पुस्तकों के स्थान दिखाए गए जिन में मूर्खता से ईसाई धर्म के विषय में कठोर शब्द समझे गए थे और एक विरोधी अभियान चलाया गया था। परन्तु उसके चेहरे पर परिवर्तन के कोई लक्षण पैदा न हुए क्योंकि वह अपनी प्रकाशमय अन्तरात्मा के कारण वास्तविकता तक पहुँच गया, और चूंकि उसने मुक़द्दमों की वास्तविकता का सच्चे हृदय से विश्लेषण किया था इसलिए ख़ुदा ने उसकी सहायता की, उसके हृदय पर सच्चाई का इल्हाम किया और उस पर वास्तविकता स्पष्ट की गई, वह उससे अति प्रसन्न हुआ कि न्याय का मार्ग उसे प्रतीत हो गया। उसने मात्र न्याय को ध्यान में रखते हुए मुझे विपक्ष के सम्मुख कुर्सी प्रस्तुत की और जब मौलवी मुहम्मद हुसैन ने जो सरदार काहिन की भांति विरोधी साक्ष्य देने आया था मुझे कुर्सी पर बैठा हुआ पाया और मेरे बारे में जिस अपमान को देखने की उसकी मनोकामना थी उस अपमान को उसने न देखा, तब

समानता को उपयुक्त समझ कर वह भी उस पैलातूस से कुर्सी का इच्छुक हुआ। परन्तु उस पैलातूस ने उसे फटकारा और डांटकर कहा कि तुझे और तेरे बाप को कभी कुर्सी नहीं मिली। हमारे कार्यालय में तुम्हारी कुर्सी के लिए कोई आदेश नहीं। अब यह अन्तर भी विचार योग्य है कि पहले पैलातूस ने यहूदियों से भयभीत होकर उनके कुछ आदरणीय साक्षियों को कुर्सी दे दी और हज़रत मसीह को जो अपराधी बतौर प्रस्तुत किए गए थे खड़ा रखा। हालांकि वह सच्चे हृदय से मसीह का शुभचिन्तक था अपितु अनुयायियों की भांति था और उसकी पत्नी मसीह की विशेष अनुयायी थी जो ख़ुदा की परम्भक्तिनी कहलाती है। परन्तु भय ने पैलातूस से यहां तक कृत्य कराया कि न्यायोचित न होते हुए भी निरपराध और निर्दोष मसीह को यहूदियों के हवाले कर दिया। मेरी भांति उन पर कोई क़त्ल का आरोप न था, केवल साधारण सा धार्मिक विवाद था। परन्तु वह रोमी पैलातूस दृढ़ हृदय वाला साहसी व्यक्ति न था। वह इस बात को सुनकर भयभीत हो गया कि क़ैसर (रोम का राजा) के पास उसकी शिकायत की जाएगी। एक और अन्य समानता तत्कालीन पैलातूस और इस पैलातूस में स्मरण रखने योग्य है कि तत्कालीन पैलातूस ने उस समय जब मसीह इब्ने मरयम न्यायालय में प्रस्तुत किया गया, यहूदियों को कहा था कि मैं इस व्यक्ति में कोई पाप नहीं देखता। ऐसा ही जब यह आख़िरी मसीह इस आख़िरी पैलातूस के सामने प्रस्तुत हुआ और इस मसीह ने कहा कि मुझे उत्तर देने के लिए कुछ दिन की मुहलत दी जानी चाहिए कि मुझ पर क़त्ल का आरोप लगाया जाता है। तब इस आख़िरी पैलातूस ने कहा कि मैं आप पर कोई आरोप नहीं लगाता। दोनों पैलातूस के यह दोनों कथन परस्पर बिल्कुल समान हैं। यदि अन्तर है तो केवल इतना कि

पहला पैलातूस अपने इस वचन पर क़ायम न रह सका और जब उसे कहा गया कि कैसर के पास तेरी शिकायत करेंगे तो वह भयभीत हो गया और हज़रत मसीह को उसने जानबूझ कर निर्दयी यहूदियों के हवाले कर दिया यद्यपि कि वह और उसकी पत्नी उनको हवाले करके शोकाकुल थे, क्योंकि वे दोनों मसीह के बहुत बड़े अनुयायी थे। परन्तु यहूदियों का अत्यधिक शोर-शराबा देख कर उस पर कायरता छा गयी। हाँ गुप्त रंग में उसने बहुत प्रयास किया कि मसीह की जान को सलीब से बचा लिया जाए। इस प्रयास में वह सफल भी हो गया परन्तु इसके पश्चात कि मसीह को सलीब पर चढ़ा दिया गया, और अत्यधिक पीड़ा से वे इतना बेहोश हो गया जैसे वह मर ही गया हो। बहरहाल रोमी पैलातूस के प्रयास से मसीह इब्ने मरयम की जान बच गई और जान बचने के लिए पहले से ही मसीह की प्रार्थना स्वीकार हो चुकी थी। देखिए इबरानिया अध्याय 5 आयत 7★ तत्पश्चात मसीह उस भूभाग से गोपनीय तौर पर भागकर कश्मीर की ओर आ गया और वहीं उनकी मृत्यु हुई और तुम सुन

★**हाशिया :-** मसीह ने भविष्यवाणी के तौर पर स्वयं भी कहा कि यूनुस के निशान के अतिरिक्त और कोई निशान नहीं दिखलाया जाएगा। अतः मसीह ने अपने कथन में इस ओर संकेत दिया कि जिस प्रकार यूनुस ने जीवित ही मछली के पेट में प्रवेश किया और जीवित ही निकला। इसी प्रकार मैं भी जीवित ही क़ब्र में प्रवेश करूंगा और जीवित ही निकलूंगा अतः यह निशान इसके अतिरिक्त और कैसे पूरा हो सकता था कि मसीह जीवित ही सलीब से उतारा जाता और जीवित ही क़ब्र में प्रवेश करता। यह तो हज़रत मसीह ने कहा कि कोई और निशान नहीं दिखाया जाएगा। इस वाक्य में वास्तव में मसीह उन लोगों का रद्द करता है जो कहते हैं कि मसीह ने यह निशान भी दिखलाया कि आकाश पर चढ़ गया। इसी से।

चुके हो कि श्रीनगर के मुहल्ला ख़ानयार में उनकी क़ब्र है। यह सब पैलातूस के प्रयास का परिणाम था। परन्तु उस पहले पैलातूस की समस्त कार्यवाही में कायरता का रंग झलकता था। यदि वह अपने इस वचन का निर्वाह करके कि मैं इस व्यक्ति का कोई पाप नहीं देखता मसीह को छोड़ देता तो उसके लिए ऐसा करना कुछ कठिन न था तथा वह छोड़ देने का अधिकार रखता था। पर वह क़ैसर के दरबार में यहूदियों के शोर की धमकी से भयभीत हो गया। परन्तु यह आख़िरी पैलातूस पादरियों के विशाल समूह से भयभीत न हुआ। हालांकि इस स्थान पर भी क़ैसरा का राज्य था। पर यह क़ैसरा उस क़ैसर से कहीं अधिक श्रेष्ठ थी। अतः किसी के लिए संभव न था कि न्यायधीश पर उचित न्याय करने के लिए कैसरा का भय दिखा कर दबाव डाल सकता। अतः पहले मसीह की अपेक्षा आख़िरी मसीह के विरुद्ध बहुत शोर मचाया और योजनाबद्ध तरीके से मेरे विरोधी और समस्त क़ौमों के कर्ताधर्ता एकत्र हो गए थे परन्तु आख़िरी पैलातूस ने सत्य से प्रेम किया और अपने उस वचन को पूरा कर दिखाया जो उसने मुझे संबोधित करते हुए कहा था कि "मैं तुम पर क़त्ल का आरोप नहीं लगाता"। अतः उसने मुझे बड़ी सफ़ाई और साहस से बरी किया और पहले पैलातूस ने मसीह को बचाने के लिए हीलों बहानों से काम लिया, पर इस पैलातूस ने अदालत के नियमों और परम्परा का इस प्रकार पालन किया कि जिसमें नाम मात्र भी कायरता न थी। जिस दिन मैं बरी हुआ उस दिन उस अदालत में मुक्ति सेना का एक चोर भी प्रस्तुत हुआ। ऐसी घटना इसलिए हुई कि पहले मसीह के साथ भी एक चोर था। परन्तु इस आख़िरी मसीह के साथ

जो चोर पकड़ा गया उस पहले चोर की तरह जो पहले मसीह के साथ पकड़ा गया, सलीब पर नहीं चढ़ाया और न उसकी हड्डियां तोड़ी गईं, अपितु केवल तीन मास की कैद हुई।

अब हम पुनः अपने कथन की ओर आते हुए लिखते हैं कि सूरह फ़ातिहः में इतनी वास्तविकताएं, सच्चाइयां, तर्क और ख़ुदा को प्राप्त करने के सिद्धांत व नियम एकत्र हैं कि यदि उन सबको लिखित रूप दिया जाए तो वे बातें एक बड़े ग्रन्थ में भी नहीं समा सकतीं। इसी एक दर्शनयुक्त प्रार्थना को देखिए जो इस सूरह में सिखाई गई है अर्थात् "इहदिनास्सिरातल मुस्तक़ीम" यह प्रार्थना अपने अन्दर एक ऐसा पूर्ण अर्थ रखती है जो कि धार्मिक और सांसारिक उद्देश्यों की एकमात्र कुंजी है। हम किसी भी वस्तु की वास्तविकता का ज्ञान अर्जित नहीं कर सकते, न उसके लाभों से लाभान्वित हो सकते हैं जब तक कि हमें उसके प्राप्त करने हेतु एक सीधा मार्ग न मिले। संसार में जितने भी कठिन और पेचीदा मामले हैं चाहे वे राजपाट और मंत्रियों के उत्तरदायित्वों से संबंधित हों चाहे सैनिक या युद्ध से संबंधित हों, चाहे स्वाभाविक और खगोल शास्त्र के बारीक मामले हों अथवा चिकित्सा के संबंध में बीमारी की पहचान और उसके निदान से संबंधित, चाहे व्यापार और कृषि से संबंधित हों। इन समस्त मामलों में सफलता प्राप्त होना मुश्किल और असंभव है जब तक कि उनके विषय में एक सीधा मार्ग न मिले कि उस कार्य को किस प्रकार प्रारम्भ करना चाहिए। प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति कठिनाइयों के समय अपना यही कर्तव्य समझता है कि इस आने वाली कठिनाई के सन्दर्भ में दिन-रात सोचता रहे ताकि उसके समाधान हेतु कोई मार्ग निकल आए। प्रत्येक

कारीगरी, प्रत्येक आविष्कार और प्रत्येक उलझे और पेचीदा कार्य का चलाना इस बात को चाहता है कि उस कार्य हेतु कोई मार्ग निकल आए। अतः संसार और धर्म के उद्देश्यों के लिए वास्तविक प्रार्थना, मार्ग प्रशस्त होने की प्रार्थना है। जब किसी कार्य हेतु सीधा मार्ग हाथ लग जाए तो निःसंदेह वह कार्य भी ख़ुदा की कृपा से हो जाता है। ख़ुदा की नियति और नियम ने प्रत्येक लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक मार्ग रखा है। उदाहरणार्थ किसी बीमारी का उचित प्रकार इलाज नहीं हो सकता जब तक उसकी बीमारी की सही पहचान और उसके इलाज हेतु एक ऐसा मार्ग न निकल आए कि हृदय से स्वयं आवाज़ आए कि इस मार्ग में सफलता प्राप्त होगी, बल्कि संसार में कोई प्रबंध हो ही नहीं सकता जब तक उस प्रबंध के लिए एक मार्ग उत्पन्न न हो। अतः मार्ग की जिज्ञासा मार्ग जिज्ञासुओं का कर्तव्य हुआ। जैसा कि सांसारिक सफलता की सही धारा को हाथ में लेने के लिए प्रथम एक मार्ग की आवश्यकता है जिस पर क़दम रखा जाए। इसी प्रकार ख़ुदा का मित्र, उसका प्रेम-पात्र, कृपा भाजन बनने हेतु हमेशा से एक मार्ग की आवश्यकता रही है। इसी लिए इसके बाद वाली दूसरी सूरह में जो सूरह बक़रह है, के आरम्भ में ही वर्णन किया गया है-

"हुदल्लिलमुत्तक़ीन" अर्थात् पुरस्कार पाने का यही मार्ग है जिसका हम वर्णन करते हैं।★ अतः यह प्रार्थना "इहदिनस्सिरातल मुस्तकीम" एक पूर्ण प्रार्थना है जो मनुष्य का ध्यान इस ओर ले जाती है कि सांसारिक और धार्मिक कठिनाइयों के समय प्रथम जिस वस्तु की खोज

★**हाशिया :-** सूरह फ़ातिहः में सीधे मार्ग पर चलने की प्रार्थना की गई और दूसरी सूरह में वही प्रार्थना स्वीकार होकर सदमार्ग का पथ-प्रदर्शन किया गया है।

मनुष्य का कर्तव्य है वह यही है कि उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वह सदमार्ग की खोज करे। अर्थात् कोई ऐसा स्वच्छ और सीधा मार्ग तलाश करे जिससे सुगमता पूर्वक उस लक्ष्य तक पहुँच सके, हृदय विश्वास से ओत-प्रोत हो जाए और संदेहों से मुक्ति प्राप्त हो। लेकिन इंजील के पथ-प्रदर्शन के अनुसार **रोटी मांगने वाला,** ख़ुदा प्राप्ति वाले मार्ग को नहीं अपनाएगा। उसका लक्ष्य तो रोटी है। जब रोटी मिल गई तो फिर उसको परमेश्वर से क्या लेना देना। यही कारण है कि ईसाई सदमार्ग से भटक गए और एक अत्यन्त शर्मनाक आस्था जो मनुष्य को परमेश्वर बनाना है उनके गले पड़ गई। हम नहीं समझ सकते कि मसीह इब्ने मरयम में अन्य लोगों की अपेक्षा क्या अधिकता थी जिससे उसको परमेश्वर बनाने का विचार आया। चमत्कारों में पहले बहुत सारे नबी इससे बढ़ कर थे। जैसा कि मूसा अलैहिस्सलाम और एलिया नबी। और मुझे सौगन्ध उस अल्लाह की जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं कि यदि मसीह इब्ने मरयम मेरे युग में होता तो वह कार्य जो मैं कर सकता हूं वह कदापि न कर सकता और वे निशान जो मुझ से प्रकट हो रहे हैं वह कदापि न दिखला सकता★ और ख़ुदा की कृपा

★**हाशिया :-** इसके प्रमाण हेतु शीघ्र ही पुस्तक "नुज़ूलुल मसीह" को देखोगे जो प्रकाशित हो रही है और दस हिस्से छप चुके हैं। शीघ्र ही यह पुस्तक प्रकाशित होने वाली है। यह पुस्तक पीर मेहरअली गोलड़ी की पुस्तक "तम्बूर चिशितियाई" के उत्तर में लिखी गई है, जिसमें सिद्ध किया गया है कि पीर साहब ने मुहम्मद हसन मुरदा के लेख को चुराकर ऐसी शर्मनाक ग़लतियां की हैं कि अब सूचना पाने से उन पर जीवन कठिन हो जाएगा वह अभागा तो हमारी "एजाज़ुल्मसीह" की भविष्यवाणी के अनुसार मर गया। यह दूसरा अभागा व्यर्थ ही पुस्तक बनाकर भविष्यवाणी-"इन्नीमुहीनुन मन अरादा इहानतका" का निशान बन गया। हे नेत्र वालो नसीहत हासिल करो। इसी से।

अपने से अधिक मुझ पर पाता। जबकि मैं ऐसा हूं तो विचार करो कि **उस पवित्र रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का स्थान क्या है जिसकी गुलामी की ओर में मंसूब किया गया** "ज़ालिका फ़ज़्लुल्लाहे यूतीहे मन्य्याशाओ (माइदह-55)इस स्थान पर किसी प्रकार की ईर्ष्या और द्वेष कुछ नहीं कर सकते। ख़ुदा जो चाहे करे। जो उसकी इच्छा के विपरीत करता है वह न केवल अपने उद्देश्य में असफल रहता है अपितु मर कर नर्क सिधार जाता है। तबाह हो गए वे जिन्होंने एक असमर्थ मनुष्य को ख़ुदा बनाया। तबाह हो गए वे जिन्होंने ख़ुदा की ओर से भेजे गए एक रसूल को स्वीकार न किया। बधाई हो उसको जिसने मुझे पहचाना। मैं ख़ुदा के सब मार्गों में से अन्तिम मार्ग हूं और उसके समस्त दैवी प्रकाश में से अन्तिम प्रकाश हूं। दुर्भाग्यशाली है वह जो मुझे छोड़ता है क्योंकि मेरे बिना सब अन्धकार है।

दूसरा साधन पथ-प्रदर्शन का जो मुसलमानों को प्रदान किया गया **सुन्नत** है अर्थात् आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वे कार्य जो आपने क़ुर्आनी आदेशों की व्याख्या स्वरूप करके दिखाए। उदाहरणार्थ- क़ुर्आन शरीफ़ में साधारण दृष्टि से देखने से **पांच समय** की नमाज़ों (उपासना) की रकआत का ज्ञान नहीं होता कि प्रातः कितनी और अन्य समयों में कितनी हैं परन्तु सुन्नत ने सब पर प्रकाश डाल दिया है। यह धोखा न लगे कि सुन्नत और हदीस एक ही वस्तु है। क्योंकि हदीस तो सौ डेढ़ सौ वर्ष पश्चात् एकत्र की गयी। परन्तु सुन्नत का अस्तित्व क़ुर्आन शरीफ़ के साथ ही था। मुसलमानों पर क़ुर्आन शरीफ़ के पश्चात् सबसे बड़ा उपकार

सुन्नत का है। ख़ुदा और रसूल के दायित्व का कर्तव्य केवल दो मामले थे। वह यह कि ख़ुदा ने क़ुर्आन उतार कर अपनी वाणी द्वारा अपनी प्रजा को अपनी इच्छा से अवगत कराया। यह तो ख़ुदा के कानून का कर्तव्य था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कर्तव्य यह था कि ख़ुदा की वाणी को क्रियान्वित करके लोगों को भली भांति समझा दें। अतः रसूलुल्लाहसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वे कथनी बातें करनी के रंग में दिखला दीं और अपनी सुन्नत अर्थात् अमली कार्यवाही से कठिन और मुश्किल मामलों को हल कर दिया। यह कहना व्यर्थ है कि यह हल करना हदीस पर आश्रित था, क्योंकि हदीस के अस्तित्व से पूर्व इस्लाम धरती पर स्थापित हो चुका था।★क्या जब तक हदीसें एकत्र नहीं हुई थीं लोग नमाज़ न पढ़ते थे या ज़कात न देते थे या हज न करते थे या वैध या अवैध से परिचित न थे। हाँ तीसरा साधन **पथ-प्रदर्शन का हदीस है।** क्योंकि इस्लाम के बहुत से ऐतिहासिक, नैतिक और धार्मिक नियमों से संबंधित मामलों को हदीसें स्पष्ट करती हैं और हदीस का बड़ा लाभ यह है कि वह क़ुर्आन और सुन्नत की सेवक है। जिन लोगों को क़ुर्आन का सही ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ वे इस अवसर पर हदीस को क़ुर्आन पर निर्णायक कहते हैं जैसा कि यहूदियों ने अपनी हदीसों के विषय में कहा। पर हम हदीस को क़ुर्आन और सुन्नत

★**हाशिया :-** अहलेहदीस रसूल का कार्य और कथन दोनों का नाम हदीस ही रखते हैं। हमें उनके नामकरण से कोई मतलब नहीं। वास्तव में सुन्नत अलग है जिसके प्रचार का कार्य हज़रत मुहम्मद साहिब ने स्वयं किया और हदीस अलग है जो बाद में एकत्र हुई। इसी से।

का सेवक समझते हैं। स्पष्ट है कि स्वामी की शान सेवकों के होने से बढ़ती है। क़ुर्आन ख़ुदा की वाणी है और सुन्नत रसूलुल्लाह का कर्म है और हदीस सुन्नत के लिए एक समर्थक साक्षी है। (ख़ुदा हर बुराई से अपनी शरण में रखे) यह कहना अनुचित है कि हदीस क़ुर्आन को निर्णायक है। यदि क़ुर्आन पर कोई निर्णायक है तो वह स्वयं क़ुर्आन है। हदीस जो एक विचारात्मक रुतबा रखती है, क़ुर्आन पर निर्णायक कदापि नहीं हो सकती, मात्र सहयोगी प्रमाण के रंग में है। क़ुर्आन और सुन्नत ने मूल कार्य सब कर दिखाया है। हदीस केवल समर्थक साक्षी है। हाँ सुन्नत एक ऐसी वस्तु है जो क़ुर्आन का उद्देश्य प्रकट करती है, और सुन्नत से तात्पर्य वह मार्ग है जिस पर क्रियात्मक रूप में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने साथियों को डाल दिया था। सुन्नत उन बातों का नाम नहीं है जो सौ डेढ़ सौ वर्ष पश्चात् पुस्तकों में लिखी गयी, बल्कि उन बातों का नाम हदीस है और **सुन्नत** उस क्रियात्मक आदर्श का नाम है जो नेक मुसलमानों की क्रियात्मक परिस्थिति में प्रारम्भ से चला आया है, जिस पर सहस्त्रों मुसलमानों को लगाया गया। हाँ हदीस भी, यद्यपि कि उसका अधिकांश भाग विचारात्मक स्तर पर है, परन्तु यदि वह क़ुर्आन और सुन्नत की विरोधी न हों तो अनुसरण करने योग्य है और क़ुर्आन व सुन्नत की समर्थक है। अधिकांश इस्लामी मामलों का भण्डार उसके अन्दर मौजूद है। **अतः हदीस** के महत्त्व को न समझना इस्लाम के एक भाग को काट देना है। हाँ यदि कोई ऐसी हदीस जो क़ुर्आन और सुन्नत की विरोधी हो तथा ऐसी हदीस की विरोधी हो जो क़ुर्आन

के अनुकूल है या उदाहरणार्थ एक ऐसी हदीस जो सही बुखारी के विपरीत है तो वह हदीस स्वीकार योग्य नहीं होगी, क्योंकि उसे स्वीकार करने से क़ुर्आन को और उन समस्त हदीसों को जो क़ुर्आन के अनुकूल हैं रद्द करना पड़ता है और मैं जानता हूँ कि कोई संयमी मुसलमान इसका साहस नहीं करेगा कि ऐसी हदीस पर आस्था रखे कि वह क़ुर्आन और सुन्नत के विपरीत और ऐसी हदीसों का विरोधी है जो क़ुर्आन के अनुकूल हैं। अतः हदीसों के महत्त्व को समझो और उन से लाभ उठाओ कि वे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर सम्बद्ध हैं, जब तक क़ुर्आन और सुन्नत को झुठलाए, तुम भी उनको न झुठलाओ। बल्कि तुम्हें चाहिए कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों का इस प्रकार अनुसरण करो कि तुम्हारी किसी भी हरकत और किसी भी सुकून, तुम्हारे किसी भी कर्म या उसके परित्याग के पीछे उसके समर्थन में तुम्हारे पास कोई हदीस हो। यदि कोई ऐसी हदीस हो जो क़ुर्आन शरीफ़ की उल्लिखित घटनाओं के पूर्णतया भिन्न है तो उसकी अनुकूलता हेतु चिन्तन करो। संभव है उस भिन्नता में तुम्हारे समझने का ही दोष हो और यदि किसी प्रकार भी यह भिन्नता दूर न हो तो ऐसी हदीसों को फेंक दो कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से नहीं है। यदि कोई हदीस कमज़ोर है परन्तु क़ुर्आन के अनुकूल है तो उसे स्वीकार कर लो क्योंकि क़ुर्आन उसकी पुष्टि करता है। यदि कोई हदीस ऐसी है जिसमें किसी भविष्यवाणी की सूचना है। परन्तु हदीस के विद्वानों के निकट वह कमज़ोर है, और तुम्हारे काल में या इस से पूर्व

उस हदीस की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई है तो उस हदीस को सत्य समझो और ऐसे हदीस के विद्वानों और हदीस को बयान करने वालों को दोषी और झूठा समझो, जिन्होंने इस हदीस को कमज़ोर और बनावटी घोषित किया हो। ऐसी सैकड़ों हदीसें हैं जिन में भविष्यवाणी हैं और हदीस के विद्वानों के निकट उनमें से अधिकांश कमज़ोर, बनावटी या तर्क-वितर्क वाली हैं। अतः यदि कोई हदीस उनमें से पूरी हो जाए और तुम यह कहकर टाल दो कि हम इस को नहीं मानते क्योंकि यह हदीस कमज़ोर है या उसको बयान करने वाला पवित्र आचरण वाला नहीं है। तो ऐसी स्थिति में तुम्हारी स्वयं बेईमानी होगी कि ऐसी हदीस को रद्द कर दो जिसकी सच्चाई को ख़ुदा ने सिद्ध कर दिया है। विचार करो यदि ऐसी हज़ार हदीसें हों और हदीस के विद्वानों के निकट कमज़ोर हों और हज़ार भविष्यवाणियां उसकी सच्ची निकलें तो क्या तुम उन हदीसों को कमज़ोर कहकर इस्लाम के हज़ार प्रमाणों को नष्ट कर दोगे। अतः ऐसी स्थिति में तुम इस्लाम के शत्रु ठहराए जाओगे। ख़ुदा का कथन है-

فَلَا يُظۡهِرُ عَلٰى غَيۡبِهٖۤ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارۡتَضٰى مِنۡ رَّسُوۡلٍ

(सूरह अलजिन्न-27,28)

"फ़लायुज़हिरो अला गैबिही अहदन इल्ला मनिर्तज़ा मिन रसूल"

अतः सच्ची भविष्यवाणी सच्चे रसूल के अतिरिक्त और किसी की ओर मन्सूब नहीं हो सकती है? क्या ऐसे अवसर पर यह कहना स्थिति के अनुरूप ईमानदारी नहीं कि सही हदीस को

कमज़ोर कहने में किसी हदीस के विद्वान ने ग़लती की, या यह कहना उचित है कि झूठी हदीस को सच्चा करके ख़ुदा ने ग़लती की। यदि एक हदीस कमज़ोर भी हो बशर्ते कि वह क़ुर्आन, सुन्नत और ऐसी हदीसों के विपरीत नहीं जो क़ुर्आन के अनुकूल हैं तो उस हदीस पर अमल करो परन्तु बहुत सतर्कता पूर्वक हदीसों पर अमल करना चाहिए क्योंकि बहुत सारी हदीसें लोगों द्वारा बनाई हुई भी हैं जिन्होंने इस्लाम में उपद्रव डाला है। प्रत्येक सम्प्रदाय अपनी आस्थानुसार हदीस रखता है। यहां तक कि नमाज़ जैसे निस्सन्देह और निरंतर चलने वाले कर्तव्य को हदीसों के विवाद ने विभिन्न प्रकार की शक्लों में कर दिया है। कोई आमीन उंची आवाज़ में कहता है तो कोई खामोशी से, कोई इमाम के पीछे सूरह फ़ातिहः पढ़ता है तो कोई इसे नमाज़ को ख़राब करने वाला समझता है। कोई सीने पर हाथ बांधता है कोई नाभि पर। इस विवाद का वास्तविक कारण हदीसें ही हैं।

كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ

"कुल्लोहिज़्बिंबिमा लदैहिम फ़रिहून"

(मौमिनून-54)

अन्यथा सुन्नत ने एक ही मार्ग बतलाया था। फिर विभिन्न लोगों के कथनों के प्रविष्ट होने से यह मार्ग लड़खड़ा गया। इसी प्रकार हदीसों को न समझने के कारण बहुत सारे लोग तबाह हो गए। शिया भी इसी से तबाह हुए। यदि क़ुर्आन को अपना निर्णायक मानते तो अकेली सूरह नूर ही उन्हें प्रकाश प्रदान कर सकती थी, परन्तु हदीसों ने उनको तबाह किया। इसी प्रकार हज़रत मसीह

के समय वे यहूदी तबाह हो गए★ जो अहले हदीस कहलाते थे। कुछ समय से उन्होंने तौरात को छोड़ दिया था और जैसा कि आज तक उनकी आस्था है। उनका मज़हब यह था कि हदीस तौरात पर निर्णायक है। उनमें ऐसी हदीसों का बाहुल्य था कि जब तक एलिया दोबारा अपने इस भौतिक अस्तित्व के साथ आकाश से न उतरे तब तक उनका मसीह मौऊद नहीं आएगा। इन हदीसों ने उनको सख़्त ठोकर में डाल दिया और वे लोग इन हदीसों पर निर्भर होकर हज़रत मसीह के इस विश्लेषण को स्वीकार न कर सके कि इल्यास से अभिप्राय यूहन्ना अर्थात् यहया नबी है जो इल्यास के स्वभाव और तबियत पर आया और उपमा के तौर पर उसका अस्तित्व लिया है। अतः समस्त ठोकरों का कारण उनकी हदीसें थीं, जो अन्ततः उनके बेईमान होने का कारण बन गईं। संभव है वे लोग इन हदीसों के अर्थों में भी ग़लती करते हों या हदीसों में कुछ मनुष्यों के शब्द सम्मिलित हो गए हों। संभवतः मुसलमानों को इस घटना की सूचना न होगी कि यहूदियों में हज़रत मसीह का इन्कार करने वाले अहले हदीस ही थे। उन्होंने उन पर शोर मचाया, कुफ्र का फ़तवा लिखा और उनको काफ़िर घोषित कर दिया और कहा कि यह मनुष्य ख़ुदा

★**हाशिया :-** इंजील में इन विचारों का घोर विरोध किया गया था जो कि तालमूद की हदीसों और वक्तव्यों में प्रकट किए गए थे। ये हदीसें मौखिक रूप में हज़रत मूसा तक पहुँचाई जाती थीं और कहा जाता था कि ये हज़रत मूसा के इल्हाम हैं। अन्ततः स्थिति यह हो गई कि तौरात के विपरीत कुल समय हदीसों के अध्ययन पर लगाया जाता था। कुछ मामलों में तालमूद तौरात के विपरीत है। तब भी यहूदी तालमूद की बात पर अमल करते थे। (तालमूद-लेखक यूसुफ़ बारकले प्रकाशित लन्दन 1878 ई.)

की पुस्तक को नहीं मानता। ख़ुदा ने इल्यास के दोबारा आने की सूचना दी, पर यह उस भविष्यवाणी का विश्लेषण करता है और बिना किसी उचित प्रमाण के उन सूचनाओं को किसी और तरफ़ खींच कर ले जाता है।★ उन्होंने हज़रत मसीह का नाम केवल काफ़िर ही नहीं अपितु अधर्मी भी रखा और कहा कि अगर यह व्यक्ति सच्चा है तो फिर मूसा का धर्म झूठा है। वह उनके लिए **फैज आवज** का युग (अन्धकार का समय) था। झूठी हदीसों ने उन्हें धोखा दिया। अत: हदीसों का अध्ययन करते समय यह विचार कर लेना चाहिए कि इस से पूर्व एक क़ौम हदीस को तौरात पर निर्णायक ठहराकर इस दशा तक पहुँच चुकी है कि उन्होंने एक सच्चे नबी को काफ़िर और दज्जाल कहा और उसका इन्कार कर दिया। पर मुसलमानों के लिए सही

★**हाशिया :-** जिस समय हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर कुफ्र का फ़तवा लिखा गया उस समय वह पोलूस भी कुफ्र का फ़तवा लगाने वाले समूह में सम्मिलित था, जिसने बाद में स्वयं को रसूल मसीह के शब्द से विख्यात किया। यह व्यक्ति हज़रत मसीह के जीवन में आप का बहुत बड़ा शत्रु था। हज़रत मसीह के नाम पर जितनी भी इन्जीलें लिखी गई हैं उनमें से एक में भी यह भविष्यवाणी नहीं है कि मेरे बाद पोलूस तौबा करके रसूल बन जाएगा। हमें इस व्यक्ति के पूर्व चाल-चलन के विषय में लिखने की आवश्यकता नहीं कि ईसाई भली-भांति जानते हैं। अफ़सोस है कि यह वही व्यक्ति है जिसने हज़रत मसीह को जब तक वह इस देश में रहे बहुत दु:ख दिया था और जब वह सलीब से मुक्ति पाकर कश्मीर की ओर चले गए तो उसने एक झूठे स्वप्न द्वारा स्वयं को हवारियों में दाख़िल किया और तीन ख़ुदाओं का मामला गढ़ा और ईसाइयों पर सुअर को वैध कर दिया, जबकि वह तौरात की दृष्टि से हमेशा के लिए अवैध था और मदिरा को ख़ूब बढ़ावा दिया और इन्जीली आस्था में तीन ख़ुदाओं की कल्पना का समावेश कर दिया ताकि इन समस्त नए अनुचित कर्मों से यूनानी मूर्ति पूजक प्रसन्न हो जाएं। इसी से।

बुख़ारी अत्यन्त बरकत वाली और लाभप्रद पुस्तक है। यह वही पुस्तक है जिसमें स्पष्ट रूप में लिखा है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु को प्राप्त हो गए हैं। इसी प्रकार हदीस की पुस्तक मुस्लिम और अन्य हदीसों की पुस्तकें अध्यात्म विद्या और समस्याओं के समाधान का अपार भण्डार अपने अन्दर रखती हैं और इस सतर्कता के साथ उन पर अमल करना आवश्यक है कि कोई विषय ऐसा न हो जो क़ुर्आन सुन्नत और उन हदीसों के विरुद्ध हो जो क़ुर्आन के अनुकूल हैं।

हे ख़ुदा के जिज्ञासुओ! कान खोलो और सुनो कि विश्वास जैसी कोई वस्तु नहीं। विश्वास ही है जो पाप से बचाता है, विश्वास ही है जो पुण्य कर्म करने की शक्ति देता है, विश्वास ही है जो ख़ुदा का सच्चा प्रेमी बनाता है। क्या तुम विश्वास के बिना पाप का परित्याग कर सकते हो? क्या तुम विश्वास के अदभुत प्रकाश के अभाव में तामसिक आवेग से रुक सकते हो? क्या तुम विश्वास के बिना कोई सांत्वना प्राप्त कर सकते हो? क्या तुम विश्वास के बिना कोई सच्चा परिवर्तन ला सकते हो? क्या तुम विश्वास के बिना कोई सच्ची ख़ुशहाली प्राप्त कर सकते हो? क्या आकाश के नीचे कोई ऐसा कफ़्फ़ार: और फ़िदिया है जो तुम से पापों का परित्याग करा सके? क्या मरयम का बेटा ईसा ऐसा है कि उसका बनावटी खून पाप से मुक्ति दिलाएगा? हे ईसाइयो ऐसा झूठ मत बोलो जिससे धरती टुकड़े-टुकड़े हो जाए। यसू मसीह स्वयं अपनी मुक्ति के लिए विश्वास का मुहताज था। उसने विश्वास किया और मुक्ति पाई। अफ़सोस है उन ईसाइयों पर जो यह कहकर प्रजा को धोखा देते हैं कि हमने मसीह के खून से पाप से मुक्ति पाई है। हालांकि वे सर

से पांव तक पापों में डूबे हुए हैं। वे नहीं जानते कि उनका ख़ुदा कौन है बल्कि जीवन तो लापरवाही से भरपूर है। मदिरा की मस्ती उनके मस्तिष्क में समाई हुई है, परन्तु वह पवित्र मस्ती जो आकाश से उतरती है उससे वे अवगत नहीं। जो जीवन ख़ुदा के साथ होता है और जो पवित्र जीवन के परिणाम होते हैं वे उनके भाग्य में नहीं। अतः तुम स्मरण रखो कि विश्वास के बिना तुम अंधकारमय जीवन से बाहर नहीं आ सकते और न रूहुलक़ुदुस तुम्हें मिल सकता है। बधाई है उनको जो विश्वास रखते हैं क्योंकि वे ही ख़ुदा के दर्शन करेंगे। बधाई है उनको जो संदेहों से मुक्ति पा गए हैं, क्योंकि वे ही पाप से मुक्ति प्राप्त करेंगे। बधाई तुम्हें जबकि तुम्हें विश्वास की दौलत प्रदान की जाए कि उसके पश्चात तुम्हारे पाप की समाप्ति होगी। पाप और विश्वास दोनों एक स्थान पर एकत्र नहीं हो सकते। क्या तुम ऐसे बिल में हाथ डाल सकते हो जिसमें तुम एक अत्यन्त ज़हरीले सांप को देख रहे हो? क्या तुम ऐसे स्थान पर खड़े रह सकते हो, जिस स्थान पर किसी ज्वालामुखी पर्वत से पत्थरों की वर्षा हो रही हो या बिजली गिर रही हो या एक चीर फाड़ डालने वाला शेर के हमला करने का स्थान है, या एक स्थान है जहां एक सर्वनाश करने वाली प्लेग मानव जाति को समाप्त कर रही है। फिर यदि तुम्हें ख़ुदा पर ऐसा ही विश्वास है जैसा कि सांप, बिजली, शेर, या प्लेग पर, तो असंभव है कि उसके सम्मुख तुम अवज्ञाकारी बन कर दण्ड का मार्ग अपना सको या उससे सत्य और वफ़ादारी का संबंध तोड़ सको। हे वे लोगो! जो भलाई और सच्चाई हेतु बुलाए गए हो तुम निस्सन्देह समझो कि तुम में ख़ुदा

की चुम्बकीय शक्ति उस समय पैदा होगी और उसी समय तुम पापों को घृणित धब्बों से पवित्र किए जाओगे जब तुम्हारे हृदय विश्वास से भर जाएँगे। संभव है तुम कहो कि हमें विश्वास प्राप्त है। अतः स्मरण रहे कि यह तुम्हें धोखा हुआ है। विश्वास तुम्हें कदापि प्राप्त नहीं, क्योंकि उसके अनिवार्य तत्व प्राप्त नहीं। कारण यह कि तुम पाप का परित्याग नहीं करते, तुम ऐसा पांव आगे नहीं बढ़ाते जो बढ़ाना चाहिए। तुम उस प्रकार नहीं डरते जिस प्रकार कि डरना चाहिए। स्वयं विचार करो कि जिसको विश्वास है कि अमुक बिल में सांप है वह उस बिल में कब हाथ डालता है, और जिस को विश्वास है कि उसके भोजन में विष है वह उस भोजन को कब खाता है। जो स्पष्टतः देख रहा है कि अमुक जगह में चीर-फाड़ डालने वाले एक हज़ार शेर हैं, उसके पांव लापरवाही और गफ़लत से उस जंगल की ओर क्योंकर उठ सकते हैं। अतः तुम्हारे हाथ पांव, कान और तुम्हारे नेत्र पाप पर किस प्रकार साहस कर सकते हैं, यदि तुम्हें ख़ुदा और उसके बदला देने एवं दण्ड विधान पर विश्वास है। पाप विश्वास पर विजयी नहीं हो सकता और जब तक कि तुम एक भस्म और नष्ट करने वाली अग्नि देख रहे हो तो उस अग्नि में स्वयं को क्योंकर डाल सकते हो। विश्वास की दीवारें आकाश तक हैं। शैतान उन पर चढ़ नहीं सकता। प्रत्येक जो पवित्र हुआ वह विश्वास से पवित्र हुआ। विश्वास दुःख उठाने की शक्ति देता है। यहां तक कि एक राजा जो उसके सिंहासन से उतरता है और भिख़ारियों का लिबास पहनता है। विश्वास प्रत्येक दुःख को आसान कर देता है। विश्वास ख़ुदा के दर्शन कराता है।

प्रत्येक पवित्रता विश्वास-मार्ग से आती है। वह वस्तु जो पाप से मुक्ति दिलाकर ख़ुदा तक पहुंचाती है और सत्य और दृढ़ सकंल्प में फरिश्तों से भी आगे बढ़ा देती है वह विश्वास है। प्रत्येक धर्म जो विश्वास के साधन उपलब्ध नहीं कराता वह झूठा है। प्रत्येक धर्म जो सुनिश्चित साधनों से ख़ुदा के दर्शन नहीं करा सकता वह झूठा है, प्रत्येक धर्म जिसमें प्राचीन कहानियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं वह झूठा है। ख़ुदा जैसा पहले था वैसा अब भी है, उसकी शक्तियां जैसी पहले थीं वैसे अब भी हैं, उसका निशान दिखलाने पर जैसा पहले अधिपत्य था वैसा अब भी है। फिर तुम क्यों केवल कहानियों पर राज़ी होते हो? उस धर्म का विनाश हो चुका है जिसके चमत्कार मात्र कहानियां हैं, जिसकी भविष्यवाणियां मात्र कहानियां हैं। और उस जमाअत का विनाश हो चुका है जिस पर ख़ुदा नहीं उतरता और जो विश्वास द्वारा ख़ुदा के हाथ से पवित्र नहीं हुई। जिस प्रकार मनुष्य भोग-विलास की वस्तुएँ देखकर उनकी ओर खींचा जाता है इसी प्रकार मनुष्य अब आध्यात्मिक सुख का सामना विश्वास द्वारा प्राप्त करता है तो वह ख़ुदा की ओर खींचा जाता है, और उसका सौन्दर्य उसको ऐसा मुग्ध कर देता है कि अन्य समस्त वस्तुएँ उसको बेकार दिखाई देती हैं। मनुष्य उसी समय पाप से सुरक्षित रह पाता है जब वह ख़ुदा और उस के शौर्य, प्रताप, बदला देने और दण्ड-विधान पर निश्चित रूप से अवगत होता है। प्रत्येक उद्दण्डता की जड़ अनभिज्ञता है। जो मनुष्य ख़ुदा की निश्चित आध्यात्मिक विद्या से कुछ हिस्सा लेता है वह उद्दण्ड नहीं रह सकता। यदि घर का मालिक जानता है कि एक भयंकर बाढ़ ने

उसके घर की ओर मुंह किया है या उसके घर के इर्द-गिर्द आग लग चुकी है और मात्र थोड़ा सा स्थान शेष है, तो वह इस घर में ठहर नहीं सकता। फिर तुम ख़ुदा के प्रतिफल देने के नियम और दण्ड विधान पर विश्वास का दावा करके अपनी भयानक हालतों पर क्योंकर ठहर रहे हो। अतः तुम आंखें खोलो और अल्लाह के उस विधान को देखो जो समस्त संसार में लागू है। चूहे मत बनो जो नीचे की ओर जाते हैं अपितु ऊपर उड़ने वाले कबूतर बनो जो आकाश की बुलंदियों को अपने लिए पसंद करता है। तुम पापों के परित्याग की बैअत करके फिर पाप पर स्थिर न रहो और सांप की भांति न बनो जो खाल उतारकर फिर भी सांप ही रहता है। मृत्यु को स्मरण रखो कि वह तुम्हारे पास आती जाती है और तुम्हें उसकी कोई सूचना नहीं। प्रयास करो कि पवित्र हो जाओ कि मनुष्य पवित्रता को तभी प्राप्त करता है जब स्वयं पवित्र हो जाए। परन्तु तुम इस नैमत को कैसे पा सकोगे? इसका उत्तर ख़ुदा ने दिया है, जहां क़ुर्आन में फ़रमाता है-

وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ

"वस्तईनूबिस्सब्रे वस्सलात"

(अलबक़रह-46)

अर्थात् नमाज़ और धैर्य के साथ ख़ुदा की सहाहता की कामना करो। नमाज़ क्या है? वह प्रार्थना है जो ख़ुदा की पावनता, प्रशंसा, पवित्रता, पापों से क्षमा याचना और दुरूद के साथ बहुत गिड़गिड़ा कर मांगी जाती है। अतः जब तुम उपासना करो तो अज्ञान लोगों की भांति अपनी प्रार्थना में मात्र अरबी शब्दों के

पाबन्द न रहो क्योंकि उनकी उपासना और क्षमा-याचना सब रीति रिवाज के तौर पर हैं जिनके साथ कोई वास्तविकता नहीं, परन्तु जब तुम उपासना करो तो क़ुर्आन जो ख़ुदा की वाणी है और कुछ प्रभावशाली प्रार्थनाएं जो रसूल की वाणी हैं के अतिरिक्त अपनी शेष समस्त प्रार्थनाओं को अपनी मातृभाषा में ही बड़ी दीनता-हीनता की शब्दावली में किया करो, ताकि तुम्हारे दिलों पर उसका कुछ प्रभाव हो। पांच समय की नमाज़ें क्या हैं? वह तुम्हारी विभिन्न परिस्थितियों का चित्रांकन हैं। तुम्हारे जीवन के अनुरूप पांच परिवर्तन हैं जो संकट के समय तुम पर आते हैं और तुम्हारे स्वभाव हेतु उनका आना अनिवार्य है।

(1)- प्रथम जब तुम्हें सूचना दी जाती है कि तुम पर एक संकट आने वाला है। उदाहरणार्थ तुम्हारे नाम अदालत से एक वारंट जारी हुआ है। यह प्रथम परिवर्तन जिसने तुम्हारी शांति, प्रसन्नता में विघ्न उत्पन्न किया। अतः यह अवस्था दिन ढ़लने के समय से समानता रखती है, क्योंकि इससे तुम्हारे प्रसन्नतापूर्ण जीवन में गिरावट का प्रारम्भ हुआ। इसके मुकाबले पर नमाज़-ए-ज़ुहर ('ज़ुहर की उपासना) निश्चित हुई, जिसका समय दोपहर ढलते ही प्रारम्भ होता है।

(2)- द्वितीय परिवर्तन तुम पर उस समय आता है जब तुम उस संकट, के स्थान के बहुत निकट किए जाते हो। उदाहरणार्थ जब तुम वारंट द्वारा गिरफ़्तार करके अदालत में प्रस्तुत किए जाते हो। यह वह समय है जब भय से तुम्हारा रक्त सूख जाता है। सांत्वना और धैर्य का प्रकाश तुम से विदाई लेने लगता है। अतः तुम्हारी यह अवस्था उस समय से समानता रखती है जब सूर्य का प्रकाश कम हो जाता

है और उस पर दृष्टि ठहर सकती है और स्पष्ट दिखाई देता है कि उसका अस्त होना निकट है। इस आध्यात्मिक अवस्था के मुकाबले पर 'नामज़-ए-अस्र' (दिन ढले) की उपासना निश्चित हुई।

(3)- तृतीय परिवर्तन तुम पर उस समय आता है जब इस संकट से छुटकारा पाने की सारी आशाएं दम तोड़ देती हैं। उदाहरणार्थ जब तुम्हारे नाम अपराध से संबंधित प्रमाण लिखे जाते हैं और तुम्हारे विरोधी तुम्हारे विनाश हेतु प्रमाण जुटा चुकते हैं। यह वह समय है जब तुम्हारे होश उड़ जाते हैं और तुम स्वयं को एक बंदी समझने लगते हो। अतः यह अवस्था उस समय से समानता रखती है जब सूर्य अस्त हो जाता है और दिन के प्रकाश की समस्त आशाएं समाप्त हो जाती हैं। इस आध्यात्मिक अवस्था के मुकाबले पर 'नमाज़-ए-मग़रिब' (दिन के प्रकाश की समाप्ति) की उपासना निश्चित है।

(4)- चतुर्थ परिवर्तन तुम पर उस समय आता है जब तुम पर संकट आ ही जाता है और उसका घोर अन्धकार तुम्हें घेर लेता है। उदाहरणार्थ जब विरोधी साक्ष्यों के पश्चात तुम्हारा अपराध सिद्ध हो जाता है और तुम्हें दण्ड का आदेश सुनाया जाता है और बंदी बनाने हेतु तुम्हें पुलिस के हवाले कर दिया जाता है। अतः यह अवस्था उस समय से समानता रखती है जब रात हो जाती है और घोर अन्धकार हो जाता है। इस आध्यात्मिक अवस्था के मुक़ाबले पर नमाज़-ए-इशा (रात्रि की उपासना) निश्चित है।

(5)- फिर जब तुम एक अवधि इस संकट के अन्धकार में व्यतीत करते हो तो अन्ततः ख़ुदा की कृपा तुम पर जोश मारती है और तुम्हें उस अन्धकार से मुक्ति देती है। उदाहरणार्थ जैसे अन्धकार

के पश्चात फिर सवेरा होता है और दिन का फिर वह प्रकाश अपनी चमक के साथ प्रकट हो जाता है। अतः इस आध्यात्मिक अवस्था के मुक़ाबले पर नमाज़-ए-फ़ज्र (सुबह की उपासना) निश्चित है। ख़ुदा ने तुम्हारे स्वाभाविक परिवर्तनों में पांच अवस्थाएं देखकर पांच नमाज़ें तुम्हारे लिए निश्चित कीं। इस से तुम समझ सकते हो कि ये नमाज़ें विशेषतः तुम्हारे स्वयं के लाभ हेतु हैं। अतः यदि तुम चाहते हो कि इन संकटों से सुरक्षित रहो तो तुम पांच समय की उपासना का परित्याग न करो कि वे तुम्हारे आन्तरिक और आध्यात्मिक परिवर्तनों की छाया है, उपासना में आने वाली विपत्तियों का इलाज है। तुम्हें ज्ञात नहीं कि चढ़ने वाला नया दिन तुम्हारे लिए किस प्रकार की नियति लेकर आएगा। अतः इसके पूर्व कि वह दिन चढ़े, तुम अपने स्वामी (ख़ुदा) के समक्ष गिड़गिड़ाओ कि तुम्हारे लिए भलाई और अच्छाई का दिन चढ़े।

हे सरदारो, राजाओ और धनवानो! तुम में ऐसे लोग बहुत ही कम हैं जो ख़ुदा से डरते और उसके समस्त मार्गों में सच्चे हैं। बहुतायत ऐसे लोगों की है जो संसार के देशों और संपत्तियों से ह्रदय लगाते हैं और फिर उसी में जीवन व्यतीत कर लेते हैं और मृत्यु को स्मरण नहीं करते। प्रत्येक सरदार जो उपासना नहीं करता और ख़ुदा से लापरवाह है उसके अधीन समस्त नौकरों का पाप उसकी गर्दन पर है। प्रत्येक अधिकारी जो मदिरापान में सम्मिलित है, उसकी गर्दन पर उन लोगों का भी पाप है जो उसके अधीन होकर मदिरापान में सम्मिलित हैं। हे बुद्धिजीवियो! यह संसार सदैव रहने का स्थान नहीं। तुम संभल जाओ। तुम प्रत्येक असंतुलन को त्याग दो। प्रत्येक नशीली वस्तु का परित्याग

करो। मनुष्य को तबाह करने वाली वस्तु केवल मदिरा ही नहीं अपितु अफ़ीम, गांजा, चरस, भांग, ताड़ी और प्रत्येक नशा जो सदा के लिए आदत ही बना लिया जाता है, वह मस्तिष्क को ख़राब करता और अंततः विनाश कर देता है। अतः तुम इस से बचो। हम नहीं समझ सकते कि तुम क्यों इन वस्तुओं का प्रयोग करते हो, जिसके परिणाम स्वरूप प्रति वर्ष सहस्त्रों तुम्हारे जैसे नशे के व्यसनी इस संसार से कूच कर जाते हैं,★ और प्रलय के दिन का प्रकोप इसके अतिरिक्त है। बुराइयों से बचने वाले इन्सान बन जाओ ताकि तुम्हारी आयु बढ़ जाए और तुम ख़ुदा से वरदान पाओ। सीमा से अधिक भोग-विलास में पड़ना लानती जीवन है। सीमा से अधिक दुराचारी और निरर्थक होना लानती जीवन है, हद से अधिक ख़ुदा या उसके भक्तों की हमदर्दी से लापरवाह होना लानती जीवन है। प्रत्येक अमीर से ख़ुदा के अधिकारों और मनुष्य के अधिकारों के विषय में ऐसे ही पूछा जाएगा जैसे एक फ़क़ीर से बल्कि उससे भी अधिक। अतः कितना दुर्भाग्यशाली है वह मनुष्य जो इस अल्पकालिक जीवन पर निर्भर रहकर ख़ुदा को पूर्णतया तिलांजलि दे देता है और ख़ुदा की अवैध वस्तुओं का इतनी बेशर्मी से उपभोग करता है जैसे वह अवैध उसके लिए वैध है। क्रोध की दशा

★**हाशिया :-** यूरोप के लोगों को जितनी मदिरा ने हानि पहुँचाई है, उसका कारण तो यह था कि ईसा अलैहिस्सलाम मदिरापान करते थे। शायद किसी बीमारी या पुरानी आदत के कारण। परन्तु हे मुसलमानो! तुम्हारे नबी अलैहिस्सलाम तो प्रत्येक नशे से **पवित्र** और **मासूम** थे। जैसा कि वह वास्तव में मासूम हैं। अतः तुम मुसलमान होकर किस का अनुसरण करते हो। क़ुर्आन इंजील की भांति मदिरा को वैध नहीं ठहराता फिर तुम किस प्रमाण को वैध ठहराते हो। क्या मरना नहीं है। इसी से।

में दीवानों की भांति किसी को गाली, किसी को ज़ख़्मी तो किसी को क़त्ल करने के लिए तैयार हो जाता है और कामुक आवेग में बेशर्मी के मार्गों को चरम सीमा तक पहुँचा देता है। अतः वह सच्ची ख़ुशहाली प्राप्त नहीं कर सकेगा, यहां तक कि मृत्यु आ जाएगी। हे मित्रो तुम अल्प समय के लिए इस संसार में आए हो और उनमें से भी बहुत सा समय व्यतीत हो गया है। अतः अपने ख़ुदा को रुष्ट मत करो। एक इन्सानी सरकार जो तुम से प्रबल हो यदि वह तुम से नाराज़ हो तो वह तुम्हें नष्ट कर सकती है। अतः तुम विचार कर लो, ख़ुदा की नाराज़गी से तुम कैसे बच सकते हो। यदि तुम ख़ुदा की दृष्टि में संयमी हो जाओ तो तुम्हें कोई भी नष्ट नहीं कर सकता, वह स्वयं तुम्हारी रक्षा करेगा और वह शत्रु जो तुम्हारे प्राणों के पीछे पड़ा हुआ है तुम पर काबू नहीं पा सकेगा, अन्यथा तुम्हारे प्राणों का कोई रक्षक नहीं। तुम शत्रुओं से भयभीत होकर या अन्य आपदाओं से ग्रसित होकर बेचैनी से जीवन व्यतीत करोगे और तुम्हारी आयु के अन्तिम दिन बड़े शोक और क्रोध के साथ व्यतीत होंगे। ख़ुदा उन लोगों की शरण बन जाता है जो उसके साथ हो जाते हैं। अतः ख़ुदा की ओर आ जाओ और उसका विरोध करना त्याग दो। उसके कर्तव्यों में आलस्य से काम न लो, उसके भक्तों पर अपनी वाणी या अपने हाथ से अत्याचार★ मत करो और आसमानी प्रकोप और क्रोध से डरते रहो **कि मुक्ति का मार्ग यही है।**

★हाशिया :- जो मनुष्य मानव समाज पर क्रोध की शक्ति को बढ़ाता है वह क्रोध से ही नष्ट किया जाता है। इसलिए ख़ुदा ने सूरह फ़ातिहः में यहूदियों का नाम **ख़ुदा के क्रोध के भाजन** रखा। यह इस बात की ओर संकेत था कि प्रलय के दिन तो प्रत्येक अपराधी ख़ुदा के क्रोध का स्वाद चखेगा। परन्तु जो व्यर्थ ही संसार में क्रोध करता है वह संसार में ही ख़ुदा के क्रोध का स्वाद

हे इस्लाम के विद्वानो! मुझे झूठा कहने में जल्दी न करो कि बहुत से रहस्य ऐसे होते हैं कि मनुष्य जल्दी से समझ नहीं सकता। बात को सुनकर उसी समय उस का खण्डन करने के लिए तैयार मत हो जाओ कि यह संयम का मार्ग नहीं है। यदि तुम में कुछ दोष न होते और यदि तुमने कुछ हदीसों के उलटे अर्थ न किए होते तो मसीह मौऊद जो न्याय करने वाला है का आना ही व्यर्थ था। तुम से पूर्व यह नसीहत प्राप्त करने का स्थान मौजूद है कि जिस बात पर तुमने बल दिया है और जिस स्थान पर तुमने क़दम रखा है उसी स्थान पर यहूदियों ने रखा था अर्थात् जैसा कि तुम हज़रत ईसा के दोबारा आने की प्रतीक्षा कर रहे हो, वे भी इल्यास नबी के दोबारा आने की प्रतीक्षा कर रहे थे और कहते थे कि मसीह तब आएगा जब कि पहले इल्यास नबी जो आकाश पर उठाया गया दोबारा दुनिया में आ जाएगा। जो व्यक्ति इल्यास के दोबारा आने से पूर्व मसीह होने का दावा करे वह झूठा है और वे न केवल हदीसों के अनुसार ऐसी

शेष हाशिया - चख लेता है। ईसाइयों से यहूदियों की अपेक्षा संसार में अधिक क्रोध प्रकट नहीं हुआ। इसलिए सूरह फ़ातिह: में उनका नाम **ज़ाल्लीन** रखा गया। इस शब्द के दो अर्थ हैं। एक तो यह कि वे गुमराह हैं और दूसरा अर्थ इसका यह है कि वे खोए जाएँगे। मेरे निकट यह उनके लिए शुभ सन्देश है कि किसी समय झूठे धर्म से मुक्ति पाकर इस्लाम में खोए जाएँगे और शनैः-शनैः अनेकेश्वरवाद की आस्थाएं और शर्मनाक कुरीतियों का परित्याग करते-करते मुसलमानों के रंग में रंगीन होकर एकेश्वरवाद पर आस्था रखेंगे। अतः ज़ाल्लीन के शब्द में जो सूरह फ़ातिह: के अन्त में इसके दूसरे अर्थ के अनुसार एक वस्तु का दूसरी वस्तु में आत्मसात होना और खोए जाना है। भविष्य में ईसाइयों की धार्मिक अवस्था के लिए यह एक भविष्यवाणी है।

विचारधारा रखते थे अपितु परमेश्वर की पुस्तक को जो कि मलाकी नबी की पुस्तक है। इसके प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत करते थे। परन्तु जब हज़रत ईसा ने अपने बारे में यहूदियों के मसीह मौऊद होने का दावा कर दिया और इल्यास आकाश से न उतरा जो उस दावे की शर्त थी तो इन यहूदियों की समस्त आस्थाएं मिथ्या सिद्ध हो गईं और जो यहूदियों की विचारधारा थी कि एलिया नबी इस भौतिक शरीर के साथ आकाश से उतरेगा अंततः उसका अभिप्राय यह निकला कि इल्यास की आदत और स्वभाव पर कोई अन्य व्यक्ति प्रकट हो जाएगा। इस अभिप्राय का उल्लेख स्वयं हज़रत ईसा ने किया, जिनको दोबारा आकाश से उतार रहे हो। अतः तुम क्यों ऐसे स्थान पर ठोकर खाते हो जिस स्थान पर तुम से पूर्व यहूदी ठोकर खा चुके हैं। तुम्हारे देश में सहस्त्रों यहूदी मौजूद हैं तुम उनसे पूछकर देखो कि क्या यहूदियों की यही आस्था नहीं, जो इस समय तुम प्रकट कर रहे हो। अतः वह ख़ुदा जिसने ईसा के लिए एलिया नबी को आकाश से न उतारा और यहूदियों के समक्ष उसको उपमाओं से काम लेना पड़ा, वह तुम्हारे लिए क्योंकर ईसा को उतारेगा। जिसको तुम दोबारा उतारते हो, उसी के फैसले को तुम अस्वीकार करते हो। यदि सन्देह है तो कई लाख ईसाई इस देश में मौजूद हैं और उनकी इंजील भी। उन से पूछ लो कि क्या यह सत्य नहीं है कि हज़रत ईसा ने यही कहा था कि एलिया जो दोबारा आने वाला था वह युहन्ना ही है अर्थात् यहया। और इतनी बात कहकर यहूदियों की पुरानी आशाओं पर पानी फेर दिया। यदि अब यह आवश्यक है कि ईसा नबी ही आकाश से आए तो इस स्थिति में हज़रत ईसा सच्चा नहीं ठहर सकता क्योंकि यदि आकाश

से वापस आना अल्लाह के विधान में है तो इल्यास नबी क्यों वापस न आया और उसके स्थान पर यहया को इल्यास ठहरा कर उपमा से काम लिया गया। बुद्धिमान के लिए यह सोचने का स्थान है। आप लोगों की आस्थानुसार जिस कार्य हेतु मसीह इब्ने मरयम आकाश से आएगा अर्थात् महदी से मिलकर लोगों को बलपूर्वक मुसलमान करने के लिए युद्ध करेगा। यह एक ऐसी आस्था है जो इस्लाम को बदनाम करती है। क़ुर्आन शरीफ़ में कहां लिखा है कि धर्म के लिए बल-प्रयोग उचित है, बल्कि ख़ुदा ने तो क़ुर्आन शरीफ़ में उल्लेख किया है-

لَآ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ

"ला इकराहा फ़िद्दीन" (अलबक़रह-257)

धर्म में बल प्रयोग नहीं है। फिर मसीह इब्ने मरयम को बल प्रयोग का अधिकार क्योंकर दिया जाएगा। यहां तक कि वह उनसे इस्लाम को स्वीकार करने या उन्हें क़त्ल कर देने के अतिरिक्त उन से उनकी जान की रक्षा करने के बदले में कोई टैक्स तक स्वीकार नहीं करेगा। क़ुर्आन शरीफ़ की यह शिक्षा किस स्थान किस अध्याय और किस सूरह★ में है। सम्पूर्ण क़ुर्आन बारम्बार कह रहा है कि

★**हाशिया :-** यदि कहो कि अरबों के लिए भी आदेश था कि बल प्रयोग करके मुसलमान बनाए जाएँ। यह विचार क़ुर्आन शरीफ़ से कदापि सिद्ध नहीं होता बल्कि यह सिद्ध होता है कि चूंकि समस्त अरब ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कठोर यातनाएं दी थीं और आपके अनुयायिओं और ईमान लाने वाली स्त्रियों को क़त्ल कर दिया था। और जो शेष रह गए उनको पलायन करने पर विवश कर दिया था। इसलिए वे समस्त लोग जो क़त्ल के अपराधी या उस जुर्म सहयोगी थे, वे सब परमेश्वर की दृष्टि में अपने रक्तपात के उपलक्ष्य में रक्तपात के योग्य हो चुके थे। उनके विषय में बदले के तौर पर उनके क़त्ल का आदेश था। परन्तु

धर्म में बल प्रयोग नहीं, और स्पष्ट कर रहा है कि जिन लोगों से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय युद्ध किए गए थे वे युद्ध धर्म को बलपूर्वक प्रसारित करने हेतु नहीं थे, बल्कि वे युद्ध या तो दण्ड स्वरूप थे अर्थात् लोगों को दण्ड देना लक्ष्य था, जिन्होंने अधिकांश मुसलमानों को क़त्ल कर दिया और कुछ को मातृभूमि से बाहर निकाल दिया था और अत्यन्त अत्याचार किया था। जैसा कि ख़ुदा का कथन है-

اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْاؕ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ

"उज़िना लिल्लज़ीना युक़ातलूना बिअन्नहुम ज़ुलिमू व इन्नल्लाहा अला नसरिहिम लक़दीर" (अलहज्ज-40)

अर्थात् "मुसलमानों को जिन से ख़ुदा को न मानने वाले शत्रु युद्धरत हैं, अत्याचार सहन करने के कारण उन्हें मुकाबला करने की आज्ञा प्रदान की गई और ख़ुदा उनकी सहायता करने की शक्ति रखता है"। या वे युद्ध थे जो अपनी सुरक्षा हेतु किए थे। अर्थात् जो लोग इस्लाम को मिटाने के लिए आगे बढ़ते थे या अपने देश में इस्लाम के प्रचार को बलपूर्वक रोकते थे, उनसे अपने निजी सुरक्षा के अधिकार का प्रयोग करते हुए या देश में स्वतंत्रता हेतु युद्ध किए जाते थे। इन तीन परिस्थितियों के अतिरिक्त युद्ध नहीं किया, बल्कि इस्लाम ने अन्य क़ौमों के अत्याचार को इतना सहन किया है कि जिसका

शेष हाशिया - सर्वाधिक दयालु, कृपालु आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से यह सुविधा प्रदान की गई कि यदि उनमें से कोई मुसलमान हो जाए, तो उसका पूर्व अपराध जिसके उपलक्ष्य वह मौत के दण्ड का भागी है क्षमा कर दिया जाएगा। अत: कहां यह कृपा की स्थिति और कहां बल-प्रयोग या दबाव। इसी से।

किसी अन्य क़ौम में उदाहरण नहीं मिलता। फिर यह ईसा मसीह और महदी साहिब कैसे होंगे जो आते ही लोगों को क़त्ल करना आरम्भ कर देंगे। यहां तक कि किसी अहलेकिताब से भी टैक्स स्वीकार नहीं करेंगे और आयत-

حَتّٰی یُعْطُوا الْجِزْیَۃَ عَنْ یَّدٍ وَّھُمْ صٰغِرُوْنَ

"हत्ता योतुल जिज़्यता अंय्यदिन व हुम साग़िरून" (अत्तौबः-29) को भी रद्द कर देंगे। ये इस्लाम के कैसे समर्थक व सहायक होंगे कि आते ही क़ुर्आन की उन आयतों को भी रद्द कर देंगे जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में भी रद्द नहीं हुईं। इतने बड़े इन्क़िलाब से भी ख़त्मे नुबुव्वत में कोई अन्तर नहीं आएगा। इस युग में जबकि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के काल पर तेरह शताब्दियाँ गुज़र गईं और इस्लाम स्वयं आन्तरिक तौर पर तिहत्तर समूहों में विभाजित हो गया, सच्चे मसीह का कर्तव्य यह होना चाहिए कि वह प्रमाणों के साथ हृदयों पर विजय प्राप्त करे न कि तलवार के साथ और सलीबी आस्था को वास्तविक और सत्य प्रमाणों द्वारा तोड़ दे न कि यह कि वह उन सलीबों को तोड़ता फिरे जो चांदी, सोने, पीतल या लकड़ी से बनाई जाती हैं। यदि तुम बल का प्रयोग करोगे तो तुम्हारा बल-प्रयोग करना इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि तुम्हारे पास अपनी सच्चाई पर कोई तर्क नहीं।★प्रत्येक मूर्ख और

★**हाशिया :-** कुछ मूर्ख मुझ पर आपत्ति करते हैं कि जैसा कि अल्मनार वाले ने भी किया कि यह व्यक्ति अंग्रेजों के देश में रहता है इसलिए जिहाद से मना करता है। ये मूर्ख नहीं जानते कि यदि मैं झूठ से इस सरकार को प्रसन्न करना चाहता तो मैं बारंबार क्यों कहता कि ईसा इब्ने मरयम सलीब से मुक्ति पाकर अपनी स्वाभाविक मृत्यु से श्रीनगर के स्थान पर मर गया और न वह ख़ुदा था और न ही

अत्याचारी स्वभाव वाला मनुष्य जब प्रमाण प्रस्तुत करने से असमर्थ रहता है तो फिर तलवार या बंदूक की ओर हाथ बढ़ाता है। परन्तु ऐसा धर्म ख़ुदा की ओर से कदापि-कदापि नहीं हो सकता जो केवल तलवार द्वारा फैल सकता है न कि किसी अन्य उपाय से। यदि तुम ऐसे जिहाद को नहीं त्याग सकते और उस पर क्रोधित होकर सच्चों का नाम भी दज्जाल और अधर्मी रखते हो तो हम इन दो वाक्यों पर इस भाषण को समाप्त करते हैं-

قُلْ يٰاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ۔ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ

शेष हाशिया - परमेश्वर का बेटा। धार्मिक कट्टरता वाले अंग्रेज़ मेरे इस वाक्य से मुझ से क्रोधित न होंगे? अतः सुनो! हे मूर्खो। मैं इस सरकार की कोई चापलूसी नहीं करता बल्कि वास्तविकता यह है कि ऐसी सरकार जो इस्लाम धर्म और उसके रीति रिवाजों पर कोई हस्तक्षेप नहीं करती और न अपने धर्म की उन्नति हेतु हम पर तलवारें चलाती है, क़ुर्आनी दृष्टिकोण से धार्मिक युद्ध करना अवैध है क्योंकि वह भी कोई धर्म युद्ध नहीं करती। उनका धन्यवाद हम पर इसलिए अनिवार्य है कि हम अपना कार्य मक्का और मदीना में भी नहीं कर सकते थे, परन्तु इनके देश में ख़ुदा की ओर से यह हिकमत थी कि मुझे इस देश में पैदा किया। क्या मैं परमेश्वर की हिकमत का अपमान करूँ और जैसा कि क़ुर्आन शरीफ़ की आयत- "व आवयनाहुमा इला रबवतिन ज़ाते क़रारिन व मईन" (अलमौमिनून-51) में ख़ुदा हमें यह बात समझाता है कि सलीब की घटना के पश्चात हमने ईसा मसीह को सलीबी संकट से मुक्ति देकर उसको और उसकी मां को एक ऊँचे टीले पर स्थान दिया था कि वह विश्राम का स्थान था और उसमें झरने बहते थे। अर्थात् श्रीनगर कश्मीर। इसी प्रकार ख़ुदा ने मुझे इस सरकार के ऊँचे टीले पर जहां शांति भंग करने वालों का हाथ नहीं पहुँच सकता, स्थान दिया। जो विश्राम का स्थान है। इस देश में सच्चे ज्ञान के स्रोत जारी हैं और शांति भंग करने वालों के हमलों से अमन चैन है। फिर क्या अनिवार्य न था कि इस सरकार के उपकारों का धन्यवाद करते। इसी से

"कुल या अय्योहल काफ़िरूना ला आबुदो मा तअबुदून"

(अलकाफ़िरून-2,3)

आन्तरिक फूट और कलह के समय तुम्हारा काल्पनिक मसीह और काल्पनिक महदी किस-किस पर तलवार चलाएगा। क्या सुन्नियों के समीप शिया इस योग्य नहीं कि उन पर तलवार उठाई जाए और शियों के समीप सुन्नी इस योग्य नहीं कि उन सब को तलवार से मिटा दिया जाए। अतः अब तुम्हारे आन्तरिक फ़िर्के ही तुम्हारी आस्थानुसार दण्डनीय हैं तो तुम किस-किस से जिहाद करोगे। पर स्मरण रखो कि ख़ुदा को तलवार की आवश्यकता नहीं। वह धरती पर अपने धर्म का प्रसार आसमानी निशानों के साथ करेगा और उसे कोई रोक नहीं सकेगा। याद रखो कि अब **ईसा आकाश से कदापि नहीं उतरेगा,** क्योंकि जो इक़रार उसने आयत-

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ

"फ़लम्मा तवफ़्फ़यतनी" (अलमाइदह-118)

के अनुसार प्रलय के दिन करना है। इसमें स्पष्ट रूप से उसने स्वीकार किया है कि वह दोबारा संसार में नहीं आएगा और प्रलय के दिन उसका यही बहाना है कि ईसाइयों के बिगड़ने की मुझे ख़बर नहीं और यदि वह प्रलय से पूर्व संसार में आता तो क्या वह यही उत्तर देता कि मुझे ईसाइयों के बिगड़ने की कुछ ख़बर नहीं। अतः इस आयत में स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है कि मैं दोबारा संसार में नहीं गया और यदि वह प्रलय से पूर्व संसार में आने वाला था और निरंतर चालीस वर्ष तक। तब तो उसने ख़ुदा के समक्ष झूठ बोला कि मुझे ईसाइयों की दशा की कोई ख़बर नहीं। उसको तो

कहना चाहिए था कि मेरे **दोबारा आगमन** के समय मैंने संसार में लगभग चालीस करोड़ ईसाई पाए और उन सबको देखा और मुझे उनके बिगड़ने का पूर्ण ज्ञान है। मैं तो पुरस्कार योग्य हूं कि समस्त ईसाइयों को मुसलमान बनाया और सलीबों को तोड़ा। यह कैसा झूठ है कि ईसा कहेगा कि मुझे ख़बर नहीं। अतः इस आयत में ईसा मसीह ने साफ़ तौर पर इकरार किया है कि वह दोबारा संसार में नहीं आएगा। यही सत्य है कि मसीह की मृत्यु हो चुकी है और मोहल्ला ख़ानयार श्रीनगर में उसकी क़ब्र है।★ **अब** परमेश्वर स्वयं आकर उन लोगों से युद्ध करेगा जो सत्य से युद्ध करते हैं ख़ुदा का लड़ना आपत्तिजनक नहीं, क्योंकि वह निशानों के रूप में है। परन्तु मनुष्य का लड़ना आपत्तिजनक है क्योंकि वह दबाव स्वरूप है।

इन मौलवियों पर अफ़सोस। यदि इनमें ईमानदारी होती तो वे संयम के मार्ग से अपनी संतुष्टि हर प्रकार से कराते। ख़ुदा ने तो नेक आत्माओं की संतुष्टि कर दी। परन्तु वे लोग जो अबूजहल की मिट्टी से बने हुए हैं वे उसी मार्ग को चुनते हैं जो अबूजहल ने चुना था। एक मौलवी साहिब ने **मेरठ** से रजिस्टर्ड पत्र द्वारा सूचित किया है कि अमृतसर में **नदवतुलउलमा** का सम्मेलन है इस में आकर परस्पर वार्ता करनी चाहिए। परन्तु स्पष्ट रहे कि यदि इन विरोधियों की नीयतें अच्छी होतीं और विजय पराजय का विचार न होता तो उनको अपनी संतुष्टि हेतु नदवा इत्यादि की कोई आवश्यकता न थी। हम नदवा के विद्वानों को अमृतसर के विद्वानों से पृथक नहीं समझते।

★एक यहूदी ने भी इसका सत्यापन किया है कि श्रीनगर में उपस्थित क़ब्र यहूदियों के नबियों की क़ब्रों के सामान बनी हुई है। देखो परचा अलग हाशिया

एक ही आस्था एक ही प्रकार एक ही तत्व है। प्रत्येक को अधिकार है कि **क़ादियान** में आए, परन्तु विवाद के लिए नहीं अपितु सत्य की खोज के लिए। हमारे भाषण को सुने। यदि सन्देह रहे तो शालीनता और शिष्टाचार के नियमों का अनुसरण करते हुए अपने संदेहों का निराकरण कराए। वह जब तक क़ादियान में निवास करेगा हमारा **अतिथि** समझा जाएगा। हमें नदवा इत्यादि की आवश्यकता नहीं और न उसकी ओर देखने की आवश्यकता है। ये समस्त लोग सच्चाई के

हाशिया पृष्ठ ...... से संबंधित

कैरियर डीलासिरा:- दक्षिणी इटली के सब से मशहूर अख़बार ने निम्नलिखित आश्चर्यजनक सूचना प्रकाशित की है:-

13 जुलाई 1879 को यरोशलम में एक बुद्ध सन्यासी कोरमरा नामी जो अपने जीवन में एक ऋषि विख्यात था। उसके पीछे उसकी कुछ संपत्ति रही। गवर्नर ने उसके संबंधियों की खोज करके उनको दो लाख फ्रेंक (एक लाख पौने उन्नीस हज़ार रुपए) दिए जो विभिन्न देशों के सिक्कों में थे, जो उस गुफ़ा में से मिले जिसमें वह सन्यासी एक दीर्घ समय से निवास करता था। रुपयों के साथ कुछ दस्तावेज़ भी उन संबंधियों को मिले जिन्हें वे पढ़ न सकते थे। कुछ इबरानी भाषा के विद्वानों को उन कागज़ात को देखने का अवसर प्राप्त हुआ तो उनको यह आश्चर्यजनक बात ज्ञात हुई कि ये कागज़ात बहुत ही प्राचीन इबरानी भाषा में थे। जब उनका अध्ययन किया गया तो उनमें यह अभिलेख पाया गया:-

"पतरस मछुआरा यसू मरयम के बेटे का सेवक इस प्रकार लोगों को ख़ुदा के नाम में और उसकी इच्छानुसार भाषण देता है" और यह अभिलेख इस प्रकार समाप्त होता है:-

"मैं पतरस मछुआरे ने यसू के नाम में और अपनी आयु के नब्बे वर्ष में ये प्रेम के शब्द अपने स्वामी यसू मसीह मरयम के बेटे की मौत के तीन ईद फ़सह पश्चात (अर्थात् तीन वर्ष पश्चात) ख़ुदा के पवित्र घर के निकट बुलीर

दुश्मन हैं। परन्तु संसार में सच्चाई का प्रसार होता चला जाता है। क्या यह ख़ुदा का श्रेष्ठतम चमत्कार नहीं कि उसने आज से बीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में अपनी ईशवाणी से स्पष्ट कर दिया था कि लोग तुम्हारी असफलता के लिए बड़े प्रयत्नशील रहेंगे और नाख़ूनों तक ज़ोर लगाएँगे परन्तु अन्ततः मैं तुम्हें एक बड़ी जमाअत बनाऊँगा। यह उस समय की ईशवाणी है जब कि मेरे साथ एक व्यक्ति भी नहीं था। फिर मेरे दावे के प्रकाशित होने पर विरोधियों ने एड़ी चोटी के ज़ोर लगाए। अन्ततः उपर्युक्त भविष्यवाणी के अनुसार यह सिलसिला

शेष हाशिया - के स्थान पर लिखने का निश्चय किया है"।

इन विद्वानों ने यह परिणाम निकाला है कि यह लेख पतरस के समय का चला आता है। लन्दन बाइबल सोसाइटी की भी यही राय है और उनका भली-भांति विश्लेषण कराने के पश्चात यह सोसायटी अब उनके बदले चार लाख लीरा (दो लाख साढ़े सैंतीस हज़ार रुपए) शेष हाशिया-मालिकों को देकर वे अभिलेख लेना चाहती है। यसू इब्ने मरयम की प्रार्थना उन दोनों को ख़ुदा सुरक्षित रखे उसने कहा:- "हे मेरे ख़ुदा! मैं इस योग्य नहीं कि उस वस्तु पर विजयी हो सकूँ जिसको मैं बुरा समझता हूं। न मैंने उस अच्छाई को प्राप्त किया जिसकी मुझे मनोकामना थी परन्तु अन्य लोग अपने बदले को अपने हाथ में रखते हैं पर मैं नहीं। मेरी श्रेष्ठता कर्म में है। मुझ से अधिक दयनीय अवस्था में कोई व्यक्ति नहीं। हे ख़ुदा जो सर्वश्रेष्ठ है मेरे पाप क्षमा कर, हे ख़ुदा ऐसा न कर कि मैं अपने शत्रुओं के लिए अभियोग का कारण बनूँ, न मुझे अपने मित्रों की दृष्टि में तुच्छ ठहरा। ऐसा न हो कि मेरा संयम मुझे मुसीबतों में डाल दे। ऐसा न कर कि यही संसार मेरी श्रेष्ठतम प्रसन्नता का स्थान या मेरा परम लक्ष्य हो। ऐसे व्यक्ति को मेरे ऊपर हावी न कर जो मुझ पर दया न करे। हे मेरे ख़ुदा जो अत्यन्त दयालु है अपनी दया के उपलक्ष्य ऐसा ही कर। तू जो उन सब पर दया करता है जो तेरी दया के पात्र हैं।

फैल गया। आज की तिथि तक ब्रिटिश इण्डिया में यह जमाअत एक

मसीह की क़ब्र के संबंध में एक इस्राईली, तौरात के विद्वान की गवाही

मैं साक्ष्य देता हूं कि मैंने देखा एक नक्शा पास मिर्ज़ा

गुलाम अहमद क़ादियानी और निश्चय ही वह सही है।

क़ब्र बनी इस्राईली की कब्रों में से और वह है

बनी इस्राईल के बुज़ुर्गों की कब्रों में से और मैंने

देखा यह नक्शा आज के दिन जब लिखी मैंने यह गवाही

अंग्रेज़ी माह जून 12, 1889 ई. सलमान यूसुफ़ इसहाक ताजिर

सलमान यहूदी ने मेरे सामने यह गवाही लिखी। मुफ़्ती

सलमान यहूदी ने मेरे सामने यह गवाही लिखी। मुफ़्ती

मुहम्मद सादिक भैरवी क्लर्क दफ़्तर महालेखा अधिकारी लाहौर

मैं ख़ुदा की सौगंध खाकर गवाही देता हूं कि यह लेख सलमान बिन यूसुफ़, जो बनी इस्राईल के महान विद्वानों में से हैं ने लिखा।   हस्ताक्षर-सय्यद अब्दुल्लाह बग़दादी

लाख से भी कुछ अधिक है। नदवतुलउलमा को यदि मरना याद है तो बराहीन अहमदिया और सरकारी लेख को देखकर बताएं कि क्या यह चमत्कार है या नहीं। फिर जब कि क़ुर्आन और चमत्कार दोनों प्रस्तुत किए गए तो अब विवाद किस लिए?

ऐसा ही इस देश के गद्दी-नशीन और पीरज़ादे धर्म से ऐसे दूर और अपने स्वयं के बनाए हुए रीति-रिवाजों में रात-दिन ऐसे व्यस्त हैं कि उनको इस्लाम की मुसीबतों और कठिनाइयों की कुछ भी सूचना नहीं। उनके जल्सों में यदि जाओ तो क़ुर्आन शरीफ़ और हदीस की पुस्तकों के स्थान पर नाना प्रकार के तंबूरे, सारंगियां, ढोलकियां और क़व्वाल इत्यादि बिदअत के सामन दृष्टिगोचर होंगे और फिर इसके बावजूद मुसलमानों के पेशवा होने का दावा, आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण पर हंसी ठट्ठा और उनमें से कुछ स्त्रियों का लिबास धारण करते हैं और हाथों में मेंहदी लगाते हैं, चूड़ियाँ पहनते हैं और अपने जल्सों में क़ुर्आन शरीफ़ के बारे में कवितायें पढ़ना पसन्द करते हैं। ये ऐसे पुराने गंद हैं जिनके दूर होने की कल्पना करना भी कठिन है तथापि ख़ुदा अपनी शक्तियों का प्रदर्शन करेगा और इस्लाम का समर्थक होगा।

स्त्रियों को कुछ उपदेश

हमारे इस युग में कुछ विशेष कुरीतियाँ हैं जिनमें स्त्रियां उलझी हुई हैं। वह एक से अधिक विवाह को नितांत बुरी दृष्टि से देखती हैं या यों कहें कि वे उस पर ईमान नहीं रखतीं। उन्हें ज्ञात नहीं कि ख़ुदा की शरीअत में हर प्रकार की चिकित्सा निहित है। अत: यदि इस्लाम में

एक से अधिक विवाह का मामला न होता तो ऐसी परिस्थितियां जो आज मनुष्यों के लिए दूसरे विवाह हेतु विवश कर देती है, इस शरीअत में उनका कोई समाधान न होता। उदाहरणार्थ यदि स्त्री दीवानी या पागल हो जाए या कोढ़ी हो जाए या सदा के लिए किसी ऐसी बीमारी का शिकार हो जाए जो बेकार कर देती है अथवा कोई अन्य ऐसी परिस्थिति समक्ष आ जाए कि स्त्री दया की पात्र हो, परन्तु किसी लिहाज़ से असमर्थ हो जाए और पुरुष भी दया का पात्र, जब वह बिना विवाह के धैर्य न रख सके। तो ऐसी स्थिति में पुरुष की शक्तियों पर अत्याचार है कि उसके दूसरे विवाह की अनुमति न दी जाए। वास्तव में ख़ुदा की शरीअत ने इन्हीं मामलों पर दृष्टि रखते हुए पुरुषों के लिए यह मार्ग खुला रखा है और विवशता के समय स्त्रियों के लिए भी मार्ग खुला है कि यदि पुरुष बेकार हो जाए तो न्यायाधिकारी द्वारा खुला करा लें, जो तलाक के स्थान पर है। ख़ुदा की शरीअत दवा बेचने वाली दुकान की भांति है। यदि दुकान ऐसी नहीं है जिसमें से प्रत्येक रोग की दवा मिल सकती है तो वह दुकान चल नहीं सकती। अत: विचार करो कि क्या यह सत्य नहीं कि पुरुषों के समक्ष कुछ ऐसी समस्याएँ आ जाती हैं जिनमें वह दूसरे विवाह के लिए विवश होते हैं। वह शरीअत किस काम की जिसमें समस्त समस्याओं का समाधान न हो। देखो इंजील में **तलाक** के बारे में केवल बलात्कार की शर्त थी। अन्य सैंकड़ों प्रकार के ऐसे कारण जो पुरुष और स्त्री में जान लेने वाली शत्रुता उत्पन्न कर देते हैं उनका कोई उल्लेख नहीं था। इसलिए ईसाई जाति इस दोष को सहन न कर सकी और अन्तत: अमरीका में एक तलाक का कानून बनाना पड़ा। अत: अब विचार करो कि इस कानून से इंजील किधर गई। हे स्त्रियो

चिंता न करो, तुम्हें जो पुस्तक मिली है उसमें इंजील की भांति मनुष्यों की ओर से कुछ मिलाने की आवश्यकता नहीं। उस पुस्तक में जिस प्रकार पुरुषों के अधिकार सुरक्षित हैं स्त्रियों के अधिकार भी सुरक्षित हैं। यदि स्त्री, पुरुष के एक से अधिक विवाह पर नाराज़ है तो न्यायधीश द्वारा ख़ुला करवा सकती है। ख़ुदा का यह कर्तव्य था कि विभिन्न परिस्थितियां जो मुसलमानों के समक्ष आने वाली थीं, अपनी शरीअत में उनका उल्लेख कर देता ताकि शरीअत अपूर्ण न रहती। अत: हे स्त्रियो तुम अपने पतियों की उन इच्छाओं के समय कि वे दूसरा विवाह करना चाहते हैं ख़ुदा की शिकायत मत करो बल्कि तुम प्रार्थना करो कि ख़ुदा तुम्हें मुसीबत और परीक्षा की घड़ी से सुरक्षित रखे। नि:संदेह वह पुरुष नितांत अत्याचारी एवं दंडनीय है जो **दो पत्नियां** रख कर न्याय नहीं करता। परन्तु तुम स्वयं ख़ुदा की अवज्ञा करके ख़ुदा के प्रकोप की पात्र न बनो। प्रत्येक अपने कर्म का उत्तरदायी होगा। यदि तुम ख़ुदा की दृष्टि में सुशील और नेक बनो तो तुम्हारा पति भी सुशील और नेक किया जाएगा। यद्यपि कि शरीअत ने विभिन्न दूरदर्शिताओं के कारण एक से अधिक विवाहों को वैध ठहराया है। परन्तु नियति का नियम तुम्हारे लिए खुला है। यदि शरीअत का कानून तुम्हारे लिए सहनीय नहीं तो प्रार्थना के माध्यम से नियति के कानून से लाभ उठाओ, क्योंकि नियति का कानून शरीअत के कानून पर भी विजयी हो जाता है। संयम को अपनाओ, संसार और उसके सौन्दर्य से बहुत हृदय मत लगाओ, वर्ण और जाति पर अभिमान मत करो, किसी स्त्री से हंसी-ठट्ठा मत करो, पतियों से वह कुछ न माँगो जो उनकी सामर्थ्य से बाहर हो, प्रयास करो कि तुम मासूम और सच्चरित्र होने की दशा में कब्रों में प्रवेश करो, ख़ुदा के

बताए हुए कर्तव्यों- नमाज़, ज़कात इत्यादि में आलस्य मत करो, अपने पतियों की तन-मन से आज्ञाकारी रहो, उनके सम्मान का अधिकांश भाग तुम्हारे हाथ में है। अत: तुम अपने इस दायित्व को इस ख़ूबी से निभाओ कि ख़ुदा के निकट नेक और चरित्रवानों में गिनी जाओ। फ़ुज़ूलखर्ची न करो, और अपने पतियों के धन को व्यर्थ ही ख़र्च न करो, किसी की धरोहर में हेरा-फेरी न करो, चोरी न करो, शिकवा न करो। एक स्त्री अन्य स्त्री पर या पुरुष पर आरोप न लगाए।

समाप्ति

ये समस्त उपदेश उनका हम उल्लेख कर चुके हैं, इस का उद्‌देश्य है कि हमारी जमाअत ख़ुदा के भय में उन्नति करे और वह इस योग्य हो जाए कि ख़ुदा का आक्रोश जो धरती पर भड़क रहा है वह उन तक न पहुँचे ताकि इन प्लेग के दिनों में वे विशेष तौर पर सुरक्षित रखे जाएँ। **सच्चा संयम (आह बहुत ही कम है सच्चा संयम)** ख़ुदा को प्रसन्न कर देता है और ख़ुदा साधारण तौर पर बल्कि निशान के तौर पर पूर्ण संयमी को संकट से बचाता है। प्रत्येक धोखेबाज़ या मूर्ख संयमी होने का दावा करता है परन्तु **संयमी वह है** जो ख़ुदा के निशान द्वारा संयमी सिद्ध हो। प्रत्येक कह सकता है कि ख़ुदा से प्रेम करता हूं परन्तु ख़ुदा से प्रेम वह करता है जिसका प्रेम आकाशीय साक्ष्य से सिद्ध हो। प्रत्येक कहता है कि मेरा धर्म सच्चा है, परन्तु सच्चा धर्म उस व्यक्ति का है जिस को इसी संसार में प्रकाश प्राप्त होता है। प्रत्येक कहता है कि मुझे **मुक्ति** प्राप्त होगी, परन्तु इस कथन में सच्चा वह व्यक्ति है जो इसी संसार में मुक्ति के प्रकाश देखता है। अत: तुम प्रयास करो कि ख़ुदा

के प्यारे हो जाओ ताकि तुम्हारी प्रत्येक मुसीबत से सुरक्षा की जाए। पूर्ण संयमी प्लेग से सुरक्षित रहेगा क्योंकि वह **ख़ुदा की शरण** में है। अतः तुम पूर्ण संयमी बनो। ख़ुदा ने जो कुछ प्लेग के संदर्भ में कहा, तुम सुन चुके हो। वह एक आक्रोश की अग्नि है। अतः तुम स्वयं को उस अग्नि से बचाओ। जो मनुष्य सच्चे तौर पर मेरा अनुसरण करता है और उसके अन्दर कोई छल-कपट, आलस्य, लापरवाही नहीं है और न अच्छाई के साथ बुराई को मिलाता है उसकी रक्षा की जाएगी। परन्तु वह जो इस मार्ग में सुस्ती से क़दम उठाता है और संयम के मार्गों पर पूरे तौर पर क़दम नहीं उठाता या संसार पर गिरा हुआ है वह स्वयं को परीक्षा में डालता है। प्रत्येक पहलू से ख़ुदा के आदेशों का पालन करो। प्रत्येक मनुष्य जो स्वयं को बैअत करने वालों में शुमार करता है, उसके लिए अब समय है कि अपने धन से भी इस सिलसिले की सेवा करे। जो मनुष्य एक पैसे की हैसियत रखता है वह सिलसिले के कार्यों के लिए प्रति माह एक पैसा दे। जो मनुष्य प्रति माह एक रुपया दे सकता है वह प्रति माह एक रुपया अदा करे। क्योंकि लंगरखाने के ख़र्चों के अतिरिक्त धार्मिक कार्य-कलाप भी बहुत सा ख़र्च चाहते हैं। सैंकड़ों अतिथि आते हैं, परन्तु अभी तक धन की कमी के कारण अतिथियों के लिए यथायोग्य सुविधाजनक मकान उपलब्ध नहीं, चारपाइयों का प्रबंध नहीं, मस्जिद को बढ़ाने की आवश्यकता भी सामने खड़ी है, पुस्तकें लिखने और प्रकाशित करने का कार्य विरोधियों की अपेक्षा अत्यन्त पीछे है। ईसाइयों की ओर से जहां पचास हज़ार पत्रिकाएँ और धार्मिक अख़बार प्रकाशित होते हैं, हमारी ओर से निरन्तर एक हज़ार भी प्रति माह प्रकाशित नहीं हो सकता। यही कार्य है जिनके लिए प्रत्येक बैअत

करने वाले को अपनी सामर्थ्य अनुसार सहायता करनी चाहिए ताकि ख़ुदा भी उनकी सहायता करे। यदि प्रति माह निरन्तर उनकी सहायता पहुंचती रहे, चाहे थोड़ी ही हो तो अपेक्षाकृत उस सहायता से उत्तम है जो दीर्घ काल तक खामोश रह कर फिर किसी समय अपने ही विचार से की जाती है। प्रत्येक मनुष्य के प्रण का सत्य उसके सेवा भाव से पहचाना जाता है। प्रिय जनो! यह धर्म और उसके उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सेवा का समय है। **इस समय को ग़नीमत समझो** कि फिर कभी हाथ नहीं आएगा। ज़कात देने वाले को चाहिए कि अपनी ज़कात इसी जगह भेजे और प्रत्येक मनुष्य फ़ुज़ूलखर्ची से स्वयं को बचाए और इस मार्ग में रुपया लगाए और हर हाल में अपनी सच्चाई का प्रमाण प्रस्तुत करे, ताकि ख़ुदा की अनुकम्पा और रूहुलकुदुस का पुरस्कार पाए। क्योंकि **यह पुरस्कार** उन लोगों के लिए तैयार है जो इस सिलसिले में दाख़िल हुए हैं। **हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम** पर जो रूहुलकुदुस की आभा प्रकाशमान हुई थी, वह प्रत्येक आभा से बढ़कर है। रूहुलकुदुस कभी किसी नबी पर कबूतर के रूप में प्रकट हुआ और कभी किसी नबी या अवतार पर **गाय** के रूप में किसी पर **कछवे** या **मगरमच्छ** के रूप में प्रकट हुआ पर मनुष्य के रूप में प्रकट होने का समय न आया जब तक कि **इंसाने कामिल** अर्थात् हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का **प्रादुर्भाव न हुआ।** जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रादुर्भाव हो गया तो आप पर कामिल इन्सान होने के नाते रूहुलकुदुस के प्रकाश की शक्तिशाली आभा ने धरती से आकाश तक के स्थान को भर दिया था। इसलिए क़ुर्आनी शिक्षा **अनेकेश्वरवाद** से सुरक्षित रही। परन्तु

चूंकि ईसाई धर्म के **पेशवा** पर रूहुलकुदुस अत्यन्त **निर्बल** रूप में प्रकट हुआ था अर्थात् **कबूतर** के रूप में। इसलिए अपवित्र रूह अर्थात् शैतान उस धर्म पर **विजयी हो गया।** उसने अपनी श्रेष्ठता और शक्ति इस प्रकार प्रदर्शित की कि एक भयानक **अजगर** की भांति आक्रमण सब पथ-भ्रष्टताओं से प्रथम नम्बर पर रखा है और कहा कि निकट है कि आकाश और धरती फट जाएं और टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ कि धरती पर यह एक बहुत बड़ा पाप किया गया कि **मनुष्य को ख़ुदा का बेटा बनाया।** क़ुर्आन के आरम्भ में भी ईसाई विचारधारा का खण्डन और इसका उल्लेख है। जैसा कि आयत "इय्याका नअबुदो" और "वलद्दाल्लीन" से समझा जाता है। क़ुर्आन के अन्त में भी ईसाई दृष्टिकोण का खण्डन किया गया है जैसा कि सूरह-

قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ ۔ اللّٰهُ الصَّمَدُ ۔ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ

(सूरह अलइख़लास-2-4)

"कुल हुवल्लाहु अहद अल्लाहुस्समद लम यलिद वलम यूलद"

से समझा जाता है। क़ुर्आन के मध्य में भी ईसाई धर्म के उपद्रव का उल्लेख है। जैसा कि आयत "तकादुस्समावातो यतफ़त्तरना मिनहो" (मरयम-91) से समझा जाता है और क़ुर्आन से स्पष्ट है कि जब से संसार की रचना हुई, ख़ुदा की बनाई हुई वस्तुओं की उपासना और धोखा व कुटिलता के मार्गों पर ऐसा बल कभी नहीं दिया गया। इसी कारण मुबाहले के लिए भी ईसाई ही बुलाए गए थे न कोई अन्य अनेकेश्वरवादी। और यह जो रूहुलक़ुदुस इस से पूर्व पक्षियों या जानवरों के रूप में प्रकट होता रहा, इसमें क्या रहस्य था। समझने वाला स्वयं समझ ले। इतना हम भी कह देते हैं कि

यह संकेत था इस ओर कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इन्सानियत इतनी प्रबल है कि रूहुलक़ुदुस को भी इन्सानियत की ओर खींच लाई। अतः तुम ख़ुदा की ओर से भेजे गए **ऐसे नबी के अधीन होकर हिम्मत क्यों हारते हो।** तुम अपने वह आदर्श प्रदर्शित करो जो फ़रिश्ते भी आकाश पर तुम्हारी सच्चाई और पवित्रता से आश्चर्यचकित हो जाएँ और तुम्हारी सुरक्षा और सलामती के लिए प्रार्थना करें। तुम एक मृत्यु धारण करो ताकि तुम्हें जीवन प्राप्त हो। तुम तामसिक आवेगों से अपने अन्त:करण को खाली करो ताकि ख़ुदा उसमें प्रवेश करे। एक ओर से पक्के तौर पर परित्याग करो और एक ओर से पूर्ण संबंध स्थापित करो। **ख़ुदा तुम्हारी सहायता करे।**

अब मैं समाप्त करता हूं और प्रार्थना करता हूं कि मेरी यह शिक्षा तुम्हारे लिए लाभप्रद हो और तुम्हारे अन्दर ऐसा परिवर्तन हो कि तुम धरती के नक्षत्र बन जाओ और धरती उस प्रकाश की आभा से प्रकाशमान हो जो तुम्हें तुम्हारे ख़ुदा से प्राप्त हो। हे ख़ुदा स्वीकार कर, पुनः स्वीकार कर।

يَاعِبَادَاللهِ اُذَكِّرُكُمْ اَيَّامَ اللهِ وَاُذَكِّرُكُمْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ۔ اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى [1]۔ فَلَا تُخْلِدُوْا اِلٰى زِيْنَةِ الدُّنْيَا وَ زُوْرِهَا وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ [2]۔ اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا [3]۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ۔

1 (ताहा - 75), **2** (अलबक़र: - 46), **3** (अलअहज़ाब - 57)

या इबादल्लाह उज़क्किरोकुम अय्यामल्लाह व उज़क्किरोकुम तक़्वलक़ुलूब इन्नहू मंय्याते रब्बहू मुजरिमन फ़इन्ना लहू जहन्नमा ला यमूतो फ़ीहा वला यहया फ़ला तुखलिदू इला ज़ीनतिद्दुनिया व ज़ूरिहा वत्ताक़ुल्लाहा वस्तईनू बिस्सबरे वस्सलात इन्नल्लाहा व मलाइकतहू युसल्लूना अलन्नबिय्ये या अय्युहल्लज़ीना आमनू सल्लू अलैहे व सल्लिमू तसलीमा अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व अला आले मुहम्मदिन व बारिक वसल्लिम

प्लेग के बारे में भविष्यवाणी कविता में

निशाँ अगरचै न दर इख्तियार कस बूदस्त
मगर निशाँ बदहम अज़ निशाँ ज़ दा दारम

कि आँ सईदज़ ताऊन निजात ख्वाहिद याफ़्त
कि जस्तो जुस्त पनाहे बचार दीवारम

मरा क़सम बख़ुदावन्दे ख्वेश-औ-अज़मते ऊ
कि हस्त ईं हमा अज़ **वहिये पाक** गुफ़्तारम

चे हाजत अस्त ब बहसे दिगर हमीं का फ़ीस्त
बराए आंकि सियह **शुद दिलश** ज़ इन्कारम

अगर दरोग़ बर आयद **हर आंचै वादए मन**
रवास्त गर हमा खीज़न्द बहरे पैकारम